वर्ष-10, अंक-6, मार्च-2025

मूल्यः ₹20

वेलकम इंडिया

RNI No. UPHIN/2015/61611

राष्ट्रीय मासिक हिन्दी पत्रिका

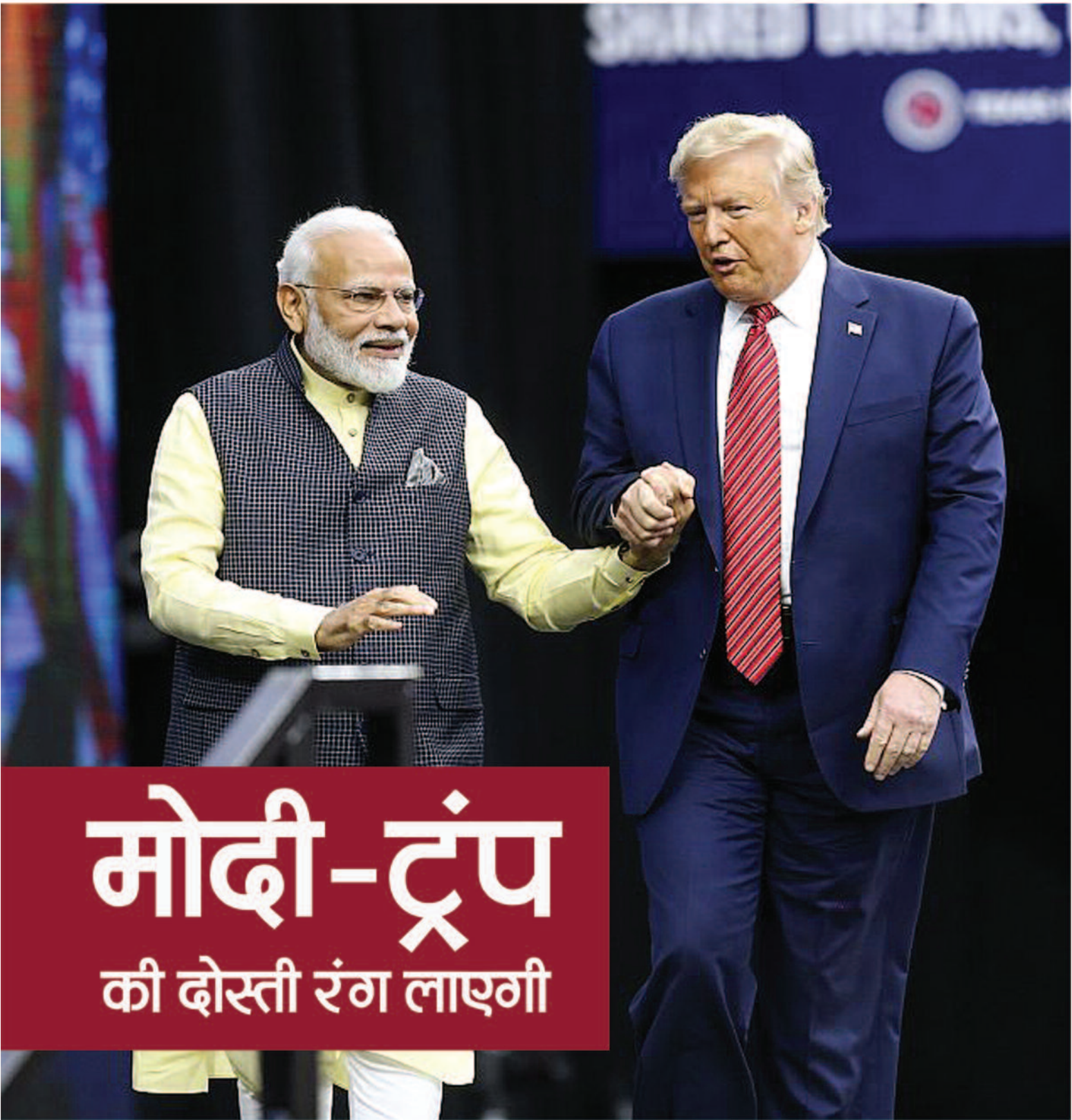

मोदी-ट्रंप
की दोस्ती रंग लाएगी

पूरी हो रही हर आस
मिल रहा पक्का आवास

प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के अंतर्गत
नए लाभार्थियों की चयन प्रक्रिया में

सर्वेक्षण कार्य खंड विकास अधिकारियों के पर्यवेक्षण में सर्वेयर द्वारा संपादित

'आवास प्लस ऐप' पर पात्र नागरिकों द्वारा स्वयं भी रजिस्ट्रेशन की सुविधा उपलब्ध

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें

• ग्राम पंचायत सचिव • खंड विकास अधिकारी
• परियोजना निदेशक (जिला ग्राम्य विकास अभिकरण) • मुख्य विकास अधिकारी

ग्राम्य विकास विभाग, उत्तर प्रदेश

टोल फ्री नंबर : 1800-180-4042

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

वर्ष- 10 अंक- 6

मार्च -2025

सम्पादक ललित कुमार शर्मा

कार्यकारी सम्पादक
अनादि शुक्ल, प्रशांत शर्मा
संजय बंसल, संजीव शर्मा

संरक्षक
स्व. वेद प्रकाश शर्मा
अभिषेक गर्ग, एनके शर्मा, प्रवीण चौधरी
अमिताभ शुक्ल, अरुण शर्मा,
प्रभाकर त्यागी, डॉ. निमित त्यागी

वरिष्ठ सलाहकार
विजय अरोडा, राहुल अग्रवाल,
सचिन तोमर, देवनाथ कुमार

सम्पादकीय सहयोगी
डॉ. बी. जमां

बिजनेस हेड
रजनीकांत शर्मा/विकास पंडित

कानूनी सलाहकार
कीर्तिकर सुकुल (एडवोकेट सुप्रीम कोर्ट)
वंदना शर्मा भंडारी (एडवोकेट सुप्रीम कोर्ट)
अनिल आनंद, नीरज सत्संगी

मुद्रक, स्वामी, प्रकाशक, सम्पादक ललित कुमार द्वारा अवनीर एन्टरप्राईजेज, ए-7/105, इंडस्ट्रीयल एरिया साउथ साईड जी.टी. रोड गाजियाबाद से मुद्रित कराकर ग्राउंड फ्लोर 150, दुर्गा टॉवर, आरडीसी राजनगर गाजियाबाद से प्रकाशित किया।
सम्पादक - ललित कुमार शर्मा
RNI No. UPHIN/2015/61611
ई-मेल: winews.in@gmail.com
वेबसाइट: www.winews.in
सम्पर्क सूत्र: 9891116568

नोट: पत्रिका में प्रकाशित सभी लेखों आदि से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है तथा किसी भी कानूनी वाद-विवाद के लिए गाजियाबाद न्यायालय मान्य होगा।

अन्दर के पेजों में...

पेज-28

मोदी-ट्रंप
की दोस्ती रंग लाएंगी

कवर स्टोरी

योगी सरकार: सेवा, सुरक्षा और सुशासन के 8 वर्ष — पेज 06

चार माह में ही लोकप्रिय विधायक बन चुके हैं शहर विधायक संजीव शर्मा — पेज 16

जनहितों के प्रति गंभीर हैं ऊर्जा राज्यमंत्री डॉ. सोमेन्द्र तोमर — पेज 18

महिला हितों के लिए बेहद गंभीर हैं राज्य महिला आयोग की सदस्य मीनाक्षी भराला — पेज 20

साउथ से लेकर बॉलीवुड तक जलवा है रश्मिका मंदाना का — पेज 52

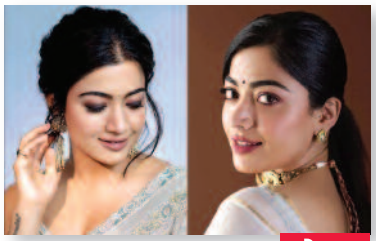

भारतीय टीम ने लिखी नई इबारत 12 साल बाद जीती चैम्पियंस ट्रॉफी — पेज 54

विज्ञापन, समाचार के लिए वेलकम इंडिया दैनिक एवं मासिक पत्रिका के जोनल सम्पादक कृष्णराज अरुण से मोबाइल नम्बर 9802414328 / 9813221734 पर सम्पर्क करें।

कम उम्र के बच्चे क्यों बढ़ा रहे अपराध की ओर कदम?

ललित कुमार
सम्पादक

दिल्ली के वजीराबाद इलाके में एक छात्र की हत्या को आए दिन होने वाले अपराधों के तौर पर ही देखा जाएगा। मगर यह घटना एक बार फिर इस बेहद चिंताजनक प्रवृत्ति को रेखांकित करती है कि देश में अब कम उम्र के बच्चों और किशोरों के व्यक्तित्व के विकास की दिशा किस ओर बढ़ चुकी है और अगर इसे तुरंत नहीं थामा गया तो आने वाले वक्त में समाज का स्वरूप कैसा होगा। गौरतलब है कि वजीराबाद में रविवार की शाम को नौवीं के एक छात्र का अपहरण करके उसकी हत्या कर दी गई और उसके बाद अगले दिन उसके परिवार को फोन करके दस लाख रुपए की फिरौती मांगी गई। पुलिस ने जब मामले की छानबीन शुरू की, तब इसे अंजाम देने के आरोपी तीन किशोर पकड़े गए। हालांकि पिछले कुछ वर्षों से गंभीर अपराधों में भी किशोरों की संलिप्तता के जैसे मामले सामने आ रहे हैं, उसमें यह घटना कोई आश्चर्य नहीं पैदा करती, लेकिन जिस स्तर पर कम उम्र के बच्चों के भीतर आपराधिक प्रवृत्तियों का दायरा फैल रहा है, उसमें यह बेहद चिंता की बात है कि आखिर वे कौन-से कारक हैं जो बच्चों को ऐसी मानसिकता की गिरफ्त में ले रहे हैं।

जिस दौर में देश के विकास को लेकर बड़े-बड़े दावे किए जा रहे हैं, उसमें समाज की बुनियाद रखने वाले किशोर उम्र के बच्चों की जिंदगी किस दिशा में बढ़ रही है। गुजरात के अमरेली जिले के एक प्राथमिक विद्यालय में ह्यडेयर गेमह्ल खेलते हुए खुद को चोट पहुंचाने या फिर दस रुपए भुगतान करने की चुनौती देने के बाद पच्चीस बच्चों ने खुद को ब्लेड से घायल कर लिया। इस तरह की सोच का सिरा आगे कहां जाएगा? खुद को नुकसान पहुंचाने या फिर इससे आगे किसी जघन्य अपराध को अंजाम देने के लिए प्रेरित करने वाली प्रवृत्ति के स्त्रोत आखिर क्या हैं?

कई बार ऐसा लगता है कि मौजूदा दौर में आम जनजीवन में घुल गए या फिर जरूरतों में शामिल हो चुके तकनीकी संसाधन बच्चों के विवेक पर भी हमला कर रहे हैं और उनके भीतर सही-गलत के बारे में सोचने की प्रक्रिया बाधित हो रही है। वरना क्या कारण है कि जिन आधुनिक तकनीकों को विकास का मानक मान लिया जाता है, वही कई बार एक विचित्र सम्मोहन पैदा कर रहे हैं और कई किशोर उससे प्रभावित होकर अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए जघन्य अपराध करने से भी नहीं हिचकते। उनके भीतर कानून तक का खौफ नहीं होता।

हालांकि पिछले कुछ वर्षों से गंभीर अपराधों में भी किशोरों की संलिप्तता के जैसे मामले सामने आ रहे हैं, उसमें यह घटना कोई आश्चर्य नहीं पैदा करती, लेकिन जिस स्तर पर कम उम्र के बच्चों के भीतर आपराधिक प्रवृत्तियों का दायरा फैल रहा है, उसमें यह बेहद चिंता की बात है कि आखिर वे कौन-से कारक हैं जो बच्चों को ऐसी मानसिकता की गिरफ्त में ले रहे हैं।

सेवा, सुरक्षा और सुशासन के 8 वर्ष

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रेरणादायी मार्गदर्शन और उनके विजनरी नेतृत्व में सेवा, सुरक्षा और सुशासन के 8 वर्ष पूरे हुए हैं। उन्होंने 25 करोड़ प्रदेशवासियों को 8 वर्ष की इस शानदार यात्रा के लिए बधाई दी और कहा कि डबल इंजन सरकार ने हर क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन किया है।

संजीव कुमार

सरकार के 8 वर्ष पूरे होने के अवसर पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपनी सरकार के विकास कार्यों का विस्तृत खाका प्रस्तुत किया। इस दौरान 8 वर्षों में यूपी में सरकार के कामकाज पर 'एक झलक' रिपोर्ट कार्ड डॉक्यूमेंट्री दिखाई गई और पुस्तिका का विमोचन किया गया। पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए सीएम योगी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रेरणा और 25 करोड़ प्रदेशवासियों के समवेत प्रयास से आज यह उत्तर प्रदेश, भारत के 'श्रम शक्ति पुंज से अर्थ शक्ति पुंज' बनने की ओर अग्रसर है। उत्तर प्रदेश वही है, लेकिन बीते 8 वर्षों परसेप्शन पूरी तरह से बदल चुका है। सुरक्षा, सुशासन, समृद्धि और सनातन संस्कृति के क्षेत्र में जो पहचान बनी है उसका एहसास उत्तर प्रदेश ही नहीं पूरा भारत कर रहा है। उन्होंने कहा कि 8 वर्ष पहले बीमारू राज्य की पहचान रखने वाला उत्तर प्रदेश आज देश की अर्थव्यवस्था का ग्रोथ इंजन बन चुका है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रेरणादायी मार्गदर्शन और उनके विजनरी नेतृत्व में सेवा, सुरक्षा और सुशासन के 8 वर्ष पूरे हुए हैं। उन्होंने 25 करोड़ प्रदेशवासियों को 8 वर्ष की इस शानदार यात्रा के लिए बधाई दी और कहा कि डबल इंजन सरकार ने हर क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन किया है। सीएम योगी के निर्देश पर 25, 26 और 27 मार्च को प्रत्येक जिला मुख्यालय पर तीन दिवसीय 'विकास उत्सव' आयोजन कराये गये। जिसमें अन्नदाता किसानों, युवाओं, मातृशक्ति,

हस्तशिल्पियों और उद्यमियों को सम्मानित किया गया। यहां केंद्र सरकार के 10 व प्रदेश के 8 वर्षों की विकास यात्रा को जनता के समक्ष रखा गया।

सीएम योगी ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने देश को 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने का लक्ष्य रखा है। यूपी नंबर दो की अर्थव्यवस्था है और जल्द नंबर एक बनेगा। उन्होंने पीएम मोदी, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, गृह मंत्री अमित शाह, बीजेपी अध्यक्ष जेपी नड्डा और मंत्रिमंडल के सहयोगियों और एनडीए के सभी घटक दलों का आभार जताया। सीएम योगी ने कहा कि यह 8 वर्ष की शानदार यात्रा टीम भावना, स्केल, स्किल और स्पीड का परिणाम है।

आज उत्तर प्रदेश में कानून का राज है- योगी

सीएम योगी ने कानून-व्यवस्था में सुधार को सबसे बड़ी उपलब्धि बताया। उन्होंने कहा कि 2017 से कि पहले हर तीसरे दिन दंगे होते थे। बेटियां और व्यापारी असुरक्षित थे। लेकिन आज उत्तर प्रदेश में कानून का राज है। उन्होंने प्रयागराज महाकुंभ का उदाहरण देते हुए कहा कि 45 दिनों के इस आयोजन में कोई छेड़छाड़, लूटपाट या अपहरण की घटना नहीं हुई। सीएम योगी ने बताया कि 2017 में 1.5 लाख पुलिस पद खाली थे। डबल इंजन सरकार ने पारदर्शी भर्ती प्रक्रिया के जरिए 1,56,000 पुलिसकर्मियों की भर्ती की और हाल ही में 60,200 नई भर्तियां की गईं। उन्होंने कहा कि 10 जनपदों में पुलिस लाइन नहीं थी। हमने सभी जगह पुलिस लाइन बनाईं। ट्रेनिंग क्षमता 6,000 से बढ़ाकर 60,244 कर दी गई। उन्होंने कहा कि पीएसी की 54 कंपनियां पिछली सरकारों ने खत्म कर दी थीं, जिन्हें बहाल किया गया। तीन महिला बटालियन और पांच नई पीएसी बटालियन गठित की गईं। साइबर थानों और हेल्प डेस्क की स्थापना की गई। पीआरबी 112 का रिस्पांस टाइम 25 मिनट 42 सेकंड से घटकर 7 मिनट 24 सेकंड हो गया। 11 लाख से अधिक सीसीटीवी कैमरे लगाकर सेफ सिटी की परिकल्पना को साकार किया गया।

1.65 करोड़ गरीबों को मुफ्त बिजली कनेक्शन दिए गए- सीएम योगी

सीएम योगी ने ऊर्जा क्षेत्र में प्रगति का जिक्र करते हुए कहा कि 1947 से 2017 तक 1,28,494 मजरों तक बिजली पहुंची थी। हमने 8 वर्षों में 1,21,000 मजरों को बिजली दी। उन्होंने कहा कि 2012-17 में 8.44 लाख बिजली कनेक्शन दिए गए, जबकि 2017-24 में 1.65 करोड़ गरीबों को मुफ्त बिजली कनेक्शन दिए गए। ग्रामीण क्षेत्रों में 18 घंटे, तहसील मुख्यालयों में 20 घंटे और जिला मुख्यालयों में 24 घंटे बिजली दी जा रही है। सीएम योगी ने कहा कि पावर जेनरेशन में 6,000 मेगावाट से बढ़कर 33,000 मेगावाट की आपूर्ति हो रही है। सौर ऊर्जा में 228 मेगावाट से बढ़कर 2,653 मेगावाट उत्पादन हो रहा है। उन्होंने बताया कि बुंदेलखंड में ग्रीन एनर्जी कॉरिडोर के जरिए 4,000 मेगावाट सोलर पावर की स्थापना हो रही है और अगले 5 वर्षों में 22,000 मेगावाट ग्रीन एनर्जी का लक्ष्य है।

8 वर्ष पहले पहचान की संकट से जूझ रहा था उत्तर प्रदेश

सीएम योगी ने 2017 से पहले की स्थिति का

जिक्र करते हुए कहा कि 8 वर्ष पहले उत्तर प्रदेश की पहचान संकट में थी। किसान आत्महत्या कर रहे थे, युवा अपनी पहचान के मोहताज थे, बेटियां और व्यापारी असुरक्षित थे। दंगों और अराजकता ने अर्थव्यवस्था को तबाह कर दिया था। उन्होंने कहा कि उस समय उत्तर प्रदेश को बीमारू राज्य माना जाता था और इसे देश के विकास में बाधक समझा जाता था। लेकिन 8 वर्षों में डबल इंजन सरकार ने इस परसेप्शन को पूरी तरह बदल दिया। आज उत्तर प्रदेश देश के विकास का ब्रेकथ्रू बनकर हर सेक्टर में आगे बढ़ रहा है।

इन आठ वर्षों में प्रदेश की कृषि क्षेत्र में आई क्रांति, अन्नदाता की आय हुई दोगुनी

सीएम योगी ने प्रदेश के कृषि क्षेत्र में हुए बदलावों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश प्राचीन काल से कृषि प्रधान रहा है। यहां उर्वर भूमि और जल संसाधन प्रचुर मात्रा में हैं। लेकिन 2017 से पहले किसान आत्महत्या कर रहे थे। उन्होंने कहा कि डबल इंजन की

नारी की सुरक्षा, सम्मान और स्वावलंबन संपूर्ण समाज के स्वावलंबन का आधार- सीएम योगी

सीएम योगी ने कहा कि नारी की सुरक्षा, सम्मान और स्वावलंबन संपूर्ण समाज के स्वावलंबन का आधार है। उन्होंने कहा कि 1947 से 2017 तक पुलिस बल में केवल 10,000 महिला पुलिसकर्मी थीं। लेकिन हाल की भर्ती में 12,000 और अब तक 25,000 से अधिक महिलाओं को पुलिस बल में शामिल किया गया। महिला वर्कफोर्स 14% से बढ़कर 35% से अधिक हो गई। मातृ वंदना योजना से 60 लाख माताएं लाभान्वित हुईं। बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ के तहत 22.11 लाख बेटियों को जन्म से स्नातक तक 25,000 रुपये की सहायता दी गई। सीएम योगी ने कहा कि 57,000 ग्राम पंचायतों में बीसी सखी बैंकिंग सुविधा दे रही हैं। एक करोड़ महिलाएं स्वयं सहायता समूहों से जुड़कर स्वावलंबी बनी हैं। उन्होंने बताया कि सामूहिक विवाह योजना में 4.76 लाख विवाह संपन्न हुए, और अब इसकी राशि 51,000 से बढ़ाकर 1,00,000 रुपये करने की घोषणा की गई। स्वामित्व योजना में एक करोड़ महिलाओं को मालिकाना हक दिया गया। कामकाजी महिलाओं के लिए अहिल्याबाई होल्कर के नाम पर छह शहरों में हॉस्टल बनाए जा रहे हैं।

बीते आठ वर्षों में बेरोजगारी दर 19% से 3% पर- योगी

सीएम योगी ने युवाओं के लिए किए गए कार्यों की चर्चा करते हुए कहा कि 2016-17 में बेरोजगारी दर 19% थी, जो आज घटकर 3% रह गई है। उन्होंने कहा कि बीते आठ वर्षों में 8 लाख से अधिक युवाओं को सरकारी नौकरियां दी गईं। एमएसएमई सेक्टर में 2 करोड़ से अधिक युवा स्वरोजगार से जुड़े। 50 लाख युवाओं को टैबलेट और स्मार्टफोन देकर डिजिटल सक्षम बनाया गया। 96 लाख एमएसएमई यूनिट्स के साथ उत्तर प्रदेश इस क्षेत्र में अग्रणी है। सीएम योगी ने कहा कि वन जिला वन प्रोडक्ट (डउ्ढ) योजना ने परंपरागत उद्यमिता को बढ़ावा दिया। निर्यात 86,000 करोड़ से बढ़कर 2 लाख करोड़ रुपये से अधिक हो गया। उन्होंने मुख्यमंत्री युवा उद्यमी स्कीम का जिक्र करते हुए कहा कि 31 मार्च तक 1 लाख नए युवा उद्यमी बनाने का लक्ष्य है, जिसमें 5 लाख रुपये तक का ब्याजमुक्त और गारंटी मुक्त लोन दिया जा रहा है। विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना के तहत हस्तशिल्पियों को स्किल डेवलपमेंट और टूलकिट्स दी गईं।

सरकार ने इस स्थिति को बदला।

2017 में पहली कैबिनेट में ही 36,000 करोड़ रुपये की लागत से लघु और सीमांत किसानों की कर्ज माफी की गई। इसके परिणामस्वरूप 2016-17 में 557 लाख मीट्रिक टन खाद्यान्न उत्पादन करने वाला उत्तर प्रदेश 2023-24 में 668 लाख मीट्रिक टन खाद्यान्न उत्पादन तक पहुंच गया, जो 20% की वृद्धि दशार्ता है। सीएम योगी ने कहा कि प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के तहत 2.61 करोड़ से अधिक किसानों को 80,000 करोड़ रुपये से अधिक की धनराशि डीबीटी के जरिए दी गई। उन्होंने बताया कि 40 वर्षों से लंबित अर्जुन सहायक, बाणसागर और सरयू नहर जैसी परियोजनाओं को पूरा कर 23,000 हेक्टेयर अतिरिक्त भूमि को सिंचाई सुविधा दी गई। कृषि विज्ञान केंद्र, नया ऋषि विश्वविद्यालय और टेक्नोलॉजी के उपयोग से धान, गेहूं, दलहन और श्री अन्न में उत्तर प्रदेश शीर्ष पर पहुंच गया।

गन्ना किसानों के लिए किए गए कार्यों का जिक्र करते हुए सीएम योगी ने कहा कि 2008-09 से 2017 तक गन्ना किसानों का हजारों करोड़ रुपये बकाया था। हमारी सरकार ने एक भी चीनी मिल बंद नहीं होने दी। तीन नई चीनी मिलें स्थापित कीं, छह का पुनः संचालन किया और 38 का विस्तार किया। उन्होंने कहा कि 2017 से अब तक 2.80 लाख करोड़ रुपये का गन्ना मूल्य भुगतान किया गया, जो पिछली सरकारों के 22 वर्षों के भुगतान से 60,000 करोड़ रुपये अधिक है। एथेनॉल उत्पादन 42 करोड़ लीटर से बढ़कर 177 करोड़ लीटर तक पहुंच गया।

हर जिला मुख्यालय की नगर पालिका को बनाएंगे स्मार्ट सिटी- मुख्यमंत्री

सीएम योगी ने नगरीय विकास पर चर्चा करते हुए कहा कि प्रदेश के अंदर नगरीय विकास के क्षेत्र में भी व्यापक परिवर्तन देखने को मिले हैं। 2016-17 में देश के 10 सबसे गंदे शहर यूपी के थे। आज 17 म्युनिसिपल कॉरपोरेशन स्मार्ट सिटी बन चुके हैं। उन्होंने बताया कि इस बार के बजट में हर जिला मुख्यालय की नगर पालिका को स्मार्ट सिटी बनाने की योजना है। लखनऊ, वाराणसी और कानपुर को स्टेट डेवलपमेंट रीजन के रूप में विकसित किया जा रहा है। वाराणसी में देश की पहली रोप-वे सेवा जल्द शुरू होगी।

कनेक्टिविटी, सुरक्षा और सुविधाओं के विकास ने पर्यटन को बढ़ावा दिया

सीएम योगी ने कहा कि उत्तर प्रदेश ने टूरिज्म के क्षेत्र में भी एक लंबी चलांग लगाई है। यूपी के अलग-अलग क्षेत्रों में हुए विकास कार्यों का असर यूपी के पर्यटन क्षेत्र में भी देखने को मिला है। '2017 से पहले 21 करोड़ पर्यटक आते थे, उसमें स्पिरिचुअल भी होता था इको टूरिज्म भी होता था हेरिटेज भी होता था और अन्य तमाम आयोजन के साथ भी जुड़ते थे आज यह संख्या बहुत बड़ी हो चुकी है। 2023 में 67 करोड़ पर्यटक आए। उन्होंने बताया कि प्रयागराज महाकुंभ में भी 67 करोड़ श्रद्धालु पहुंचे। योगी ने कहा, 'आस्था अब अर्थव्यवस्था का सशक्त माध्यम बन गई है। कनेक्टिविटी, सुरक्षा और सुविधाओं के विकास ने पर्यटन को बढ़ावा दिया। सीएम योगी ने कहा कि डबल इंजन की सरकार ने काफी बड़े पैमाने पर अवस्थापना सुविधाओं का विकास भी किया है। आज उसका परिणाम हम सभी के सामने है।

बीते आठ वर्षों में सुदृण हुई प्रदेश की स्वास्थ्य सुविधाएं- योगी

सीएम योगी ने स्वास्थ्य क्षेत्र में प्रगति का जिक्र करते हुए कहा कि 1947 से 2017 तक केवल 12 सरकारी मेडिकल कॉलेज थे। आज 80 मेडिकल कॉलेज हैं, जिनमें 44 सरकारी हैं। प्रदेश के अंदर इससे पहले नर्सिंग और पैरामेडिकल कॉलेज की स्थिति क्या थी ताले लटकते थे। ना इंफ्रास्ट्रक्चर था ना फैकल्टी थी, आज प्रदेश के अंदर हर मेडिकल कॉलेज में नर्सिंग कॉलेज बनाने की

2017 से पहले इज ऑफ डूइंग बिजनेस में यूपी 14वें स्थान पर था। आज टॉप अचीवर स्टेट है- सीएम योगी

सीएम योगी ने उत्तर प्रदेश के औद्योगिक विकास पर चर्चा करते हुए कहा कि 2017 से पहले इज ऑफ डूइंग बिजनेस में यूपी 14वें स्थान पर था। आज टॉप अचीवर स्टेट है। उन्होंने कहा कि 33 सेक्टोरियल पॉलिसी और सिंगल विंडो सिस्टम के जरिए 500 से अधिक एनओसी एक प्लेटफॉर्म पर दी जा रही हैं। 15 लाख करोड़ रुपये से अधिक की निवेश परियोजनाएं जमीनी धरातल पर उतारी गईं। सीएम योगी ने कहा कि उत्तर प्रदेश निवेशकों के लिए ड्रीम डेस्टिनेशन बन गया है।

कार्यवाही को तेजी के साथ आगे बढ़ने का कार्य हो रहा है। प्रदेश के अंदर हम लोगों ने जो 36 जनपद ऐसे थे जिनमें संचारित रोग में खास तौर पर इंसेफेलाइटिस थे, उत्तर प्रदेश के मासूम तड़प तड़प कर मरते थे आज उसे पर प्रभावी नियंत्रण करने में उत्तर प्रदेश में सफलता प्राप्त की है।मुझे बताते हुए प्रसन्नता है कि इंसेफेलाइटिस पर 85% और जापानी इंसेफेलाइटिस पर 99% नियंत्रण हासिल किया गया। डेंगू मृत्यु दर 95% और मलेरिया 56% कम हुआ। आयुष्मान भारत योजना में यूपी नंबर एक है। एमबीबीएस सीटें 1,990 से बढ़कर 5,250 और पीजी सीटें 741 से बढ़कर 1,871 हो गईं।

पिछले 8 वर्ष में हमने प्रदेश की अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान की

सीएम योगी ने कहा कि आज प्रदेश में बिना कुछ बोझ डाले जनता जनार्दन पर कोई भी बिना अतिरिक्त टैक्स लगाए बगैर पिछले 8 वर्ष में हमने प्रदेश की अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान की है। इसके लिए भ्रष्टाचार पर प्रभावी प्रहार किया, लीकेज को रोकना, सोर्स ऑफ इनकम को बढ़ाकर हमने रेवेन्यू बढ़ाई हैं और परिणाम है कि आज उत्तर प्रदेश देश का एक रेवेन्यू सरप्लस स्टेट है। 2017 में यूपी की अर्थव्यवस्था 12.75 लाख करोड़ रुपये थी, जो आज 27.5 लाख करोड़ रुपये से अधिक हो गई। प्रति व्यक्ति आय 46,000 से बढ़कर 1,24,000 रुपये हो गई। उन्होंने बताया कि 2000 से 2017 तक 3,300 करोड़ रुपये का एफडीआई आया, जबकि 2017-24 में 14,808 करोड़ रुपये का एफडीआई आया। बैंकिंग व्यवसाय 12.30 लाख करोड़ से बढ़कर 29.66 लाख करोड़ रुपये हो गया। सीडी रेशियो 46% से बढ़कर 61% हो गया। सीएम योगी ने आरबीआई की रिपोर्ट का जिक्र करते हुए कहा कि प्रोजेक्ट फाइनेंसिंग के लिए फंड आकर्षित करने में 16.2 % हिस्सेदारी के साथ उत्तर प्रदेश से देश के अंदर शीर्ष स्थान पर है। मुंबई स्टॉक में 132 कंपनियों ने केवल उत्तर प्रदेश की है, जो जिन्होंने वहां पर पंजीकरण कराया और जिनका मार्केट कैपिटल 368162 करोड रुपए से अधिक का है। वह प्रदेश के अंदर 2017 तक कुछ 13000 फैक्ट्रियां आज इनकी संख्या इन 8 वर्ष इनकी संख्या बढ़कर के 26900 से अधिक है। यह संख्या बताती है कि उत्तर प्रदेश एक अच्छी दिशा में आगे बढ़ा है।

पहले नकल को जन्मसिद्ध अधिकार माना जाता था, आज हो रही नकल विहीन परीक्षाएं- मुख्यमंत्री

सीएम योगी ने शिक्षा क्षेत्र में सुधारों को को पत्रकारों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए कहा कि पहले नकल को जन्मसिद्ध अधिकार माना जाता था। आज नकल विहीन परीक्षाएं हो रही हैं। उन्होंने कहा कि बेसिक शिक्षा परिषद के स्कूलों में 50 लाख से अधिक बच्चों की बढ़ोतरी हुई। सभी बच्चों को 1,200 रुपये यूनिफॉर्म, बैग, किताबें, जूते और स्वेटर के लिए दिए जा रहे हैं। स्कूलों में टॉयलेट, पेयजल, डिजिटल लाइब्रेरी और फ्लोरिंग की व्यवस्था की गई। माध्यमिक स्कूलों के लिए अलंकार योजना शुरू की गई। छह कमिश्नरियों में नए राज्य विश्वविद्यालय, मेडिकल यूनिवर्सिटी, आयुष विश्वविद्यालय और एक अतिरिक्त एग्रीकल्चर विश्वविद्यालय की स्थापना की गई। 10 नए विश्वविद्यालय और 21 निजी विश्वविद्यालय स्थापित किए गए। प्रत्येक जनपद में मुख्यमंत्री अभ्युदय कोचिंग शुरू की गई। अनुसूचित जाति, जनजाति और ओबीसी छात्रों को 100% स्कॉलरशिप दी जा रही है।

बीते आठ वर्षों में 6 करोड़ से अधिक लोग गरीबी रेखा के ऊपर पहुंचे- मुख्यमंत्री

सीएम योगी ने कहा कि पिछले 8 वर्षों में 6 करोड़ से अधिक गरीबों को गरीबी रेखा से ऊपर उठाया गया। उन्होंने बताया कि 15 करोड़ लोग पिछले 5 वर्षों से मुफ्त राशन प्राप्त कर रहे हैं। 1.86 करोड़ उज्ज्वला कनेक्शन दिए गए। होली और दीपावली पर मुफ्त सिलेंडर दिए जा रहे हैं। 9 करोड़ लोगों को आयुष्मान भारत योजना के तहत गोल्डन कार्ड दिए गए। 56 लाख गरीबों को आवास उपलब्ध कराए गए। सीएम योगी ने कहा कि 2017 से पहले 55 लाख निराश्रित महिलाओं, वृद्धजनों और दिव्यांगों को पेंशन मिलती थी। आज यह संख्या 1.06 करोड़ हो गई है। पेंशन राशि 300 से बढ़ाकर 1,000 रुपये कर दी गई। उन्होंने बताया कि 2024-25 में 9.08 करोड़ लोगों को 1.10 लाख करोड़ रुपये डीबीटी के जरिए दिए गए, जिससे 10,000 करोड़ रुपये की बचत हुई। नए वित्तीय वर्ष में जीरो पॉवर्टी का लक्ष्य हासिल करने के लिए सरकार कृतसंकल्पित है।

आज यूपी एक्सप्रेसवे का पर्याय बन गया है

सीएम योगी ने इंफ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र में हुई प्रगति को पत्रकारों के समक्ष रखते हुए कहा कि पहले कहा जाता था कि जहां गड्ढे शुरू हो जाएं, समझो उत्तर प्रदेश आ गया। आज यूपी एक्सप्रेसवे का पर्याय बन गया है। उन्होंने कहा कि यूपी में एक्सप्रेसवे की प्रगति आप इंटरनेट पर सर्च कर सकते हैं, जवाब मिल जाएगा। सीएम योगी ने कहा कि आज 6 एक्सप्रेसवे संचालित हैं और 11 पर काम चल रहा है। गंगा एक्सप्रेसवे बनने के बाद देश के 55% एक्सप्रेसवे उत्तर प्रदेश में होंगे। सबसे बड़ा रेल नेटवर्क उत्तर प्रदेश के पास है। सीएम योगी ने कहा कि सर्वाधिक मेट्रो संचालन यूपी में हो रहा है। देश की पहली रैपिड रेल दिल्ली-मेरठ के बीच और पहला वॉटरवे हल्दिया-वाराणसी के बीच शुरू हुआ। उन्होंने बताया कि वाराणसी से प्रयागराज और बलिया से अयोध्या तक वॉटरवे की सुविधा बढ़ाई जा रही है। हर जनपद मुख्यालय फोरलेन से जुड़ा है। 2017 में 2 एयरपोर्ट क्रियाशील थे, आज 16 एयरपोर्ट हैं, जिनमें 4 इंटरनेशनल हैं। जेवर में देश का सबसे बड़ा एयरपोर्ट जल्द शुरू होगा। सीएम योगी ने कहा कि लैंडलॉक्ड स्टेट से उत्तर प्रदेश मुक्त हो चुका है।

केन्द्र की इन योजनाओं में टॉप पर है उत्तर प्रदेश

सीएम योगी ने कहा कि खाद्यान्न, गन्ना, आलू, इथेनॉल उत्पादन, इज ऑफ डूइंग बिजनेस, प्रोजेक्ट फाइनेंसिंग, आयकर रिटर्न, जेम पोर्टल खरीद, कौशल विकास, एमएसएमई, पीएम आवास, उज्ज्वला, स्वामित्व, जन धन, सुरक्षा बीमा और जीवन ज्योति बीमा योजना में यूपी नंबर एक है। उन्होंने कहा कि यह टीम भावना और ईमानदार प्रतिबद्धता का परिणाम है।

संघ विरोधियों को नरेन्द्र मोदी का उत्तर

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर केवल तुषार गांधी ही हमला नहीं कर रहे हैं, कांग्रेस नेता राहुल गांधी के नेतृत्व में पूरे इंडी गठबंधन के नेता किसी न किसी बहाने संघ पर हमलवार रहे है क्योंकि संघ निरंतर हिंदू समाज को एकरस करने के लिए कार्य कर रहा है जिससे इनकी जातिवादी- क्षेत्रवादी- भाषावादी और परिवारवादी राजनीति का भविष्य दांव पर लग गया है।

रवि जैन

अपने जन्मकाल से ही अविचलित रूप से राष्ट्र सेवा करते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अब अपनी शताब्दी तक पहुंच गया है। माँ भारती और हिन्दू समाज की इस अहर्निश सेवा यात्रा में संघ पर नियमित रूप से राजनैतिक हमले भी होते रहे किन्तु संघ न डरा न डिगा वरन सतत संकल्पवान होकर भारत माँ की सेवा में तत्पर रहा। संभवतः संघ का यह निष्कंप समर्पण ही उसके विरोधियों को भयग्रस्त करता है और उन्हें तर्कहीन बातें कहने को बाध्य करता है।

संघ पर हमले का एक उदहारण महात्मा गांधी के प्रपौत्र तुषार गांधी के बयान के रूप में सामने आया है। 12 मार्च 2025 को केरल के तिरुअनंतपुरम में गांधीवादी नेता पी गोपीनाथन नायर की प्रतिमा का अनावरण करते हुए तुषार गांधी ने कहा, 'राष्ट्र की आत्मा कैंसर से पीड़ित है और संघ परिवार इसे फैला रहा है'। यही नहीं उन्होंने भाजपा और संघ को केरल में प्रवेश करने वाला एक कपटी शत्रु बताया। तुषार ने संघ को जहर भी कहा। इस वक्तव्य के बाद से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भाजपा के कार्यकर्ता केरल में तुषार गांधी से मांफी मांगने व उनकी गिरफ्तारी की मांग को लेकर प्रदर्शन कर रहे हैं। इसके प्रति उत्तर में तुषार गांधी ने कहा कि वह अपनी बातों से पीछे हटने या उनके लिए माफी मांगने में विश्वास नहीं करते। वह संघ के प्रति नफरत से इस सीमा तक भरे हुए हैं कि कहते हैं कि अब हमारा एक साझा दुश्मन है और वह है संघ। भाजपा ने तुषार गांधी पर पलटवार करते हुए कहा कि तुषार गांधी कई वर्षों से महात्मा गांधी के नाम को आर्थिक लाभ के लिए भुनाने का प्रयास कर रहे हैं।

आज महात्मा गांधी के प्रपौत्र तुषार गांधी संघ को कैंसर बता रहे जबकि स्वयं महात्मा गांधी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शिविर में गये थे और अपने अनुभव साझा करते हुए लिखा था कि,' कुछ वर्ष पहले जब संघ के संस्थापक जीवित थे आपके शिविर में गया था। वहां पर आपके अनुशासन, अस्पृश्यता का पूर्णरूप से अभाव और कठोर सादगीपूर्ण जीवन देखकर काफी प्रभावित हुआ। सेवा और स्वार्थ त्याग के उच्च आदर्श से प्रेरित कोई भी संगठन दिन प्रतिदिन अधिक शक्तिवान हुए बिना नही रहेगा।'

किन्तु राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर केवल तुषार गांधी ही हमला नहीं कर रहे हैं, कांग्रेस नेता राहुल गांधी के नेतृत्व में पूरे इंडी गठबंधन के नेता किसी न किसी बहाने संघ पर हमलवार रहे है क्योंकि संघ निरंतर हिंदू समाज को एकरस करने के लिए कार्य कर रहा है जिससे इनकी जातिवादी- क्षेत्रवादी- भाषावादी और परिवारवादी राजनीति का भविष्य दांव पर लग गया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विपक्ष के पूरे प्रपंच को एक बार में ही ध्वस्त कर दिया है और पूरे विश्व को संघ शक्ति का परिचय दे दिया है। अमेरिकी पॉडकास्टर लेक्स फ्रिडमैन को दिये एक लंबे साक्षात्कार में संघ के समर्पित स्वयंसेवक नरेन्द्र मोदी ने संघ के विरोधियों का मुंह बंद करते हुए संघ के विरुद्ध जो नफरत भरा वातावरण तैयार किया जा रहा था उसे ध्वस्त करने का सार्थक प्रयास किया है। प्रधानमंत्री मोदी का यह पॉडकास्ट पूरी दुनिया में

चर्चा का केंद्र बिंदु बन चुका है। इस पॉडकास्ट को अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प ने अपने निजी सोशल मीडिया अकाउंट पर भी साझा किया है जिसे करोड़ों लोग देख रहे हैं। पॉडकास्ट हिंदी तथा अंग्रेजी सहित कई प्रमुख भाषाओं में सुना जा सकता है।

पॉडकास्ट में संघ से उनके संबंधों को लेकर पूछे गए एक प्रश्न के उत्तर में प्रधानमंत्री जी ने अपने बचपन को स्मरण करते हुए संघ के विषय में बात की। वो कैसे शाखा में गए, उन्होंने क्या देखा, किस बात ने उनको प्रभावित किया इत्यादि। इसके बाद उन्होंने कहा कि संघ एक बहुत बड़ा संगठन है। अब संघ 100 वर्ष का है। दुनिया में इतना बड़ा कोई और ,संगठन होगा मैंने नहीं सुना है। करोड़ों लोग उसके साथ जुड़े हैं। संघ को समझना इतना सरल नहीं हैं। संघ के काम को समझने का प्रयास करना चाहिए। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि संघ व्यक्ति को 'पर्पस आफ लाइफ' देता है, जीवन में एक दिशा देता है। देश ही सबकुछ है और जनसेवा ही प्रभु सेवा है, जो हमारे ग्रंथों में कहा गया है, जो स्वामी विवेकानंद ने कहा, वही संघ कहता है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पॉडकास्ट के उस मंच से संघ के आलोचकों को स्पष्ट संदेश देते हुए कहा कि संघ के स्वयंसेवक जीवन के हर क्षेत्र में सेवा करते है और कर रहे हैं। कुछ स्वयंसेवकों ने सेवाभारती नामक संगठन खड़ा किया है। यह सेवा भारती नामक संगठनके लोग गरीब बस्तियों में जाकर सेवा करते हैं। सेवा भारती के लगभग सवा लाख सेवा प्रकल्प चल रहे हैं वह भी बिना किसी सरकारी सहायता के। उन्होंने बताया कि संघ वनवासी कल्याण आश्रम चलाता है जिसमें स्वयंसेवक जंगलों में रहकर आदिवासियों की सेवा करते हैं ।70 हजार से भी अधिक एकल विद्यालय चल रहे हैं। अमेरिका में भी कुछ लोग हैं जो 10 से 15 डॉलर तक का दान देते हैं। एक कोकाकोला नहीं पियो और उतना पैसा एकल विद्यालय को दो। कुछ स्वयंसेवकों ने शिक्षा में क्रांति लाने के लिए विद्या भारती संगठन बनाया। जिसमें लाखों की संख्या में बालक -बालिकाएं अध्ययनरत हैं वह भी बहुत ही कम कीमत पर पढ़ाई हो रही है ।विद्या भारती के विद्यालयों में विद्यार्थी जीवन के हर क्षेत्र से जुड़े हुनर भी सीख रहे हैं ।

संघ का एक सबसे बड़ा संगठन भारतीय मजदूर संघ भी एक बड़ा संगठन है जिसकी 55 हजार से अधिक यूनियन व करोड़ों सदस्य हैं। मजदूर संघ की बात करते हुए प्रधानमंत्री ने वामपंथ और संघ के विचारों का अंतर भी स्पष्ट किया, उन्होंने कहा जहाँ अन्य संगठन कहते हैं, दुनिया के मजदूरों एक हो जाओ वहीँ भारतीय मजदूर संघ कहता है मजदूर दुनिया को एक करते हैं, ये सोच का अंतर है। संघ 100 वर्षों से सभी प्रकार के चकाचौंध से दूर रहकर एकसाधक की तरह समर्पित भाव से कार्य कर रहा है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मात्र कुछ उदाहरणों से ही संघ विरोधियों को बेनकाब कर दिया और अब यह पूरे विश्व में चर्चा में है। तुषार गांधी जैसे लोगों को भी शायद यह समझ में आ गया होगा कि संघ क्या है। संघ सदैव समाज सेवा में तत्पर संगठन है फिर वह चाहे किसी भी प्रकार की प्राकृतिक आपदा का समय हो जिसमें बाढ़, सूखा, भूकम्प, तूफान से लेकर अग्निकांड, रेल दुर्घटनाओं तक में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक बिना किसी प्रचार के सेवा में संलग्न हो जाते हैं। कोविड काल में जब पूरे भारत में लॉकडाउन था उस समय संघ भी के स्वयंसेवक आमजन को दवा और भोजन आदि उपलब्ध करा रहे थे जबकि तुषार गांधी जैसे आलोचक केवल सरकार की निंदा और अफवाहें फैलाने का ही कार्य कर रहे थे।

यह संघ की सेवाओं ही प्रयास व परिणाम रहा है कि करोड़ों की संख्या में आदिवासी व गरीब हिन्दू मतांतरित होने से बच सका है तथा लाखों की संख्या में मतांतरित हिंदुओं की घर वापसी हो रही है। जो लोग हिंदू सनातन धर्म का उन्मूलन करना चाहते हैं उनके सपने को कोई ध्वस्त कर रहा है तो वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ही है। अयोध्या में भव्य राम मंदिर निर्माण का सपना जो पूरा हुआ है उसके पीछे भी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ व उसके समवैचारिक तथा आनुषांगिक संगठनों की तपस्या ही है। राष्ट्रीय स्वयंसवेक संघ की सामाजिक समरसता के कारण ही आज 'एक रहेंगे तो सेफ रहेंगे' तथा 'बटेंगे तो कटेंगे' जैसे नारे लोकप्रिय हो रहे हैं। वर्तमान समय में महाकुंभ जैसे अत्यंत विशाल समागम जो सफल हो रहे हैं उनके पीछे भी संघ के छिपे हुए लाखों स्वयंसेवकों की सेवा ही रही है।

आज भारत का हिंदू अपने आप को गर्व से हिंदू कह रहा है तो यह संघ की अनथक तपस्या का ही परिणाम है और यही संघ विरोधियों की चिंता का सबसे बड़ा कारण भी है।

योगी सरकार ने शुरू की निर्माण कार्य शुरू करने की तैयारी

गाजियाबाद में जल्द बनेगा रामायण पार्क

- सीएम योगी के विजन को मिशन मानकर गाजियाबाद विकास प्राधिकरण (जीडीए) ने शुरू की तैयारी, अप्रैल से निर्माण कार्य होंगे शुरू
- रामायण पार्क में 5डी मोशन चेयर थिएटर व शीशा घर के निर्माण, होलोग्राफिक प्रोजेक्शंस, लाइट एंड साउंड शो समेत रामायणकालीन पात्रों की कलाकृतियों की स्थापना का कार्य होगा पूरा
- १६.१६ करोड़ रुपए की लागत से रामायण बेस्ड थीमपार्क के निर्माण व विकास कार्यों को किया जाएगा पूरा

उत्तर प्रदेश को उत्तम प्रदेश बनाने के लिए प्रतिबद्ध योगी सरकार गाजियाबाद के विकास और विभिन्न प्रकार की अवस्थापना सुविधाओं के निर्माण व विकास पर विशेष रूप से फोकस कर रही है। सीएम योगी के विजन को मिशन मानकर गाजियाबाद विकास प्राधिकरण (जीडीए) रामायण पार्क, संस्कृति दर्शन पार्क तथा ग्रीनवुड पार्क के निर्माण व विकास कार्यों की प्रक्रिया को

प्रवीण चौधरी

अप्रैल से शुरू करने जा रही है। उल्लेखनीय है कि रामायण पार्क को रामायण बेस्ड थीमपार्क के तौर पर विकसित करने का मास्टर प्लान तैयार कर लिया गया है। यहां 5डी मोशन चेयर थिएटर तथा शीशा घर का निर्माण होगा, जबकि होलोग्राफिक प्रोजेक्शंस, लाइट एंड साउंड शो समेत रामायणकालीन पात्रों की विभिन्न कलाकृतियों की स्थापना का कार्य 26.26 करोड़ रुपए से अधिक की लागत से पूरा किया जाएगा।

इसी प्रकार, संस्कृति दर्शन पार्क व ग्रीनवुड पार्क में भी 16.57 करोड़ रुपए की लागत से निर्माण व विकास के विभिन्न कार्यों को पूरा करने

की तैयारी है जिसकी शुरूआत अप्रैल माह से होगी।

5.61 एकड़ क्षेत्र में होगा रामायण पार्क का निर्माण व विकास

गाजियाबाद विकास प्राधिकरण (जीडीए) का उद्देश्य विजिटर्स के लिए एक इमर्सिव व शैक्षणिक अनुभव प्रदान करने का है। रामायण पार्क के माध्यम से विजिटर्स को आधुनिक तकनीक के साथ समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के समायोजन के रूप में रामायण आधारित थीम पार्क बनाया जाएगा। यह पार्क एक ऐतिहासिक स्थल के रूप में काम करेगा, जो निवासियों व आगंतुकों को समान रूप से आकर्षित करेगा तथा शहर की पहचान के तौर पर काम करेगा जिससे सामुदायिक गौरव की भावना को बढ़ावा मिलेगा। मास्टर प्लान के अनुसार, यहां रामायण काल के पात्रों की 15 कलाकृतियों समेत 45 कलाकृतियों की स्थापना तथा मल्टीमीडिया प्रौद्योगिकी मनोरंजन तत्वों, शीशा घर यानी मिरर भूलभुलैया, होलोग्राफिक प्रोजेक्शन, मोशन चेयर 5 डी थिएटर तथा किड्स एक्टिविटी एरिया जैसी सुविधाओं का विकास किया जाएगा। इस पार्क के विकास के लिए चिह्नित की गई भूमि कोयल एन्क्लेव, लोनी भोपुरा रोड पर स्थित है जिसका क्षेत्रफल 22,700 वर्ग मीटर (5.61 एकड़) है। पार्क में एंट्री टिकट फीस, पार्किंग फीस, एडवर्टिजमेंट, शीशा घर तथा मोशन चेयर 5डी ऑडिटोरियम से होने वाली कमाई के जरिए जीडीए के राजस्व में भी वृद्धि होगी। इन सभी

कार्यों को एक वर्ष की समयावधि में पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है।

फूड कियोस्क में विभिन्न प्रकार के जायकों का लिया जा सकेगा लुत्फ

जीडीए द्वारा तैयार किए गए मास्टर प्लान के अनुसार, संस्कृति दर्शन पार्क के विकास के लिए चिन्हित भूमि हाथी पार्क/रानी अवंती बाई पार्क में स्थित है, जिसका क्षेत्रफल 10.3 एकड़ है। यहां किड्स एक्टिविटी एरिया के साथ ही विभिन्न

16.57 करोड़ रुपए की लागत से संस्कृति दर्शन पार्क व ग्रीनवुड पार्क के निर्माण व विकास कार्यों को भी किया जाए जीडीए द्वारा पूरा

प्रकार की नागरिक सुविधाओं का विकास किया जाएगा। विशेष रूप से यहां ऐसी कलाकृतियों की स्थापना भी की जाएगी जो कि रीसाइक्ल्ड मटीरियल से बनी होगी और पर्यावरण संरक्षण के मूल्यों का प्रचार-प्रसार करेगी। इसी प्रकार, ग्रीनवुड पार्क का विकास निम्बू पार्क में किया जाएगा जिसका क्षेत्रफल 3.95 एकड़ है। यहां फूड कियोस्क का भी विकास किया जाएगा जहां विजिटर्स विभिन्न प्रकार के व्यंजनों का जायका ले सकेंगे। इन दोनों पार्कों के विकास कार्यों को पूरा करने के लिए 6 महीने की समयसीमा तय की गई है। दोनों पार्कों में 22 विशिष्ट प्रकार की कलाकृतियों की स्थापना भी की जाएगी। रामायण पार्क, संस्कृति दर्शन पार्क तथा ग्रीनवुड पार्क में सीसीटीवी इंस्टॉलेशन समेत टॉयलेट ब्लॉक्स व वॉकिंग लेन निर्माण समेत विभिन्न कार्यों को भी परियोजना के अंतर्गत पूरा किया जाएगा।

मानवता ने जब धरती को छुआ

कल्पना, सुनीता ये नाम सुंदर हैं और आम भारतीय घरों में प्रचलित भी। इन सामान्य से लगने वाले वाले नामों की दो लड़कियों ने भारत सहित पूरी दुनिया पर अनूठी छाप छोड़ी है

इंद्रेश शर्मा

ये दोनों अंतरिक्ष यात्री 9 महीने 14 दिन अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन आईएसएस में बिताने के बाद धरती पर वापस लौटे हैं। धरती पर कदम रखा इसलिए नहीं कह सकते कि इतना लंबा वक्त अंतरिक्ष में बिताने के बाद अभी उनके शरीर को धरती पर सामान्य तरीके चलने-फिरने का अभ्यस्त होने में वक्त लगेगा।

कल्पना, सुनीता ये नाम सुंदर हैं और आम भारतीय घरों में प्रचलित भी। इन सामान्य से लगने वाले वाले नामों की दो लड़कियों ने भारत सहित पूरी दुनिया पर अनूठी छाप छोड़ी है। कल्पना चावला और सुनीता विलियम्स इन दोनों की अंतरिक्ष यात्राएं समूचे अंतरिक्ष विज्ञान के लिए याद, सबक और मिसाल बन गईं। इनकी यात्राओं पर चर्चा करुंगी, लेकिन नाम का जिक्र इसलिए याद आया क्योंकि इस सदी में अनूठेपन के नाम पर अब काफी नए-नए तरह के नाम सुनने मिलते हैं, लोग अब अपने बच्चों का नाम रखने के लिए गूगल की मदद भी लेते हैं और ज्योतिष की सलाह भी। हालांकि शेक्सपियर तो सदियों पहले कह गए हैं कि नाम में क्या रखा है। गुलाब, गुलाब ही रहेगा, चाहे उसे किसी भी नाम से पुकारो। लेकिन भारतीय इस मामले में शेक्सपियर की बिल्कुल नहीं सुनते।

बच्चों के नामों में नयापन और इतिहास के नामों में धर्म के मुताबिक बदलाव, यही इस वक्त का चलन है। आश्चर्य होता है यह देखकर कि दुनिया में कितने तरह के काम, प्रयोग, शोध हो रहे हैं। विज्ञान, चिकित्सा, खेल, कला, व्यापार जीवन के हर पहलू में बड़ी तेजी से बदलाव हो रहे हैं। कारखानों, होटलों से लेकर आपरेशन थियेटर तक में रोबो से काम लिया जा रहा है। डीएनए का परीक्षण कर उसके बूते इंसान की आयु बढ़ाने, अपनी ही तरह का दूसरा इंसान पैदा करने, पैदा होने से पहले ही बीमारी का पता लगने पर इलाज करने जैसे कई आश्चर्यजनक काम किए जा रहे हैं। मानव अंगों के प्रत्यर्पण से एक इंसान की मौत के बाद उसे दूसरे इंसान में जिंदा रखा जा रहा है। छपी हुई मुद्रा के साथ आभासी मुद्रा का व्यापार हो रहा है। धरती, आकाश, पाताल हर जगह पहले इंसान की जिज्ञासा पहुंची, फिर इंसान ने खुद पहुंचने का रास्ता बना लिया। बुधवार सुबह ऐसे ही एक नए रास्ते को धरती के इंसानों ने देखा। जिसके दो राही खास थे बुच विल्मर और सुनीता विलियम्स।

ये दोनों अंतरिक्ष यात्री 9 महीने 14 दिन अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन आईएसएस में बिताने के बाद धरती पर वापस लौटे हैं। धरती पर कदम रखा इसलिए नहीं कह सकते कि इतना लंबा वक्त अंतरिक्ष में बिताने के बाद अभी उनके शरीर को धरती पर सामान्य तरीके चलने-फिरने का अभ्यस्त होने में वक्त लगेगा। जैसे 9 महीने मां की कोख में रहने के बाद जब बच्चा जन्म लेता है, तो धीरे-धीरे कदम संभालना सीखता है। अनोखा संयोग है कि सुनीता विलियम्स और बुच विल्मर 9 महीने उस धरती से दूर रहे, जो इंसानी जीवन की जननी है। बुधवार सुबह भारतीय समय के मुताबिक 3 बजकर 27 मिनट पर जब इन दो अंतरिक्ष यात्रियों के साथ अमेरिका के निक हेग और रूस के अलेक्सांद्र गोरबुनोव, यानी कुल चार यात्रियों को लेकर अंतरिक्ष यान ने फ्लोरिडा के समुद्र में डुबकी

लगाई तो विज्ञान और मानवता दोनों ने नयी प्राणवायु पाई।

पाठक जानते हैं कि केवल आठ दिनों के अंतरिक्ष सफर पर निकले सुनीता विलियम्स और बुच विल्मर को तकनीकी खराबी के कारण 9 महीने से ज्यादा का वक्त अंतरिक्ष में बिताना पड़ा। इस दौरान उन्हें लाने की कोशिशें होती रहीं। आखिरकार उन्हें लेने एक दूसरा यान भेजा गया और फिर उनकी सकुशल वापसी हुई। भारत में इस दौरान सुनीता विलियम्स के रिश्तेदारों के घरों से लेकर देश में जगह-जगह पूजा पाठ हुए, उनकी सुरक्षित वापसी के लिए हवन किए गए। भारतीय मूल की होने के कारण इतना लगाव स्वाभाविक है। इसी तरह जब कल्पना चावला भी अंतरिक्ष में गई थीं, तो उनके अमेरिकी नागरिक होने के बावजूद भारतीय इस बात को गर्व से कहते थे कि वे हरियाणा की हैं, यहीं पली बढ़ी, हालांकि बाद में वे उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका गईं और फिर वहीं की नागरिक हो गईं। कल्पना चावला के अंतरिक्ष सफर का अंत दर्दनाक था, अंतिम क्षणों में उनका यान आग के गोले में तब्दील हो गया। हालांकि उनके असाधारण काम आज भी याद किए जाते हैं।

सुनीता और कल्पना, अगर केवल इन दो नामों का जिक्र करें तो अभी बेशक अंतरिक्ष यात्री की पोशाक में सज्जित दो महिलाओं की शक्ल हमारी आंखों के सामने आएगी, लेकिन इसके साथ एक कड़वी सच्चाई यह है कि इन दो नामों के साथ-साथ, ऐसी सैकड़ों, लाखों लड़कियां हैं, जो ऐसे ही असाधारण काम करके अपने नामों को हमेशा के लिए यादगार बना सकती हैं, लेकिन उनके सपनों की उड़ान के लिए कोई आकाश ही बचने नहीं दिया जाता। अगर किसी ने हिम्मत दिखाई भी तो सपने उसी तरह राख कर दिए जाते हैं, जैसे कल्पना चावला का यान राख बन गया था। सुनीता विलियम्स तो पहले से अमेरिका में थीं और कल्पना चावला बाद में वहां गईं, लेकिन भारत में रहकर क्या इन्हें ऐसे मौके मिल पाते, इस सवाल का जवाब सब जानते हैं।

अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में भारत में भी खूब काम हो रहा है, कई वैज्ञानिक इसरो में काम करती हैं, जिनके बारे में बताने के लिए अलग से महिला वैज्ञानिक लिखना पड़ता है। क्या कभी किसी पुरुष वैज्ञानिक का जिक्र हम इस तरह से करते हैं, यह भी सोचना चाहिए। बहरहाल, अलग-अलग क्षेत्रों में योग्यता और श्रेष्ठता के पैमाने पर बार-बार खुद को साबित करने के बावजूद महिलाओं को बड़ी मुश्किल से अवसर मिलते हैं और वह भी अपवाद के तौर पर। वर्ना समाज का आलम तो ऐसा है कि अब भी लड़की अपने पिता, भाई, पति या किसी पुरुष रिश्तेदार के साथ घर से बाहर निकले तभी सुरक्षित मानी जाती है। जो लड़कियां सारी चुनौतियों को पार करके घर से बाहर निकल चुकी हैं, अपना कार्यक्षेत्र तय कर चुकी हैं, वहां उन्हें कितने तरह के भेदभाव का सामना करना पड़ता है, इस पर लिखने बैठें तो अलग पोथी तैयार हो जाएगी।

फिलहाल खुशी का दिन है कि सुनीता विलियम्स इतिहास रच कर वापस लौटीं, उन्हें लेने जो यात्री अंतरिक्ष में गए थे, उनमें रूस, जापान, अमेरिका के नागरिक थे। अपने अमेरिकी सहयोगी के साथ जब सुनीता लौटीं तो केवल भारत और अमेरिका नहीं पूरी दुनिया ने इस ऐतिहासिक क्षण की खुशियां मनाईं। धरती पर रहकर छोटी-छोटी बातों और स्वार्थों में इंसान उलझ कर पूरा जीवन व्यर्थ बिता देता है। उस वक्त ऐसी घटनाएं सोचने पर मजबूर कर देती हैं कि कितना कुछ कर गुजरने की ताकत इंसान को हासिल है। जब अंतरिक्ष में इंसान पहुंचता है तो धरती की सीमाओं के साथ, उन बंधनों से भी मुक्त होता है, जो खुद इंसान ने अपने लिए बना लिए हैं। वहां पासपोर्ट की पहचान से परे सब केवल इंसान होते हैं, जो भविष्य को बेहतर बनाने के लिए प्रयोग करते हैं, नयी संभावनाओं को खटखटाते हैं।

सुनीता विलियम्स और बुच विल्मर की सकुशल वापसी के लिए उन्हें लेने गए यात्रियों के अलावा एलन मस्क भी बधाई के पात्र हैं, जिन्होंने इस काम में अपना खास योगदान दिया और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने इसमें उनका साथ दिया। हालांकि कुछ दिनों पहले जिस अंदाज में ट्रंप ने इन यात्रियों की वापसी का जिक्र किया था, उसकी काफी आलोचना हुई थी। खैर राजनीति से परे, यह काम उन्हें तारीफ का हकदार बनाता है। इधर भारत में भी तमाम दलों ने इस पर बधाई दी है। प्रधानमंत्री मोदी ने इस वापसी का स्वागत किया है। भाजपा के कुछ नेता भारत की बेटी सुनीता विलियम्स की वापसी पर खुशी जता रहे हैं। हालांकि कुछ दिनों पहले भारत की एक और बेटी रंजनी श्रीनिवासन खुद निर्वासित होकर अमेरिका से भारत लौट आईं। कोलंबिया विवि में पीएचडी कर रही रंजनी श्रीनिवासन का वीजा अमेरिका ने इसलिए रद्द कर दिया, क्योंकि उन्होंने फिलीस्तीन के हक में आवाज उठाई थी। क्या भाजपा सरकार कभी रंजनी जैसी किसी बेटी के हक में भी कोई बात कहेगी।

आखिर बसपा की सियासी दुर्गति के लिए मायावती अपनी जिम्मेदारी दूसरों पर क्यों थोप रही हैं?

कभी भाजपा, कभी समाजवादी पार्टी, कभी कांग्रेस और कभी अन्य क्षेत्रीय दलों के साथ गठबंधन की राजनीति करके उन्होंने खुद को तो मजबूत बनाने की पहल की, लेकिन उनकी अड़ियल और हठी रवैये के चलते उनकी पटरी किसी से नहीं बैठी और अब राजनीतिक मजबूरी वश वह बिल्कुल अकेले बच गई हैं।

उत्तरप्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री और बहुजन समाज पार्टी की नेत्री सुश्री मायावती भले ही दलित की बेटी हैं, लेकिन जब दलित राजनीति के रथ पर सवार होकर वह सूबाई सत्ता और पार्टी दोनों के शीर्ष तक पहुंचीं तो दौलत पसंद बन गईं। उन्होंने अपनी सारी नीतियों को दौलत बटोरने के ही इर्दगिर्द केंद्रित कर दिया। जिससे दृढ़ स्वभाव की इस महिला नेत्री ने न केवल अकूत धन बटोरीं, बल्कि अपनी पार्टी को भी खूब आगे बढ़ाया। इस क्रम में उन्होंने जायज-नाजायज का ख्याल तक नहीं रखा। क्योंकि दलित समर्थक एक कानून हमेशा उन जैसों की कानूनी ढाल बन जाता है।हालांकि, वक्त का पाशा पलटते ही अब वही दौलत उन जैसी अविवाहित महिला के गले की फांस बन चुका है।

कहना न होगा कि जिस बामसेफ ने देश की दलित राजनीति को एक मजबूत प्रशासनिक आधार दिया, उसकी भी मायावती काल में इसलिए एक न चली, क्योंकि परिवार और पार्टी से आगे की सोच-समझ उनमें विकसित ही न हो पाई। दरअसल, बसपा के संस्थापक मान्यवर कांशीराम के मेहनत से फली-फूली धुर ब्राह्मण विरोधी दलित पार्टी बसपा पर मायावती ने उनके जीते जी ही अपना कब्जा जमा लिया और अपने सहोदर भाई आनंद की मदद से निरंतर मजबूत होती चली गईं, लेकिन जब से उन्होंने सत्ता प्राप्ति की गरज से ब्राह्मणों के प्रति सॉफ्ट कॉर्नर विकसित किया, तब से उन्हें अप्रत्याशित राजनीतिक सफलता तो खूब मिली, लेकिन उनका मूल कैडर इधर उधर छिटकने लगा।

इसके अलावा, जब से समाजवादी पार्टी प्रमुख मुलायम सिंह यादव से उनकी राजनीतिक प्रतिस्पर्धा भाजपा नेताओं की शह पर तेज हुई, तब से दलित समर्थक ओबीसी भी उनसे छिटकने लगे। वहीं, भाजपा के समर्थन से सत्ता की राजनीति जबसे उन्होंने शुरू की, तब से मुस्लिम वोटर भी बसपा से दूरी बनाने लगे। हालांकि, सत्ता संतुलन के लिए उन्होंने सवर्णों, ओबीसी और अल्पसंख्यक नेताओं को मलाईदार पद दिए, जिससे दलित भी उनसे ईर्ष्या करने लगे। इन सब कारणों से बसपा का जनाधार छीजता चला गया।

वहीं, कभी भाजपा, कभी समाजवादी पार्टी, कभी कांग्रेस और कभी अन्य क्षेत्रीय दलों के साथ गठबंधन की राजनीति करके उन्होंने खुद को तो मजबूत बनाने की पहल की, लेकिन उनकी अड़ियल और हठी रवैये के चलते उनकी पटरी किसी से नहीं बैठी और अब राजनीतिक मजबूरी वश वह बिल्कुल अकेले बच गई हैं। सवाल है कि तीन बार भाजपा या सपा के सहयोग से और एक बार अपने दम पर हासिल बहुमत से यूपी की मुख्यमंत्री बनने वाली मायावती, केंद्रीय राजनीति में अपने अच्छे-खासे सांसदों के बल पर दबदबा रखने वाली मायावती आखिर इस सियासी दुर्दिन को कैसे प्राप्त हुईं।

तो जवाब यही होगा कि एक ओर उनका पारिवारिक प्रेम और दूसरी ओर भावनात्मक रूप से जुड़े नेताओं-कार्यकताओं की मौद्रिक कारणों से उपेक्षा। हालांकि, जब तक वह इस बात को समझ पाई, तबतक बहुत देर हो चुकी है। आज उनके सांसदों और विधायकों की संख्या न के बराबर है। ऐसे में उनके घर में और पार्टी में जो पारिवारिक कोहराम मचा हुआ है, वह कोई नई बात नहीं है। क्षेत्रीय राजनीतिक दलों में ऐसी घटनाएं घटती रहती हैं। हालांकि, यह भी कड़वा सच है कि अपनी जिस जिद्दी स्वभाव के चलते वह सियासत में खूब आगे बढ़ीं, अब उसी जिद्दी स्वभाव के चलते उनकी पार्टी और परिवार दोनों

बिखराव के कगार पर है। वहीं, 70 वर्षीय मायावती सूझबूझ से काम लेने के चक्कर में गलतियां पर गलतियां करती जा रही हैं। जिस तरह से वो अपने ही निर्णय को बार बार पलट देती हैं, उससे उनकी सियासी साख भी चौपट हो रही है। इससे सीएम-पीएम बनने का उनका ख्वाब तो चूर हो ही रहा है, लेकिन जोड़-तोड़ से राष्ट्रपति-उपराष्ट्रपति या राज्यपाल बनने या फिर केंद्रीय मंत्री बनने की बची खुची संभावनाएं भी समाप्त होती जा रही हैं। चूंकि देश की दलित राजनीति का यह दुर्भाग्य रहा है कि ओबीसी नेताओं की तरह ही दलित नेता भी एक दूसरे राज्यों के बड़े दलित नेताओं से स्वभाविक समझदारी विकसित नहीं कर पाए और खुद को कमजोर करते चले गए। यूपी में तो मायावती ने दलितों को कद्दावर मुख्यमंत्री दिया, लेकिन बिहार आजतक उससे वंचित है। शायद इसलिए कि भाजपा-कांग्रेस ने अपनी सियासी हितों के लिए इन्हें भी आपस में लड़ाया और अपने इरादे में कामयाब रहे।

काश! मायावती भी यह सबकुछ समझ पातीं और तदनुसार निर्णय लेतीं।

हाल ही में मायावती ने अपने भतीजे आकाश आनंद को हटाते हुए उनके ससुर अशोक सिद्धार्थ पर जो निशाना साधा निशाना है, इससे उन्हें लाभ के बजाय और अधिक हानि हो सकती है, क्योंकि ये पार्टी के मजबूत स्तंभ रहे हैं और उनकी हर कमजोरी से वाकिफ हैं। यदि ये विभीषण बन गए तो उनका क्या होगा, सोच-समझ लें तो उचित रहेगा। दरअसल, मायावती ने आकाश आनंद को पार्टी के सभी पदों से हटा दिया है लेकिन इसके लिए उनके ससुर अशोक सिद्धार्थ को ज़िम्मेदार ठहराया है।

उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री और बहुजन समाज पार्टी (बीएसपी) प्रमुख मायावती ने अपने भतीजे आकाश आनंद को पार्टी के राष्ट्रीय समन्वयक समेत सभी अहम पदों से हटा दिया और कहा कि अहम फैसले अब वह खुद लेंगी। उन्होंने यह भी कहा है कि जब तक वह ज़िंदा रहेंगी, तब तक उनका कोई उत्तराधिकारी नहीं होगा। बीएसपी सुप्रीमो ने कहा कि उनके लिए पार्टी पहले है और बाकी रिश्ते-नाते बाद में। बता दें कि 2019 में मायावती ने आकाश को पार्टी का राष्ट्रीय समन्वयक बनाया था और अपने छोटे भाई यानी आकाश के पिता आनंद कुमार को बीएसपी का उपाध्यक्ष बनाया था।

इसके बाद से ही मायावती पर भाई-भतीजावाद के आरोप लग रहे थे। ऐसे आरोप पार्टी के भीतर और बाहर दोनों जगह लग रहे थे। कई लोग यह भी कहते हैं कि पार्टी के पुराने नेता आकाश आनंद को लेकर बहुत सहज नहीं थे। ऐसे में दिलचस्प है कि अब आकाश आनंद की जगह उनके पिता आनंद कुमार और साथ में रामजी गौतम को राष्ट्रीय समन्वयक

नियुक्त किया है। साथ ही अपने भतीजे को सभी अहम पदों से हटाने के फैसले को सही ठहराते हुए मायावती ने बीएसपी के संस्थापक कांशीराम का हवाला दिया है। उन्होंने कहा कि कांशीराम पार्टी में परिवार और रिश्तेदारों के काम करने के खिलाफ नहीं थे लेकिन उन्हें बाकी कार्यकताओं से ज्यादा विशेषाधिकार मिले, इसके खिलाफ थे।

ऐसे में सवाल है कि मायावती ने अशोक सिद्धार्थ को बीएसपी से क्यों निकाला था? क्या पारिवारिक कलह से जूझ रही हैं पार्टी सुप्रीमो? ऐसे में मायावती के भतीजे आकाश आनंद क्या उनके राजनीतिक उत्तराधिकारी बन पाएँगे? क्योंकि मायावती के पुराने तेवरों की वापसी से मिलते नए संकेत से पता चलता है कि इसका भावी असर क्या होगा? ये तो वही जानें।

दरअसल, लखनऊ में रविवार को बीएसपी की बैठक के बाद जारी बयान में कहा गया है कि कांशीराम के पदचिह्नों पर चलते हुए ही आकाश आनंद को सभी पदों से हटा दिया गया है और उनके ससुर अशोक सिद्धार्थ को पार्टी से निकाल दिया गया है। अशोक सिद्धार्थ ने पार्टी को पूरे देश में दो गुटों में बाँटकर कमजोर किया है। बीएसपी ने कहा है कि अशोक सिद्धार्थ को पार्टी से बाहर निकालने के बाद यह देखना होगा कि उनकी लड़की यानी आकाश आनंद की पत्नी प्रज्ञा पर इसका क्या असर पड़ता है और यह भी देखना होगा कि पत्नी का प्रभाव आकाश पर कितना पड़ता है। बीएसपी का कहना है कि इस आकलन पहले कुछ भी सकारात्मक नहीं लग रहा है। पार्टी का कहना है कि आकाश आनंद के खिलाफ जो कार्रवाई की गई, उसकी ज़िम्मेदारी उनके ससुर अशोक सिद्धार्थ की बनती है। क्योंकि अशोक सिद्धार्थ के कारण ही पार्टी का तो नुकसान हुआ ही है, आकाश आनंद का राजनीतिक करियर भी खराब हो गया है। मायावती ने यह भी कहा है कि अशोक सिद्धार्थ से मिले सबक के बाद आनंद कुमार ने अब अपने बच्चों का रिश्ता गैर-राजनीतिक परिवार में जोड़ने का फैसला किया है, ताकि बीएसपी के आंदोलन पर नकारात्मक असर ना पड़े।

बता दें कि अशोक सिद्धार्थ भी बीएसपी और मायावती के लिए कोई अनजाने व्यक्ति नहीं हैं, बल्कि मायावती के वफादरों में अशोक सिद्धार्थ का नाम पहली पंक्ति में आता था। लेकिन गत 12 फरवरी 2025 को मायावती ने एक्स पर एक पोस्ट में लिखा था कि दक्षिणी राज्यों के प्रभारी डॉ अशोक सिद्धार्थ चेतावनी के बावजूद गुटबाजी में लगे थे। उन्हें पार्टी विरोधी गतिविधियों में लिप्त होने के कारण बीएसपी से निष्कासित कर दिया गया है। इस पर मायावती ने कहा कि मान्यवर कांशीराम के पद चिन्हों पर चलकर मैं भी एक ईमानदार व निष्ठावान शिष्या और उत्तराधिकारी के नाते अशोक सिद्धार्थ को आंदोलन के हित में पार्टी से बाहर कर दिया है। इसके बाद से उनके परिवार का अंतर्कलह और बढ़ गया।

दरअसल, अशोक सिद्धार्थ की बेटी प्रज्ञा सिद्धार्थ से ही आकाश की शादी 2023 में हुई थी। तब अशोक सिद्धार्थ को बीएसपी में मायावती के बाद दूसरी पंक्ति के अहम नेता के रूप में देखा जाता था। क्योंकि मायावती ने ही अशोक सिद्धार्थ को राज्यसभा भी भेजा था और दक्षिण भारत में पार्टी के विस्तार की ज़िम्मेदारी दी थी। मायावती से संबंधों में भरोसे के कारण ही मार्च 2023 में अशोक सिद्धार्थ की बेटी प्रज्ञा और आकाश आनंद की शादी हुई थी। कहा जाता है कि आकाश को दोबारा राष्ट्रीय समन्वयक बनाने में अशोक सिद्धार्थ की अहम भूमिका थी।

वहीं, बीएसपी में राज्यसभा सांसद रामजी गौतम और अशोक सिद्धार्थ के बीच काफी तनातनी की खबरें पहले से ही आ रही थीं। जिसके चलते ही अशोक सिद्धार्थ को राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, हरियाणा, महाराष्ट्र और दिल्ली विधानसभा चुनाव में बीएसपी कैंपेन का प्रभारी बनाया गया था लेकिन वहां भी पार्टी औंधे मुँह गिरी थी। ऐसे में सवाल है कि अब आकाश आनंद का क्या होगा, क्योंकि आकाश आनंद को दूसरी बार बीएसपी के राष्ट्रीय समन्वयक पद से हटाया गया है। ऐसे में अब सुलगता सवाल यही है कि क्या आकाश आनंद का बीएसपी में भविष्य खत्म हो गया है?

हालांकि आकाश की जगह उनके पिता को ज़िम्मेदारी देने के बाद ऐसा लग नहीं रहा है कि उनका भविष्य खत्म हो गया है। क्योंकि मायावती करीब 70 साल की हो गई हैं और पार्टी को एक नौजवान नेता चाहिए। ऐसे में आकाश आनंद को भले अभी नेपथ्य में रख रही हैं लेकिन आखिरकार पार्टी की कमान परिवार के हाथों में ही आएगी। लेकिन चिंता की बात यह है कि पार्टी पिछले डेढ़ दशक में काफी कमजोर हुई है। पार्टी का जनाधार तेजी से गिरा है और अभी इस बात के कोई संकेत नहीं दिख रहे हैं कि बीएसपी अपना खोया जनाधार वापस पा लेगी।

चार माह में ही लोकप्रिय विधायक बन चुके हैं शहर विधायक संजीव शर्मा

ललित कुमार

गाजियाबाद के विधायक संजीव शर्मा निःसंदेह इस समय जनपद के सबसे ज्यादा लाडले व लोकप्रिय जनप्रतिनिधियों में शुमार हैं। चंद माह में ही उन्होंने एक जनप्रतिनिधि के रुप में शहरवासियों के दिलों में सकारात्मक छवि की जगह बना ली है। विधायक बनते ही उन्होंने विजयनगर क्षेत्र की चांदमारी में भारतीय सेना की सैंकडों एकड़ जमीन पर हजारों झुग्गियों को हटवाकर इस सरकारी जमीन को कब्जा मुक्त करवाकर उन्होंने ये ऐसा काम कराया, जो पिछले चार दशक में कोई जनप्रतिनिधि नहीं करवा पाया था। एक विधायक के रुप में अपने पहले ही इस काम से गाजियाबाद शहर विधायक संजीव शर्मा शहर के साथ-साथ पूरे जनपद की जनता के दिलों में अपनी विशेष छवि व जगह बनने में कामयाब रहे।

गाजियाबाद के शहर विधायक संजीव शर्मा विस उपचुनाव-2024 में भाजपा से विधायक चुने गये थे। उन्हें विधायक बने करीब चार माह ही हुए हैं लेकिन अपने सौम्य व्यवहार व चुनाव के दौरान जनता से किये प्रमुख वादे पूरे कराने में उन्होंने जो गंभीरता दिखायी है, उससे दूसरे दलों के समर्थक नागरिकों सहित सभी शहरवासी उनके मुराद हो गये हैं। युवा होने के साथ-साथ संजीव शर्मा में गाजियाबादवासियों की समस्याओं का निस्तारण दिखाने और शहर के विकास में लीक से हटकर जो रुचि दिखायी है, वह काबिले तारीफ है। इतना ही नहीं शहर विधायक संजीव शर्मा की दूसरे किसी भी जनप्रतिनिधि के मुकाबले सांसद अतुल गर्ग के साथ बहुत ही बेहतर समन्वय है।

यह कहना गलत न होगा कि गाजियाबाद सांसद अतुल गर्ग व शहर विधायक संजीव शर्मा की जबरदस्त राजनीतिक जुगलबंदी के चलते दोनों प्रतिनिधि खासे चर्चा में रहते हैं। अतुल गर्ग के सांसद बनने के बाद उनके विधायक पद से इस्तीफा से रिक्त हुई सीट पर संजीव शर्मा को टिकट दिलाने से लेकर उन्हें उपचुनाव में भारी जीत दिलाने तक अतुल गर्ग ने संजीव शर्मा के लिए जो मेहनत व सहयोग किया, उसका संजीव शर्मा को बखूबी अहसास है और उसकी हक अदायगी भी कर रहे हैं। यही वजह है कि संजीव शर्मा हर काम में ऑफ दॉ रिकॉर्ड हर राजनीतिक कदम पर सांसद अतुल गर्ग का मार्गदर्शन, सलाह व सहयोग ले रहे हैं। इससे इन दोनो ही जनप्रतिनिधियों को जनपद में विशेष छवि बनने

के साथ ही इनकी लोकप्रियता के ग्राफ में भी निरंतर इजाफा होता जा रहा है।

विधायक चुने जाने के बाद भी फिलहाल संजीव शर्मा गाजियाबाद भाजपा महानगर अध्यक्ष पद की भी संभाल रहे हैं, यह दायित्व उन पर नये महानगर अध्यक्ष घोषित होने तक रहेगा। इसमें सबसे अच्छी बात यह है कि शहरवासियों ने बहुत जल्द ही उन्हे विधायक की छवि में स्वीकार कर लिया, जबकि भाजपा संगठन मे किसी पद पर आसीन रहने वाले नेता को दूसरे ओहदा मिलने पर अपनी पहली पद की छवि को दूर करने में लंबा समय लग जाता है, लेकिन संजीव शर्मा को शहरवासी व भाजपा कार्यकर्ता पार्टी के महानगराध्यक्ष नहीं, बल्कि विधायक के रुप में ही सम्मान देकर संबोधित करते हैं।

कॉमर्स स्नातक संजीव शर्मा पेशे से सीए हैं। वे मूल रूप से पिलखुवा (हापुड़) के रहने वाले हैं, लेकिन पिछले 20 साल से शालीमार गार्डन में रह रहे हैं। कुछ माह पहले उन्होंने विजयनगर क्षेत्र में अपना आशियाना बनाया है, हांलाकि वे अभी भी हिंडन पार में ही रहते हैं। यदि राजनीतिक करियर की बात करें उन्होने सपा कार्यकर्ता के रुप में राजनीति में प्रवेश किया था। वर्ष 2007 में समाजवादी पार्टी को छोड़कर भाजपा में शामिल हुए थे और तब से आज तक भाजपा के समर्पित कार्यकर्ता बने हुए हैं। खास बात यह है कि संजीव शर्मा को पार्टी के भाजपा पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष मुरली मनोहर जोशी ने पार्टी की सदस्यता दिलाई

थी। संजीव शर्मा ने गाजियाबाद महानगर में संगठन को मजबूत करने में अहम भूमिका निभाई थी।

भाजपा में शामिल होने पर संजीव शर्मा को पार्टी ने बड़ी जिम्मेदारी दी गई। उन्होंने भारतीय जनता युवा मोर्चा के महानगर अध्यक्ष पद पर तीन वर्ष तक काम किया। इस दौरान उन्होंने पार्टी को मजबूत करने के लिए युवाओं को पार्टी से जोड़ा। भाजपा ने उनके काम से खुश होकर उन्हें सूचना एवं रोजगार प्रकोष्ठ का प्रदेश संयोजक बनाया। साल 2013 में उन्हें भारतीय जनता पार्टी का महानगर महामंत्री बनाया। इस दौरान उन्होंने प्रचार-प्रसार विभाग के क्षेत्रीय संयोजक का कार्यभार संभाला। वर्ष 2019 में भाजपा के महानगर अध्यक्ष के रूप में उनको जिम्मेदारी सौंपी गई। संजीव के महानगर अध्यक्ष बनने के बाद 2022 के विधानसभा चुनाव में गाजियाबाद महानगर के अंतर्गत आने वाली गाजियाबाद शहर, साहिबाबाद और मुरादनगर विधानसभा क्षेत्र में तीनों विधायकों ने भारी जीत हासिल की। इसके साथ ही उनके महानगर अध्यक्ष के कार्यकाल मे ही ब्लॉक प्रमुख के चुनाव में दोनों ब्लॉक प्रमुख को जीत मिली।

इसके बाद जिला पंचायत अध्यक्ष के पद पर भी भाजपा ने कब्जा जमाया। नगर निगम के चुनाव में पार्टी ने महापौर के साथ-साथ 67 पार्षदों के साथ रिकॉर्ड जीत हासिल की। इसके बाद वर्ष 2024 के लोकसभा चुनाव में गाजियाबाद से सांसद प्रत्याशी अतुल गर्ग ने जीत हासिल की। चुनाव में लगातार भाजपा प्रत्याशियों की जीत को लेकर संगठन को मजबूत करने में संजीव शर्मा की अहम भूमिका रही।

संजीव शर्मा की पार्टी के प्रति समर्पण, निष्ठा व योगदान को देखकर ही कुछ माह पहले हुए विस उपचुनाव में तमाम दिग्गजों नेताओं के आवेदनों को खारिज करके भाजपा शीर्ष नेतृत्व ने उन्हें टिकट दिया गया और पार्टी नेताओ की कसौटी पर खरे उतरते हुए वे आज गाजियाबाद शहर के माननीय विधायक हैं।

जनहितों के प्रति गंभीर हैं ऊर्जा राज्यमंत्री डॉ. सोमेन्द्र तोमर

मेरठ के रहने वाले ऊर्जा राज्यमंत्री डॉ. सोमेन्द्र तोमर छात्र राजनीति शुरू करने के समय से ही जन समस्याओं को लेकर गंभीर रहे हैं। वर्तमान में योगी सरकार-02 में ऊर्जा राज्यमंत्री बनने से पहले भी एक कार्यकाल में विधायक रहे हैं और तब भी उन्होंने अपने विधानसभा क्षेत्र की समस्याओं के समाधान कराने के लिए पूरी संजीदगी व गंभीरता दिखाते हुए जनता को त्वरित राहत दिलाने का काम किया। वैसे भी अपने सौम्य व सादगी भरे व्यवहार व मधुर भाषा शैली से वे आम जनता के चहेते नेता हैं।

इस समय शहरी क्षेत्र के साथ-साथ ग्रामीण

ललित कुमार

इलाके के लोगों को भी बिजली संबंधी कई तरह की समस्याओं से दो-चार होना पड़ता है। जब लोग अपनी समस्याओं को लेकर उनके पास पहुंचते हैं, तो वे यथाशीघ्र लोगों को राहत दिलवाने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं।

डॉ सोमेन्द्र तोमर एक युवा नेता हैं और अल्प समय में ही उन्होंने जो लोकप्रियता हासिल करके अपनी जो जनप्रिय नेता की पहचान बनायी है, वह वाकई काबिले तारीफ है। उनका पार्टी कार्यकताओं, नेताओं से लेकर आम जनता तक से जो शालीनता भरा व्यवहार होता है, वही उन्हें अन्य राजनेताओं से अलग महत्व दिलाता है। वे उच्च शिक्षित है, जिससे उनके व्यवहार में गंभीरता व मसले को समझने व उनके हल कराने की शैली अलग ही है। वे हर मामले में उसकी प्रवृत्ति के अनुरुप उसके हल के लिए पूरी संजीदगी से कार्य करते हैं।

योगी कैबिनेट में भी इनकी गिनती मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नजदीकी व भरोसेमंद मंत्रियों में से एक होने के रुप में की जाती है।

उन्होंने अपने विशिष्ट कार्यशैली व व्यवहारिक सोच से अपना अलग ही जलवा कायम कर रखा है। बिजली विभाग के अधिकारियों में उनका अपना अलग ही रुतबा है।

ऊर्जा राज्यमंत्री डॉ. सोमेन्द्र तोमर की शिक्षा, शुरूआती राजनीति व पारिवारिक पृष्ठभूमि की बात करें तो उन्होंने विद्यार्थी जीवन में सन-1999 में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के साथ काम करना शुरू किया। वे 2004 तक इससे जुड़े रहे। इसके बाद सोमेंद्र तोमर ने एबीवीपी के तहत 2003 में छात्र संघ के चुनाव में जीत हासिल की। उन्होंने वर्ष 1995 में यूपी बोर्ड से हाई स्कूल और 1997 में 12वीं की परीक्षा पास की। आगे की पढ़ाई जारी रखते हुए वर्ष 2000 में उन्होंने सीसीएस यूनिवर्सिटी. मेरठ से बीएससी औप 2002 में इसी विश्वविद्यालय से एमएससी की पढ़ाई को पूरा किया।

इसके बाद सोमेंद्र तोमर ने अपनी पढ़ाई को जारी रखते हुए 2003 में सीसीएसयू यूनिवर्सिटी से एम.फिल करने के बाद चौधरी चरण सिंह यूनिवर्सिटी, मेरठ से ही पीएचडी की डिग्री हासिल की।

योगी सरकार - 02 में उत्तर प्रदेश सरकार में ऊर्जा राज्यमंत्री बनाये जाने से पहले डॉ. सोमेंद्र तोमर हरियाणा विधानसभा चुनाव में सह-प्रभारी के रूप में भी काम कर चुके थे। सबसे पहले

उन्होंने एबीवीपी के साथ काम किया। डॉ. सोमेंद्र तोमर एमआईटी द्वारा भारतीय छात्र संसद के 8वें वार्षिक सम्मेलन में आदर्श युवा विधायी पुरस्कार से सम्मानित किये जा चुके हैं।

वर्ष 2017 के विधानसभा चुनाव में सोमेंद्र तोमर ने दक्षिण मेरठ सीट से बसपा के हाजी मोहम्मद याकूब को 35395 वोटों से हराया था, जबकि वे 2022 के विधान सभा चुनाव में इसी विधानसभा सीट पर उन्होंने सपा प्रत्याशी आदिल चौधरी को हराकर लगातार दूसरी बार विधायक बने। योगी सरकार -02 में उनके पार्टी के हित में किये कार्यो व योगदान को देखते हुए उन्हें मंत्री मंडल में शामिल किया गया था।

योगी सरकार में ऊर्जा राज्यमंत्री डॉ. सोमेंद्र तोमर किसानों, ग्रामीणों व आम विद्युत उपभोक्ताओं को हितों को सर्वोपरि मानते हैं और बिजली की अधिकतम आपूर्ति व विद्युत संस्थानों के उच्चीकृत कराने की परियोजनाओं को समय पर पूरा कराने ही उनकी प्राथमिकता है। वे अपने स्तर से विभागीय अधिकारियों को सभी सरकारी परियोजनाओं को लागू करने व समय पर पूरा करने के लिए प्रोत्साहित करके शासन स्तर से अपेक्षित सहयोग करते हैं, वहीं आम विद्युत उपभोक्तों से हितों को सर्वोपरि मानते हुए उनकी समस्याओं को यथाशीघ्र निराकरण कराने में विश्वास रखते हैं। इस तरह की व्यवहारिक सोच के चलते ही वे दूसरे जनप्रतिनिधियों के मुकाबले कहीं अधिक लोकप्रिय व चहेते मंत्री हैं।

महिला हितों के लिए बेहद गंभीर हैं राज्य महिला आयोग की सदस्य मीनाक्षी भराला

डॉ. विजय अरोड़ा

मीनाक्षी भराला ने संबंधित जेल अधिकारियों से कहा कि जेल में बंद पुरुषों के लिए जिस तरह से भैया दूज व रक्षा बंधन पर विशेष सुविधाएं मुहैया करायी जाती है, उसी तरह महिला बंदियों को भी करवा चौथ मानने के लिए उनके पतियों को जेल में उनसे मिलने आने संबंधी विशेष सुविधा दी जानी चाहिए।

राज्य महिला आयोग की सदस्य मीनाक्षी भराला अपने संवैधानिक पद के मिले दायित्वों व स्वयं महिला होने के नाते महिलाओं को समस्याओं के लेकर संवेदनशील हैं। मीनाक्षी भराला ने गाजियाबाद जिला जेल का दौरा करने के दौरान वहां महिला बंदियों से बात करके उनकी समस्याओं को बारे में जानकारी ली। इसके बाद उन्होंने संबंधित जेल अधिकारियों से कहा कि जेल में बंद पुरुषों के लिए जिस तरह से भैया दूज व रक्षा बंधन पर विशेष सुविधाएं मुहैया करायी जाती है, उसी तरह महिला बंदियों को भी करवा चौथ मानने के लिए उनके पतियों को जेल में उनसे मिलने आने संबंधी विशेष सुविधा दी जानी चाहिए। संबंधित अधिकारियों को इस संबंध में जेल नियमों में लचीलापन लाना होगा। इस मांग को लेकर वे प्रदेश भर में चर्चा में आ गई हैं। बता दें कि राज्य महिला

आयोग की सदस्य मीनाक्षी भराला आयोग के निर्देश पर माह में एक बार गाजियाबाद आकर जनसुनवाई करती हैं और जो भी महिलाएं अपनी समस्या लेकर उनके पास पहुंचती हैं, उसे वे यथाशीघ्र निस्तारित कराने का प्रयास करती हैं। साथ ही महिला शिक्षा व जेलों में महिला बंदियों को जेल नियमों के मुताबिक उन्हें अधिकतम सुविधाएं दिलाने का प्रयास करती हैं। उनका मानना है कि जाने अनजाने में हुए महिलाओं से जो भी अपराध हुए हैं, वे पश्चाताप करके जब वे सलाखों से बाहर आये तो एक बेहतर व उत्साहजनक जीवन यापन करें।

महिला आयोग की सदस्य मीनाक्षी भराला जिला पंचायत सदस्य भी रह चुकी हैं। इससे वे वर्तमान सामाजिक व्यवस्था में महिलाओं के साथ आने वाले समस्याओं से भली भांति परिचित हैं। उनके सामने आने वाली महिला जनसुनवाई के दौरान आने वाले अधिकांश मामले घरेलू हिंसा, प्रॉपर्टी विवाद, शादी, दहेज आदि के होते हैं। दरअसल ये अपराध कम पारिवारिक हिंसा ज्यादा होती है। कुल 21 प्रकरण आए जिनके नियमानुसार निस्तारण हेतु संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया गया। जनसुनवाई में उनका यही प्रयास होता है कि महिलाओं को न्याय दिलाने के साथ-साथ उन्हें उनके अधिकारों के प्रति भी उन्हें जागरूक किया जाना भी बहुत आवश्यक है। मीनाक्षी भराला अपने स्तर से महिलाओं से संबंधित सभी जन कल्याणकारी योजनाओं का अधिकतम लाभ दिये जाने की कोशिश करती हैं। पिछले दिनों राज्य महिला आयोग की सदस्य मीनाक्षी भराला गाजियाबाद आयीं थी, तब उन्होंने जन सुनवाई के बाद आंगनवाड़ी केंद्र का निरीक्षण किया, जहां उन्होंने महिलाओं को अपने हाथों से पुष्टाहार वितरित किया। इसके बाद वे डासना स्थित जिला कारागर भी गईं, जहां उन्होंने महिला बंदियों से मुलाकात की। कुछ महिला बंदियों के साथ उनके साथ छोटे बच्चों को देखकर उन्होंने जेल अधिकारियों से बच्चों को जेल नियमों के मुताबिक सभी सुविधा मुहैया कराने का अनुरोध किया था। इसके साथ ही महिला बंदियों को करवा चौथ मानने के लिए उनके पतियों को जेल में उनसे मिलने आने संबंधी विशेष सुविधा दिये जाने की वकालत की थी। इस पर इस सुझाव को जेल अधिकारियों ने अपने उच्च अधिकारियों को भेजना का आश्वासन दिया था।

मीनाक्षी भराला को महिला आयोग की सदस्य बने अभी करीब छह माह की हुए हैं, लेकिन इस अवधि में उन्होंने महिलाओं के हितों को लेकर जो आवाज बुलंद की है और उनके समस्याओं को हल कराने में जो निजी रुचि दिखायी है, उससे पीड़ित महिलाओं को काफी मनोबल बढ़ा है। महिला आयोग के माध्यम से उनमें अपनी समस्याओं को निदान व अन्य मामलों में राहत की उम्मीद जागी है। निश्चय ही यह उनकी सकारात्मक सोच व व्यवहारिक कार्यशैली का नतीजा है कि अब जनसुनवाई में आने वाले प्रकरणों को निपटाने के लिए अधिकारियों भी गंभीरता से काम करने लगे हैं। महिलाओं को उनकी परेशानियों को हल कराने में मीनाक्षी भराला की जो पहल है, वह वाकई शानदार प्रशंसनीय है।

औरंगजेब की कब्र पर बढ़ता विवाद

पिछले कुछ अरसे से महाराष्ट्र के लोग भी गुस्से में हैं। सबसे पहले उन्होंने मांग की कि अहमदनगर, जहां औरंगजेब मरा था, का नाम अहिल्या बाई होल्कर के नाम पर अहिल्यानगर किया जाए। सरकार ने लंबे संघर्षों के बाद यह मांग पूरी कर दी...

एन के शर्मा

शैतानी रूहों के बारे में कहा जाता है कि वे अपनी कब्र से बार-बार बाहर निकलती रहती हैं। यत्नपूर्वक इन शैतानी रूहों को लोग कब्र में दबाते हैं, लेकिन कुछ साल बाद वे फिर बाहर आकर अपना शैतानी खेल शुरू कर देती हैं। मुगल खानदान के बादशाह औरंगजेब के साथ भी यही हो रहा है। उसने जिंदा रहते हुए भी लोगों पर अमानुषिक अत्याचार किए और मरने के बाद भी उसका यह खेल जारी है। सबसे पहले, औरंगजेब नाम का यह शख्स कौन था? इसका ताल्लुक मध्य एशिया से है और यह वहां के तुर्क समाज से ताल्लुक रखता था। यह बाबर के खानदान का था। बाबर के खानदान ने हिंदुस्तान पर हमला करके यहां अपना राज स्थापित किया था। इतिहास में इसे मुगल खानदान के नाम से जाना जाता है। बाबर के बाद उसका बेटा हुमायूं, उसके बाद अकबर, जहांगीर, शाहजहां और उसके बाद औरंगजेब ने सत्ता संभाली थी। लेकिन आगे बढ़ने से पहले यह जान लेना भी जरूरी है कि जब मुगल खानदान ने भारत के बड़े हिस्से पर कब्जा किया, तब भी यहां मध्य एशिया के सुलतानों का ही राज था। सुलतानों का यह राज 1100-1200 ईस्वी सन् के आसपास शुरू हो गया था। बाबर ने इब्राहिम लोधी को परास्त करके उत्तरी भारत के बड़े हिस्से पर कब्जा जमाया था। किस्सा कोताह यह कि मुगल अपनी सल्तनत को पूरे हिंदुस्तान में फैलाने की कोशिश कर रहे थे। लेकिन हिंदुस्तान के लोग उनको खदेड़ने की कोशिश भी कर रहे थे। वैसे गहराई से देखा जाए तो मुगलों के इन हमलों को सबसे पहली चुनौती सप्तसिंधु में ही गुरु नानक देव जी ने दी थी। गुरु नानक देव जी द्वारा रचित बाबर वाणी इसकी गवाही देती है। नानक देव जी इस हमले को 'जम (यमराज) कर मुगल चढ़ाईया' कहते हैं और इसको 'हिंदुस्तान डराइया' भी कहते हैं।

जाहिर है कि सप्त सिंधु/पंजाब ने तो इस मुगल सत्ता को शुरू से ही चुनौती देनी शुरू कर दी थी। लेकिन मुगल सत्ता को दूसरी सबसे बड़ी चुनौती दक्षिण के पठारों में मराठों से मिली। शिवाजी मराठा के नेतृत्व में मराठों ने बहुत बड़े क्षेत्र को मुगलों से

आजाद करवा कर 1674 में हिंदवी साम्राज्य यानी हिंदुस्तानियों के अपने राज की स्थापना की। इधर सप्त सिंधु/पंजाब क्षेत्र में दशगुरु परंपरा, जिसका पौधा गुरु नानक देव जी ने लगाया था, का प्रभाव बढ़ता जा रहा था। अफगानिस्तान से लेकर दिल्ली तक नया उत्साह संचार हो रहा था। इसका प्रभाव इतना बढ़ा कि पश्चिमोत्तर भारत के लोगों ने पांचवें गुरु श्री अर्जुन देव जी को 'सच्चा पातशाह' कहना शुरू कर दिया। यानी मुगल बादशाह तो झूठा है, वह हिंदुस्तान का बादशाह नहीं है। हमारा सच्चा पातशाह ही हिंदुस्तान का बादशाह है। गुरु अर्जुन देव जी ने जन आस्था की रक्षा के लिए मुगलों का सामना किया, उनके आगे झुकने से इंकार कर दिया। मुगल बादशाह जहांगीर की दारुण यातनाओं का सामना करते हुए बलिदान दे दिया। लेकिन यह लड़ाई यहीं खत्म नहीं हुई। मुगल सत्ता पर औरंगजेब बैठा। लेकिन गद्दी पर कब्जा करने से पहले उसने अपने सभी भाइयों को मरवा दिया। 'मरवा दिया' कहने मात्र से शायद स्थिति स्पष्ट नहीं हो पाएगी। अपने बाप शाहजहां को कैद में डालने के बाद, औरंगजेब ने अपने भाई दारा शिकोह का सिर काट कर उसे थाल में सजा कर, शाहजहां को तोहफे के रूप में पेश किया। दक्षिण के पठारों में 1674 में हिंदवी राज की स्थापना ने औरंगजेब को हिला दिया था।

इधर दशगुरु परंपरा के आंदोलन ने सप्त सिंधु/पंजाब क्षेत्र की हवा बदलनी शुरू कर दी थी। औरंगजेब के अत्याचार बढ़ते जा रहे थे, वह पूरे हिंदुस्तान को 'दारुल इस्लाम' बना देना चाहता था। लेकिन दक्षिण में नींव हिल गई थी और इधर पंजाब विरोध में आ खड़ा हुआ था। इसका नेतृत्व नवम गुरु श्री तेग बहादुर जी कर रहे थे। इतिहास ने औरंगजेब के अत्याचारों की पराकाष्ठा भी देखी और श्री गुरु तेग बहादुर और उनके तीन साथियों के प्रतिरोध की क्षमता भी देखी। मतिदास जी, सती दास जी, भाई दियाला जी के किस निर्दयता से प्राण लिए गए, इसे कैसे भूला जा सकता है? गुरु तेग बहादुर जी का सिर तलवार के वार से धड़ से अलग कर दिया गया। उन्होंने बलिदान दे दिया, लेकिन इस्लाम स्वीकार नहीं किया। यह दु:खांत 1675 का है। 1680 में शिवाजी मराठा का देहावसान हो गया।

इस नए साम्राज्य की बागडोर उनके सुपुत्र संभा जी महाराज ने संभाली। वह अपने राज्य को मजबूत करने के प्रयास में लगे थे। औरंगजेब चाहता था इस हिंद स्वराज का विस्तार होने से पहले-पहले किसी भी तरह इस पर कब्जा किया जाए। आरपार की लड़ाई थी। लेकिन 1689 में छत्रपति संभाजी महाराज पकड़े गए। अब 'टोपियां बना कर घर का खर्चा चलाने वाले औरंगजेब' का असली रूप सामने आया। वैसे उसका एक रूप पूरा हिंदुस्तान पहले दिल्ली के चांदनी चौक में भी देख चुका था। इस बार फिर औरंगजेब ने छत्रपति संभाजी महाराज के साथ क्रूरता की सारी हदें पार कर दी थीं। औरंगजेब की एक ही मांग थी- इस्लाम मजहब को स्वीकार करो। वह गुरु तेग बहादुर जी से भी यही मांग कर रहा था। उसको लगता था गुरु जी इस्लाम में आ जाएंगे तो शेष भारतीयों को मतांतरित करना आसान हो जाएगा। वह अब भी यही मान रहा था कि यदि शिवाजी महाराज का बेटा मुसलमान हो जाएगा तो दक्षिण के पठारों में तो इस्लाम का झंडा फहराने ही लगेगा। लेकिन संभाजी दृढ़ थे।

औरंगजेब ने उसके नाखून निकलवा दिए, आंखें फोड़ दीं और अंत में उनकी जुबान काट दी। अंत में औरंगजेब ने संभाजी का सिर कटवा दिया। लेकिन औरंगजेब के भीतर का पशु इतने पर भी शांत नहीं हुआ। उसने संभाजी के शरीर के कई टुकड़े करवा कर नदी में फिंकवा दिए। औरंगजेब इसी को अपनी जीत समझ रहा था। लेकिन भारत भी अंगड़ाई ले रहा था। उसकी एक आहट सप्त सिंधु में सुनाई दे रही थी, जब दशम गुरु गोबिंद सिंह जी ने पुआध क्षेत्र में खालसा पंथ की स्थापना करके भारतीय इतिहास में एक नया अध्याय रच दिया। चमकौर की लड़ाई के बाद गुरु गोविंद सिंह जी ने औरंगजेब को जफरनामा यानी जीत की चि्ी लिखी। इस चि्ी ने औरंगजेब का काला चि्ा इतिहास में सुरक्षित कर दिया। 1707 में औरंगजेब अहमदनगर में सुपुर्दे खाक हो गया। उधर खालसा पंथ ने जम्मू कश्मीर के बंदा बहादुर के नेतृत्व में पश्चिमोत्तर भारत में मुगल साम्राज्य की नींव हिला दी। औरंगजेब की लाश पड़ी थी। उसकी वसीयत पढ़ी गई। उसमें लिखा था कि मेरी मौत जहां भी हो, लेकिन मुझे खुल्दाबाद में ही दफनाया जाए जहां मेरे गुरु सैयद जैनुद्दीन शिराजी दफन हैं।

इसलिए औरंगजेब के बेटे ने उसकी कब्र अहमदनगर में न बना कर खुल्दाबाद में बनवाई। वह कब्र अब भी मौजूद है और भारत सरकार उसकी सार संभाल करती है। अब कब्र की बात। पंजाब में होला मोहल्ला के दिन आनंदपुर साहिब में खालसा पंथ के प्रतिनिधि निहंग समाज के निहंग बड़ी संख्या में एकत्रित होते हैं। वे दूर महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले के खुल्दाबाद में औरंगजेब की कब्र पर तो जा नहीं सकते। इसलिए वे आनंदपुर में ही औरंगजेब की प्रतीकात्मक कब्र बनाते हैं और जूतों से उसकी निरंतर पिटाई करते हैं। लेकिन पिछले कुछ अरसे से महाराष्ट्र के लोग भी गुस्से में हैं। सबसे पहले उन्होंने मांग की कि अहमदनगर, जहां औरंगजेब मरा था, का नाम अहिल्या बाई होल्कर के नाम पर अहिल्यानगर किया जाए। सरकार ने लंबे संघर्षों के बाद यह मांग पूरी कर दी। तब दूसरी मांग उठी। जिस औरंगजेब ने संभाजी महाराज को इतनी निर्दयता से मारा, उस औरंगजेब के नाम से भारत के किसी शहर का नाम क्यों रखा जाए? सरकार ने औरंगाबाद का नाम भी बदलकर संभाजी नगर कर दिया है। अब महाराष्ट्र औरंगजेब की कब्र हटाने की मांग पर अड़ा है।

आखिर नागपुर जैसी सांप्रदायिक हिंसा की घटनाएं कब और कैसे थमेंगी?

बता दें कि मुगल बादशाह औरंगजेब की कब्र को खुल्ताबाद से हटाने की मांग को लेकर सोमवार देर रात मध्य नागपुर में हिंसक झड़पें हुईं। इसमें, दर्जनों लोग घायल हो गए। भीड़ ने दो बुलडोजर और पुलिस वैन सहित 40 वाहनों को आग के हवाले कर दिया।

अवकाश शर्मा

लीजिए, एक और साम्प्रदायिक दंगा हो गया। इस बार आरएसएस मुख्यालय के लिए मशहूर नागपुर शहर ही इन दंगों की आग से धधक उठा। टीवी पर जो आग की उठती लपटें दिखीं, घायल लोग व पुलिस वाले दिखे, क्षतिग्रस्त व जले वाहन नजर आए, इसके गम्भीर मायने हैं। सवाल है कि क्या यह आरएसएस और उसके अनुसांगिक संगठनों को देश-दुनिया में बदनाम करने की सियासी साजिश है? क्या हमारे देश के समुदाय विशेष को आइएसआइ लगातार भड़का रही है जिससे वो निरंतर हिंसक होते जा रहे हैं और पाकिस्तान-बंगलादेश से सहानुभूति रखते हुए उन्हीं जैसा व्यवहार करने लगे हैं?

सुलगता हुआ सवाल यह भी है कि क्या दुनियावी मंचों पर लगातार मजबूत हो रहे भारत को पुनः कमजोर करने की साजिश के तहत अंतरराष्ट्रीय ताकतों के इशारे पर यह सबकुछ हो रहा है, जिसके तार हमारे राजनेताओं तक से जुड़े हुए हैं क्योंकि देश की यही बेलगाम ताकत है जो अधिकांश अनैतिक करतूतों की जड़ समझी जा रही है! इसी के साथ यह सवाल भी पुनः प्रासंगिक हो गया कि आखिर ब्रेक के बाद होने वाली नागपुर जैसी सांप्रदायिक हिंसा की घटनाएं कैसे थमेंगी? आखिर इन जैसी घटनाओं को रोकने में प्रथमदृष्टया हमारा पुलिस प्रशासन असहाय क्यों प्रतीत होता है और फिर घटना के बाद सक्रिय होकर स्थिति को काबू में करता है?

सवाल यह भी है कि आखिर क्यों पुलिस बल की तमाम रणनीति फेल हो जाती है जिसकी कीमत इसके अधिकारियों-जवानों के साथ-साथ

उन मेहनतकश लोगों को भी चुकानी पड़ती है जो अपने कार्यवश सड़क पर होते हैं या प्रभावित क्षेत्र से गुजरते हैं? प्रश्न यह भी है कि समय रहते ही पत्थर, ईंट-रोड़े छतों पर जमा होने की सूचना पुलिस को क्यों नहीं मिल पाती है? क्या हमारा खुफिया तंत्र बार बार विफल हो रहा है या उसकी सूचना पर सही प्रशासनिक फैसले नहीं हो पाते हैं? यह सब कुछ प्रशासन को बताना चाहिए, क्योंकि ब्रेक के बाद देश में होने वाली सांप्रदायिक/जातीय/क्षेत्रीय हिंसा व आगजनी की खबरें हर किसी को परेशान करती हैं।

लिहाजा इस बारे में पुलिस जनजागृति कार्यक्रम करती रहे और घटना के पश्चात इतनी कड़ी कार्रवाई करे, ताकि फिर कहीं और किसी के सिर उठाने की नौबत ही नहीं आए। वहीं, सिविल प्रशासन, न्यायपालिका, मीडिया, सामाजिक संस्थाओं और सियासी दलों को भी पुलिस कार्रवाई का समर्थन करना चाहिए, क्योंकि विधि-व्यवस्था के मामले में समझौता करने का सीधा असर समाज और कारोबार दोनों पर पड़ेगा। इस मामले में बयानबाजी भी सधी होनी चाहिए, ताकि यह और नहीं भड़के। सवाल यह भी है कि क्या इस क्षेत्र में नागरिक-पुलिस समन्वय समिति नहीं थी या फिर वह भी विफल साबित हुई? सवाल बहुत हैं और जवाब सिर्फ यही कि चुस्त-दुरुस्त प्रशासन ही ऐसी घटनाओं को रोक सकता है, अन्यथा जन-धन की अप्रत्याशित क्षति होती रहेगी।

कहना न होगा कि नागपुर के महल क्षेत्र में दो समुदायों के बीच भड़काए गए दंगे पर कांग्रेस ने जिस तरह से भाजपा सरकार को जिम्मेदार ठहराया है, वह एक ओछी राजनीति का परिचायक है, क्योंकि ऐसा नहीं है कि कांग्रेस के शासनकाल में कथित शांतिप्रिय समुदाय ने दंगे नहीं भड़काए। ऐसे में कांग्रेस नेता पवन खेड़ा ने कानून-व्यवस्था बनाए रखने में सरकार की विफलता की जो आलोचना की है, वह उनकी दूषित सियासी मानसिकता का ही परिचायक है। ऐसी विकृत सियासी सोच के चलते ही साम्प्रदायिक दंगे लाइलाज बीमारी बनते जा रहे हैं।

जानकारों का कहना है कि सियासी विकृति, प्रशासनिक अकर्मण्यता, न्यायिक विवेकशून्यता और मीडिया से लेकर सोशल मीडिया तक में संपादकीय विवेक के अभाव का ही नतीजा है कि ब्रेक के बाद यत्र-तत्र दंगे भड़क जाते हैं,

जिसके बाद शहर में कर्फ्यू लगा दिया जाता है। इंटरनेट पर पाबंदी इस समस्या का समाधान नहीं है, बल्कि उकसाऊ तत्वों का विधि सम्मत तरीके से सफाया करके ही इस समस्या का सार्थक समाधान किया जा सकता है।

लोगों के मुताबिक, जिस तरह से नागपुर के महल इलाके में हिंसा भड़की, भीड़ का पथराव हुआ, भीड़ द्वारा 8 से 10 वाहनों में आग लगा दी गई और ऐसी ही घटनाएं सामने आई हैं, उससे प्रशासन के एक्टिव रहने पर ही सवाल उठता है, क्योंकि उपद्रवियों को देखते ही गोली मारने का आदेश न होना पुलिस को जान पर खेलने के लिए विवश करने जैसा है। इसके लिए संसद और सुप्रीम कोर्ट दोनों की अदूरदर्शी भूमिका भी सभ्य समाज के कठघरे में है, क्योंकि राष्ट्र को सुशासन देने की नैतिक जिम्मेदारी इन्हीं दोनों संस्थाओं की है। यदि एक समुचित कानून नहीं बनाने का दोषी है तो दूसरा ऐसे मामलों में स्वतः संज्ञान न लेकर किंकर्तव्यविमूढ़ बने रहने का जो मंचन करता है, वह अस्वीकार्य है।

हैरत की बात है कि नागपुर के महल इलाके में दो समुदायों के बीच भड़की हिंसा पर जो राजनीति शुरू हो गई है, उससे घटिया बात कुछ हो ही नहीं सकती! भले ही कांग्रेस ने इसके लिए भाजपा नीत सरकार को जिम्मेदार ठहराया है, लेकिन उसकी सरकारों ने क्या किया है, उसका अतीत कैसा रहा है, इस बारे में वह कभी नहीं सोचती। कांग्रेस ने जिस तरह से कानून-व्यवस्था बनाए रखने में विफलता का आरोप लगाया है, वह एकतरफा आरोप है। चूंकि कांग्रेस या इंडिया गठबंधन की सरकारें अपनी नीतियों से कथित शांतिप्रिय समुदाय को भड़काती रहतीं हैं, इसलिए ऐसी नौबत पैदा होना आम बात है।

भले ही कांग्रेस नेता ने सवाल उठाया है कि सांप्रदायिक सद्भाव के 300 साल के इतिहास वाले शहर में इस तरह की अशांति कैसे हो सकती है? लेकिन इसकी हकीकत उनसे ज्यादा कौन बयां कर सकता है। एक ओर उन्होंने कुछ राजनीतिक दलों पर अपने फायदे के लिए जानबूझकर तनाव भड़काने का आरोप लगाया, जबकि दूसरी तरफ सांप्रदायिक हिंसा रोकथाम विधेयक 2011 लाकर उनकी पार्टी ने किस तरह एकतरफा नियम बनवाए, वह हैरतअंगेज है। क्या वह अपनी पार्टी की करतूतें भूल चुके हैं?

उनका यह कहना कि महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री के गृहनगर महल में दंगा भड़क गया, एक अस्वीकार्य बयानबाजी है। क्योंकि वहां के हालात इस बात की चुगली कर रहे हैं कि यह एक सुनियोजित साजिश थी क्योंकि उपद्रवियों ने हिंदुओं को चुन चुन कर निशाना बनाया है। ऐसे आरोप टीवी व सोशल मीडिया पर दिखाई-सुनाई पड़ रहे हैं। इसलिए मुझे भी इसमें साजिश की बू आती है क्योंकि वाकई नागपुर का इतिहास 300 साल पुराना है और यहां पहले कभी कोई दंगा

नहीं हुआ। यह केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी और देवेंद्र फडणवीस जैसे सुलझे हुए नेताओं का गृह क्षेत्र भी है, इसलिए यहां शांति की गारंटी होनी चाहिए।क्योंकि यथा नेता तथा प्रजा वाली कहावत यहां सटीक बैठती थी, इस घटना से पूर्व तक। इसलिए हम उन जैसों से भी यह पूछना चाहते हैं कि आखिर ऐसी स्थिति क्यों पैदा हुई?

अब भले ही उन्होंने कहा कि बीजेपी केंद्र और राज्य दोनों जगहों पर सत्ता में है, लेकिन कभी कांग्रेस की भी तो सरकारें ऐसे ही केंद्र व राज्य दोनों जगहों में हुआ करती थीं, फिर भी दंगे भड़कते थे। वैसे में आज यदि विहिप और बजरंग दल ने औरंगजेब की कब्र हटाने की मांग को लेकर विरोध प्रदर्शन किया, तो सरकार ने कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए जो पर्याप्त इंतजाम किए थे, वो उपद्रवियों की जाहिल मानसिकता के चलते विफल रहे। जिससे नागपुर शहर के कोतवाली, गणेशपेठ, लकड़गंज, पचपावली, शांतिनगर, सक्करदरा, नंदनवन, इमामवाड़ा, यशोधरा नगर और कपिल नगर पुलिस थाना क्षेत्रों में कर्फ्यू लगाने की नौबत आई।

वहीं, कांग्रेस ने कुछ राजनीतिक दलों पर अपने हितों के लिए लोगों को भड़काने का जो आरोप लगाया और कहा कि एक खेल खेला जा रहा है और शहर के 300 साल पुराने इतिहास को मुद्दा बनाया जा रहा है। लिहाजा आपलोग इस खेल का शिकार न बनें। क्योंकि शांति बनाए रखना हमारे हित में है। कांग्रेस ने कहा कि कुछ राजनीतिक दल लोगों को भड़काते हैं और सोचते हैं कि इसमें उनका राजनीतिक हित है तो हमें ऐसी कुत्सित राजनीति से बचना चाहिए। क्योंकि हमारे लिए शांति महत्वपूर्ण है। बता दें कि मुगल बादशाह औरंगजेब की कब्र को खुल्ताबाद से हटाने की मांग को लेकर सोमवार देर रात मध्य नागपुर में हिंसक झड़पें हुईं। इसमें, दर्जनों लोग घायल हो गए। भीड़ ने दो बुलडोजर और पुलिस वैन सहित 40 वाहनों को आग के हवाले कर दिया। इस हिंसा में कम से कम 10 दंगा-रोधी कमांडो, दो वरिष्ठ पुलिस अधिकारी और दो दमकलकर्मी गंभीर रूप से घायल हो गए, जबकि एक कांस्टेबल की हालत गंभीर बनी हुई है।

वहीं, पुलिस ने बड़े पैमाने पर कार्रवाई करते हुए 50 दंगाइयों को गिरफ्तार किया। वहीं, गृह मंत्रालय ने इस हिंसा पर रिपोर्ट मांगी है। यह घटना प्रधानमंत्री मोदी के नागपुर दौरे से ठीक दो सप्ताह पहले हुई थी। दरअसल यह हिंसा तब भड़की जब यह अफवाह फैली कि एक विशेष समुदाय के प्रदर्शनकारियों ने आरएसएस मुख्यालय से बमुश्किल 2-3 किमी दूर महल गेट पर शिवाजी पुतला स्क्वायर के पास औरंगजेब के पुतले और एक धार्मिक चादर जलाई है।

यूँ तो भारत में सांप्रदायिक हिंसा की घटनाएं, विशेषकर धार्मिक त्योहारों और जुलूसों के दौरान, समय-समय पर होती रही हैं, जिनमें 1946 का नोआखली दंगा, 1989 का भागलपुर दंगा, 1992 का बाबरी मस्जिद विध्वंस, और हाल ही में मणिपुर और नूह में हुई हिंसा शामिल हैं। आजादी से अब तक की प्रमुख घटनाएं इस प्रकार है:- 1946 के नोआखली दंगा के तहत बंगाल में सांप्रदायिक हिंसा हुई, जिसमें बड़ी संख्या में लोगों की जान गई। वहीं, 1989 के भागलपुर सांप्रदायिक दंगे के बाद भी कई जगह दंगे हुए जिसने कांग्रेस की सियासी चूलें ऐसी हिलाई, जिससे आजतक वह उबर नहीं पाई है। वहीं, 1992 के विवादास्पद बाबरी मस्जिद विध्वंस के बाद अयोध्या सहित देश भर में सांप्रदायिक हिंसा भड़क गई।

जहां तक हाल की घटनाओं की बात है तोः मणिपुर और नूंह (हरियाणा) में सांप्रदायिक हिंसा हुई, जिससे कई लोगों की जान गई और संपत्ति का नुकसान हुआ। अन्य घटनाओं में 1921 का मोपला विद्रोह, 1947 का भारत विभाजन दंगा, और 1960 के दशक में पूर्वी भारत में हुई घटनाएं भी सांप्रदायिक हिंसा के उदाहरण हैं।

जहां तक सांप्रदायिक हिंसा के कारण की बात है तो धार्मिक आधार पर लोगों को अलग-अलग करना, जिससे समाज में तनाव पैदा होता है, इसका प्रमुख कारण है। वहीं, राजनीतिक लाभ के लिए धार्मिक विभाजन को बढ़ावा दिया जाता है जिससे ऐसी घटनाएं बढ़ती हैं। वहीं, सोशल मीडिया और मीडिया के माध्यम से नफरत और हिंसा को बढ़ावा देने से भी ऐसी लोमहर्षक घटनाएं घटती हैं। वहीं, आर्थिक असमानता भी सांप्रदायिक हिंसा का कारण बनती है, जबकि अशिक्षित समाज में लोगों को आसानी से भड़काया जाता है।

जहां तक सांप्रदायिक हिंसा के प्रभाव की बात है तो सांप्रदायिक हिंसा से समाज में दरारें पैदा होती हैं और लोग एक-दूसरे पर भरोसा करना बंद कर देते हैं। सांप्रदायिक हिंसा से लोगों की जान जाती है और संपत्ति का नुकसान होता है। सांप्रदायिक हिंसा से लोगों में डर और असुरक्षा की भावना पैदा होती है।

गडकरी की तरह बाकी नेता भी 'जात की बात करने वालों को लात कब मारेंगे' ?

जातिवाद का यह जहर, देश को अंदर से खोखला करता जा रहा है। लेकिन क्या इसके लिए सिर्फ देश के नेता ही जिम्मेदार है? बिल्कुल नहीं, जाति देखकर वोट करने वाले मतदाता भी इसके लिए उतने ही जिम्मेदार है।

कपिल चौहान

बेबाक अंदाज में अपनी बात कहने के लिए मशहूर केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने एक बार फिर से जातिवाद को लेकर बड़ा बयान दे दिया है। देश में जाति, धर्म और भाषा के नाम पर मचे राजनीतिक बवाल के बीच नितिन गडकरी ने अपने ताजा बयान से सबको आईना दिखाने की कोशिश की है।

केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने नागपुर स्थित 'सेंट्रल इंडिया ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस' में आयोजित दीक्षांत समारोह को संबोधित करते हुए एक बार फिर से जाति की बात करने वालों को कसके लात मारने की बात कही है। गडकरी ने जोर देते हुए कहा कि, ₹किसी भी व्यक्ति के साथ जाति, धर्म, भाषा या लिंग के आधार पर भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए।' उन्होंने आगे कहा, 'जो करेगा जात की बात, उसको कसके मारूंगा लात''।

इस देश की राजनीति की विडंबना देखिए कि, यहां अब शायद ही कोई ऐसा राजनीतिक दल बचा है जो चुनावी रणनीति बनाते समय जातिगत समीकरण को ध्यान में ना रखता हो। हालात इतने भयावह हो चुके हैं कि उम्मीदवारों को टिकट देते समय भी सबसे ज्यादा ख्याल क्षेत्र के जातिगत समीकरणों का ही रखा जाता है। यह हालत सिर्फ सांसदों या विधायकों के चुनाव में ही दिखाई नहीं देता है बल्कि वार्ड मेंबर से लेकर पंचायत चुनाव तक राजनीतिक दल जातीय समीकरण और गणित का ध्यान रखते हुए ही उम्मीदवार तय करते हैं।

राहुल गांधी, अखिलेश यादव और तेजस्वी यादव सहित अन्य कई विपक्षी दलों के नेता बार-बार जाति जनगणना का राग अलाप रहे हैं। जाति आधारित जनगणना कई राज्यों में राजनीति और चुनाव का बड़ा मुद्दा बन चुका है और आने वाले दिनों में कई राज्यों में इसी मसले पर विधानसभा का चुनाव भी होने जा रहा है। देश के राजनीतिक दलों ने जातिवाद का बीज इतने गहरे तक बो दिया है कि उम्मीदवारों की लिस्ट तो छोड़िए, अब पार्टी पदाधिकारियों की घोषणा करते समय भी उनकी जाति खासतौर से बताई जाने लगी है। देश के राजनीतिक दल बड़े ही गर्व से यह बताते नजर आते हैं कि उन्होंने किस जाति के कितने नेताओं को पार्टी की राष्ट्रीय टीम में जगह दी है।

ऐसे माहौल में नितिन गडकरी जैसे बड़े कद के नेता का बार-बार जातिवाद के खिलाफ बयान देना अपने आप में एक बड़ा और महत्वपूर्ण राजनीतिक संदेश माना जा सकता है। लेकिन यहां सबसे बड़ा सवाल तो यही उठ रहा है कि सड़कों के निर्माण के मामले में सदन के अंदर से लेकर बाहर तक नितिन गडकरी के कामकाज की तारीफ करने वाले केंद्रीय मंत्री, सांसद, मुख्यमंत्री, विधायक, एमएलसी, मेयर, पार्षद, मुखिया और अन्य जनप्रतिनिधि क्या गडकरी की सलाह मानेंगे? क्या इस देश के तमाम जनप्रतिनिधियों में इतनी हिम्मत है कि वे भी गडकरी की तरह जाति की बात करने वाले लोगों को कस के लात मारने की बात सार्वजनिक तौर पर खुले मंच से कह पाए? शायद नहीं, क्योंकि जब जाति का राग अलापने से सबको फायदा हो रहा है तो फिर बिल्ली के गले मे घंटी कौन बांधना चाहेगा?

जातिवाद का यह जहर, देश को अंदर से खोखला करता जा रहा है। लेकिन क्या इसके लिए सिर्फ देश के नेता ही जिम्मेदार है? बिल्कुल नहीं, जाति देखकर वोट करने वाले मतदाता भी इसके लिए उतने ही जिम्मेदार है। वास्तव में, जब तक देश की जनता जातिवाद से बाहर निकल कर जातियों की राजनीति करने वाले नेताओं और राजनीतिक दलों को सबक सिखाना शुरू नहीं करेगी , तब तक भारत की जनता को इस जहर से छुटकारा नहीं मिलने जा रहा है।

मोदी-ट्रंप की दोस्ती रंग लाएंगी

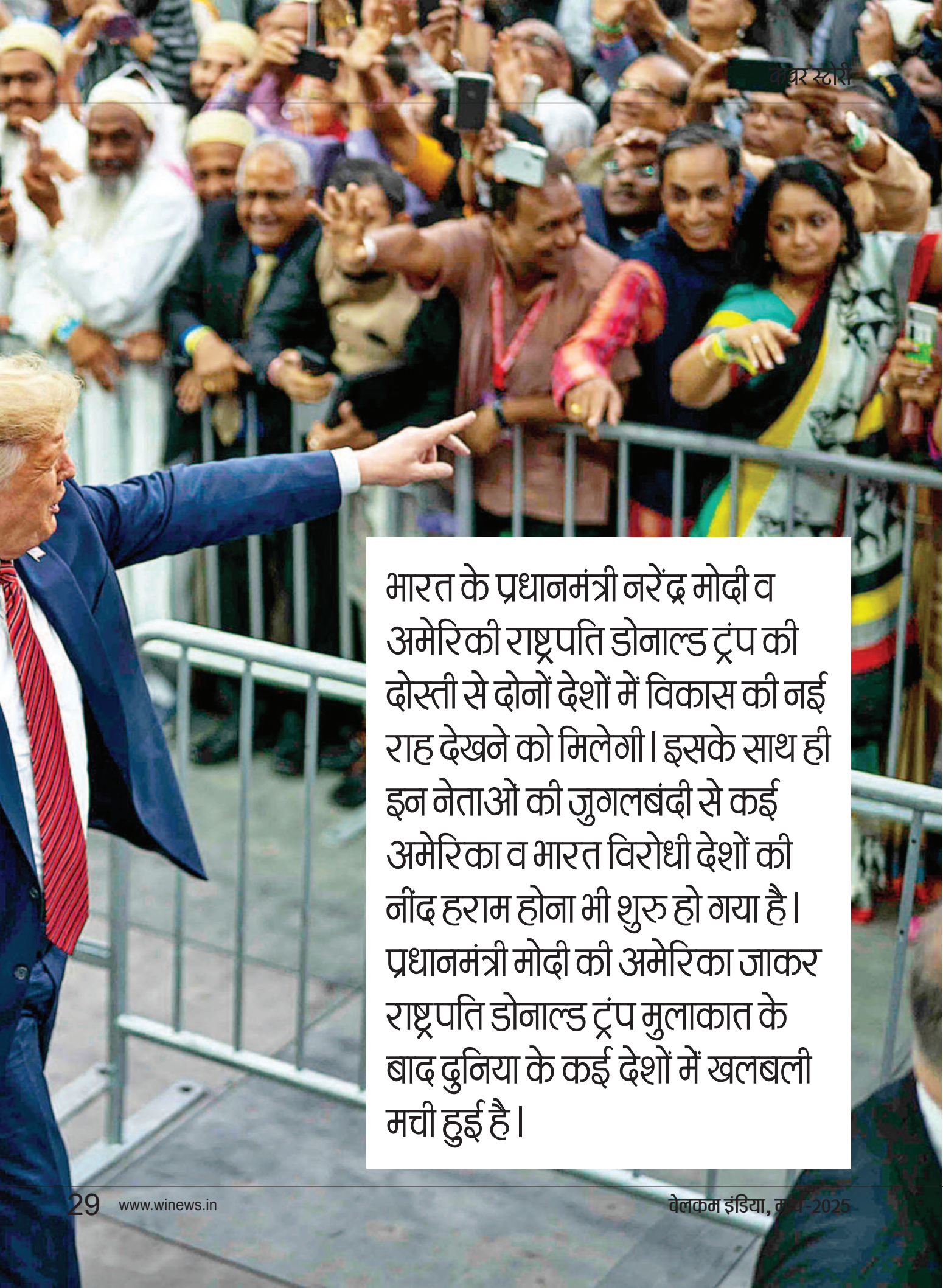

भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की दोस्ती से दोनों देशों में विकास की नई राह देखने को मिलेगी। इसके साथ ही इन नेताओं की जुगलबंदी से कई अमेरिका व भारत विरोधी देशों की नींद हराम होना भी शुरु हो गया है। प्रधानमंत्री मोदी की अमेरिका जाकर राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप मुलाकात के बाद दुनिया के कई देशों में खलबली मची हुई है।

दोनों देश दिखाएंगे विकास की नई राह

ललित कुमार

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी कीअमेरिका की दो दिवसीय यात्रा अनेक दृष्टियों से ऐतिहासिक, अविस्मरणीय एवं मील का पत्थर बनकर प्रस्तुत हुई है। यह निश्चित है कि मोदी के नेतृत्व में एक नई सभ्यता और एक नई संस्कृति गढ़ी जा रही है। व्हाइट हाउस में संपन्न प्रधानमंत्री मोदी और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की बातचीत कई मायनों में सकारात्मक एवं परिणामकारी रही। उसमें किसी तरह की तल्खी नजर नहीं आई, बल्कि मोदी-ट्रंप की दोस्ती ही नये विश्वास एवं संकल्प के साथ उभर कर सामने आयी है। यह निर्विवाद सत्य है कि अमेरिका हमेशा अपने कारोबारी हितों को ही प्राथमिकता देता है। इस मुलाकात में यही नजर आया कि ट्रंप दोनों देशों के व्यापार संतुलन का पलड़ा अमेरिका के पक्ष में करने को कटिबद्ध है। लेकिन मोदी ट्रंप की चतुराई को भी अपनी सादगी एवं सरलता से मात देते हुए भारत के हित में अनेक समझौते कर लिये हैं।

दरअसल, अमेरिका की नीतियां अमेरिका से शुरू होकर अमेरिका पर ही समाप्त हो जाती हैं। दूसरी बार सत्ता में आए ट्रंप ने जिस आक्रामक तरीके से कनाडा, मैक्सिको व चीन आदि पर टैरिफ लगाए हैं, वैसी आक्रामकता उन्होंने भारत के प्रति नहीं दिखायी। यह अमेरिका की भारत के प्रति एक विशेष दृष्टि मोदी के प्रभाव का ही परिणाम है।

ट्रंप ने मोदी को अपनी तुलना में बेहतर सख्त वार्ताकार बताया। दोनों नेताओं ने वर्ष 2030 तक द्विपक्षीय व्यापार को दोगुना करने तथा लाभप्रद व्यापार समझौते के लिये बातचीत करने का संकल्प भी जताया। भविष्य में व्यापार समझौता अमेरिका के पक्ष में न झुके, इसके लिये प्रधानमंत्री मोदी ने कूटनीतिक कौशल का इस्तेमाल किया। भारत को नया बनने के लिए, स्वर्णिम बनाने के लिए, अनूठा बनाने के लिए और उसे विश्व की एक बड़ी ताकत के रूप में उभारने के लिये मोदी के प्रयास अनूठे भी हैं और विलक्षण भी हैं। यहां उल्लेखनीय है कि मोदी-ट्रंप मुलाकात में रक्षा और सुरक्षा क्षेत्र में बातचीत सकारात्मक रही। दोनों देशों ने एक दस वर्षीय रक्षा समझौते पर हस्ताक्षर किए। जिसमें प्रमुख हथियारों और प्लेटफार्मों के सह-उत्पादन को आगे बढ़ाने की महत्वाकांक्षी योजना का मार्ग प्रशस्त किया गया।

दूसरी ओर यदि भारत को अमेरिकी एफ-35 स्टील्थ लड़ाकू विमानों की प्रस्तावित आपूर्ति परवान चढ़ती है तो पड़ोसी देशों की बेचैनी और बढ़ जाएगी और भारत की ओर देखने की उनकी हिम्मत नहीं होगी। मोदीजी का जादू एक बार फिर सिर चढ़कर बोला है। मोदी की इस यात्रा के पीछे इरादा केवल भावनात्मक रिश्तों की बुनियाद को मजबूत करना नहीं रहा है, बल्कि भारत के हक में अमेरिकी नीतियों को प्रभावित करने के लिए उनका सहयोग पाने की मंशा भी रहा है, जो सफल हुआ। संभव है इससे भारत और अमेरिका दोनों ही देशों में विकास के नये रास्तें खुलेंगे।

इस यात्रा के दौरान महत्वपूर्ण घोषणा यह भी रही है कि 26/11 के साजिशकर्ता तहव्वुर राणा के प्रत्यर्पण को मंजूरी दे दी गई है। यह पाकिस्तान को चेतावनी भी है कि वह अपनी जमीन से आतंकवादियों को सीमापार आतंकी हमलों को अंजाम देने में मदद बंद करे। अब इस्लामाबाद पर मुंबई और पठानकोट के आतंक हमलों के साजिशकताओं को सजा देने का दबाव भी बढ़ जाएगा। निस्संदेह, ट्रंप का टैरिफ आतंकवाद निगलने वाली कड़वी गोली हो सकती है, लेकिन भारत की रक्षा तैयारियों में अमेरिका की बड़ी भूमिका एक आकर्षक प्रस्ताव होगा, जिससे भारत सैन्य मोर्चे पर सशक्त होकर उभरेगा।

मोदी की यह यात्रा दो बहुत अच्छे दोस्तों की

बहुत ही नाजुक समझौतेवादी भूमिका को देखने का एक दिलचस्प एवं रोमांचक मौका बनी। दोनों नेता न केवल पहले से एक-दूसरे को अच्छी तरह से जानते रहे हैं बल्कि उनके बीच की व्यक्तिगत मित्रता एवं आत्मीयता भी चर्चित रही है। यह सुखद संयोग है कि दोनों नेता दुनिया के सबसे बड़े पुराने और सबसे विशाल लोकतंत्र के राष्ट्राध्यक्ष हैं। अमेरिका को पहले से ही दुनिया ग्लोबल लीडर मानती रही है। अब भारत नया और उभरता हुआ विश्वनेता बना है। ऐसे में प्रधानमंत्री मोदी और ट्रंप की जोड़ी से दुनिया पर नये तरीके से आधिपत्य बदलता दिख रहा है। दोनों देशों के लगातार बेहतर होते रिश्तों की पृष्ठभूमि इस तथ्य को और महत्वपूर्ण बना रही थी। फिर भी यात्रा से पहले के घटनाक्रम ने इसकी कामयाबी पर भले ही संदेह की परतें चढ़ा रखी थी, लेकिन मोदी की कुशलता एवं कूटनीति से सभी वार्ताएं सौहार्दपूर्ण होकर सकारात्मक बनी। जिससे भारत एक बार फिर दुनिया के सामने सशक्त एवं ताकतवर बनकर सामने आया है।

ट्रंप की कुछ सख्ती से बने तनाव को मोदी ने हावी नहीं होने दिया। प्रधानमंत्री मोदी पूरी तरह से अपने एजेंडे पर केंद्रित रहे। उन्होंने न केवल ट्रंप की तारीफ की , बल्कि राष्ट्रपति ट्रंप के प्रिय नारे मेक अमेरिका ग्रेट अगेन (एमएजीए) की तर्ज पर अपना नारा पेश किया- मेक इंडिया ग्रेट अगेन (एमआईजीए)। उन्होने यह भी कहा कि जब एमएजीए और एमआईजीए साथ आते हैं तो बन जाता है एमईजीए जो दोनों देशों की शानदार साझेदारी की कहानी कहता है। इस तरह दोनों देश

ने दुनिया के बॉस होते हुए अपने वर्चस्वी होने को व्यक्त किया।

अब दुनिया के हर विवादों को सुलझाने में भारत-अमेरिका की संयुक्त एवं भूमिका महत्वपूर्ण होने से भारत की ताकत को समझा जा सकता है। निश्चित रूप से दोनों देशों के बीच के कई समीकरण आने वाले दिनों में नया आकार लेंगे, लेकिन प्रधानमंत्री मोदी की यात्रा ने इस उम्मीद को ठोस आधार दे दिया है कि सहयोग के स्वरूप में जो भी बदलाव हो, उससे रिश्ता बेहतर ही होता जाएगा। मोदी की इस अमेरिका यात्रा की अहमियत जग जाहिर है। डोनाल्ड ट्रंप के दूसरी बार राष्ट्रपति बनने के बाद यह अमेरिका का उनका पहला सफर

है। ट्रंप के साथ वाइट हाउस में मोदी की मुलाकात ने यही जताया कि दोनों नेताओं एवं देशों के संबंधों को और प्रगाढ़ करने की ललक दोनों तरफ है।

भारतीय प्रधानमंत्री की अमेरिकी राष्ट्रपति से मुलाकात पर देश ही नहीं, दुनिया की भी निगाहें थीं। एक तो इसलिए कि मोदी उन चुनिंदा शासनाध्यक्षों में से एक हैं, जिनसे डोनाल्ड ट्रंप ने प्रारंभिक दौर में ही मुलाकात करना बेहतर समझा और दूसरे इसलिए कि भारत अब एक बड़ी ताकत बन चुका है और वैश्विक मामलों में उसका रुख-रवैया एवं नीतियां मायने रखती है।

इस मुलाकात को लेकर जिज्ञासा का एक कारण यह भी था कि बाइडन प्रशासन के समय अमेरिका और भारत के संबंधों में एक खिंचाव आ गया था। एक अर्से से यह महसूस किया जा रहा था कि बाइडन प्रशासन भारतीय हितों की वैसी चिंता नहीं कर रहा है, जैसी करनी चाहिए। मोदी और ट्रंप की मुलाकात ने यह तो रेखांकित किया कि दोनों देशों के संबंधों में गर्म जोशी लौट आई है, लेकिन अभी यह नहीं कहा जा सकता कि अमेरिका भारत की समस्त चिंताओं का समाधान करने जा रहा है, लेकिन इसे नकारा भी नहीं जा रहा है। ट्रंप ने बांग्लादेश के मामले में भारत के मन मुताबिक बात कहकर, सीमा पार यानी पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद से मिलकर लड़ने का वादा किया। कुल मिलाकर विकसित भारत के लक्ष्य में सहायक बनने वाले विभिन्न क्षेत्रों में अमेरिका से सहयोग की राह प्रशस्त होना भारत के लिये एक नये सूरज का उदय ही कहा जायेगा।

मोदी-योगी की कार्यशैली से बढ़ रही विश्व में भारत की साख

जितेन्द्र कुमार

ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे संसार के संचालन की इस ईश्वरीय व्यवस्था में पूर्व और वर्तमान जन्म के अच्छे और बुरे संस्कारों कर्मों के फलस्वरूप शायद सबकी भूमिका इस आशय से तय है कि कौन, किस रूप में, कब तक ,कहां और क्या करेगा।...? मतलब पूर्व जन्म के कर्मों और संस्कारों के अनुरूप जिसको जो करना है वह वही कर रहा है वह चाहे हम हो या आप। आध्यात्मिक दृष्टिकोण इस बारे में संबंधित व्यक्ति के कर्म / कार्य के साथ ही उसके क्षेत्र की भी व्याख्या करता है। यानी उसका कार्य और उससे प्रभावित होने वाला उसका क्षेत्र / दायरा भी क्या और कितना होगा ? प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का दायरा विश्व व्यापी उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का दायरा देशव्यापी होना भी आध्यात्मिक दृष्टिकोण से वर्तमान के साथ ही पूर्व जन्म के कर्मों और संस्कारों का ही परिणाम है। इसमें आप केवल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी या योगी आदित्यनाथ ही नहीं बल्कि विश्व के किसी भी पद प्रतिष्ठा धारक को शामिल कर सकते हैं।

साथ ही यह भी मान सकते हो कि इस लोक कल्याण के लिए जब जिसकी जरूरत होती है तभी वह संसार में शरीर धारण करता है। यही कारण है कि जब भगवान राम होते हैं तब भगवान कृष्ण नहीं होते। या जब ईसा मसीह होते हैं तब गुरु नानक देव या मोहम्मद साहब नहीं हुआ करते। इस आध्यात्मिक कथन के दायरे में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी या यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जैसी लोक कल्याणकारी विभूतियों को ही नहीं बल्कि आप खुद को भी शामिल कर सकते हैं। जहां तक लोकहित में ईश्वर प्रदत्त सक्षमता, सम्पन्नता और अधिकार सम्पन्नता का सदुपयोग करते हुए किसी के भी द्वारा इस तरह के अनुकरणीय कर्तव्य के निर्वहन का सवाल है। इस संदर्भ में यह भी सच है कि सौ साल पहले ना तो हम लोग इस दुनियां में कहीं थे, और ना ही सौ साल बाद कहीं होंगे। मतलब इस तरह से संक्षिप्त जैसे जीवन के इसी कालखंड के दौरान पूर्व और वर्तमान जन्म के कर्मों और संस्कारों के अनुरूप संसार के संचालन की इस ईश्वरीय व्यवस्था में जिसको, जिस रूप में , जहां पर ,जब तक और जो भूमिका अदा करनी है। शायद वह वही कर रहा है। जहां तक सक्षमता, सम्पन्नता और अधिकार सम्पन्नता के फलस्वरुप किसी की सहायता करने, उसे दुखों और संकट से मुक्ति दिलाने अथवा इसके विपरीत निहित स्वार्थ में किसी को नुकसान या कष्ट पहुंचाने का सवाल है तो यह भी मान लीजिए कि सारे संसार का सृजक ईश्वर, अल्लाह और गॉड ने किसी इंसान में कोई अंतर नहीं किया। मतलब ऐसा नहीं किया है कि उसने हमारे दो हाथ ,एक मुंह और किसी अन्य के चार हाथ और दो मुंह लगा दिये हों, या खून का रंग बदल दिया हो। अगर वह ईश्वर , अल्लाह और गॉड चाहता तो ऐसा कर भी सकता था क्योंकि प्रकृति में जितने रंग हैं। उस हिसाब से अगर केवल खून का ही रंग बदल दिया जाता तो फिर मान लिया जाता कि हम फलां जाति के हैं और कोई दूसरा अन्य जाति, धर्म, मजहब या पंथ का है। इसका मतलब जो मेरा निमार्ता है ,वह आपका है और जो आपका है ,वही मेरा भी। इसका मतलब अगर हम अपने स्वार्थ में आपको कष्ट पहुंचाते हैं तो वह आपको नहीं अपने आपको कष्ट पहुंचा रहे हैं। अगर आपको परेशान कर रहे हैं तो आपको नहीं ,अपने आपको यानी खुद को परेशान होने का कारण बन रहे हैं। अगर आपको हानि पहुंचा रहे हैं तो आपको नहीं अपने आपको हानि पहुंचा रहे हैं। इसी के साथ लोक हित में किसी भी कार्य को करने या फिर किसी भी तरह की योजनाओं को अंजाम देने सवाल पर यही कहा जा सकता है, जिसे हमारी या आपकी अंतरात्मा उचित समझती हो। उस कार्य को किसी भी तरह के विरोधों / आलोचनाओं की चिंता किए बगैर लोक हित में अवश्य ही किया जाना चाहिए। यहां किसी भी तरह की आलोचनाओं या विरोधों के विपरीत भी हृदय को स्वीकृत लोक हित से जुड़े हर कार्य को अंजाम देने की बात इसलिए की जा रही है,क्योंकि ना तो सबको संतुष्ट किया जा सकता है और ना ही सब कुछ हमारे या किसी के भी नियंत्रण में है। ... और अगर हमारे या किसी के भी नियंत्रण में है तो फिर हमें भूख

तभी लगे , जब मैं चाहूं । हमें प्यास भी तभी लगे, जब मैं चाहूं। ...और हमें नींद भी तभी आये , जब मैं चाहूं। कोई नुकसान तभी हो , जब मैं चाहूं। यहां तक कि मेरी मौत भी तभी हो जब मैं चाहूं लेकिन ऐसा कदापि नहीं होता मतलब मैं नहीं चाहता तब भी नींद आती है। मैं नहीं चाहता तब भी भूख लगती है और हम नहीं चाहते हैं ,तब भी अप्रिय हो जाता है। हम नहीं चाहते तब भी मरना पड़ता है। इसका मतलब जीवन का जो भी महत्वपूर्ण है , वह हमारे नियंत्रण में कदापि नहीं है। ...हो सकता है यह सब कुछ उसके नियंत्रण में हो ,जिसे हम ईश्वर ,अल्लाह या गॉड कहते हैं। .....और अगर यह सच है तो फिर यह भी लगता है कि जैसे ईश्वर, अल्लाह या गॉड हमारा परीक्षक है। हम परीक्षार्थी हैं और जिंदगी , वह उत्तर पुस्तिका, जिसमें हमें कर्म के रुप में सवालों का जवाब देना होता है, और दिए जाने वाले सही या गलत जवाबों के रूप में हमारा परीक्षाफल भी हानि-लाभ, यश - अपयश, शांति - अशांति, उन्नति और अवनति के रुप में सामने आता है ,लेकिन यह सब कुछ भी निर्भर करता है कि हल करने के लिए आपको किस तरह के सवालों का प्रश्न पत्र मिला है। ....यहां कहने का आशय यह है कि कर्तव्य निर्वहन हेतु संसार के किसी भी व्यक्ति की सक्षमता और अधिकार संपन्नता का यह सौभाग्य उसके पूर्व और वर्तमान जन्म के कर्मों और अच्छे संस्कारों का ही परिणाम होता है। यहां पर पूर्व जन्म के अच्छे कर्म के परिणाम की बात इसलिए, क्योंकि हम लोग जन्म से ही अंधे, बहरे और गूंगे पैदा नहीं हुए। जबकि संसार में अनगिनत ऐसे लोग भी हैं ,जो जन्म से अंधे बहरे, गूंगे या फिर अपाहिज हैं। इसका मतलब हमने पूर्व जन्म में जरूर कुछ अच्छा किया होगा। इसीलिए जन्म से ही अंधे, बहरे ,गूंगे या अपाहिज नहीं हैं। .....और अगर इसी क्रम में वर्तमान जन्म के शुभ कर्मों की बात करें तो अगर इस जन्म में शिक्षा और परीक्षा के रूप में कर्म नहीं किया गया होता तो हम उस पद या स्थित में कदापि नहीं होते ,जिस पर हैं। अच्छे बुरे कर्मों के परिणाम वाले सत्य का अंदाजा इसी से लग जाता है कि जब हम लोकहित के विपरीत आचरण करते हैं तो हमें किसी न किसी दंड या नुकसान के रूप में उसका फल भी भोगना पड़ता है। ...और अगर इसकी भी वजह कोई ईश्वर, अल्लाह और गॉड को मानता है, तो इसे भी अनुचित नहीं कहा जा सकता। ,,,,और बहुत धन्य और ज्ञानी हैं ,वह लोग, जिन्हें इस बात पर यकीन है कि ईश्वर, अल्लाह और गॉड किसी और रूप में नहीं बल्कि नरेंद्र मोदी और योगी आदित्यनाथ जैसे कर्म योगियों के रूप में ही देश, काल और परस्थितियों के अनुरूप सब कुछ वही करता है

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का दायरा विश्व व्यापी उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का दायरा देशव्यापी होना भी आध्यात्मिक दृष्टिकोण से वर्तमान के साथ ही पूर्व जन्म के कर्मों और संस्कारों का ही परिणाम है।

अथवा कर रहा है, जो उसे देश, समाज और संसार के हित में करना चाहिए। इसके दायरे में आप मोदी योगी जैसे विश्व के किसी भी शरीरधारी को भी शामिल कर सकते हैं। यही नहीं मोदी योगी जैसे संसार के किसी भी व्यक्ति द्वारा अपने जीवन के कालखंड के हर पल का सदुपयोग अपने देश, समाज और विश्व हित में कठोर परिश्रम के साथ पूरी निष्ठा और ईमानदारी से किये जाने से तो यही लगता है कि परमेश्वर शंख, चक्र ,गदा लेकर नहीं बल्कि मोदी योगी जैसों के रूप में ही अपने परमेश्वर होने की परिभाषा को सार्थक कर रहा है। अक्सर बहुत से ऐसे लोग भी मिल जाते हैं जो संसार की संचालक किसी ऐसी शक्ति को नहीं मानते, जिसे ईश्वर, अल्लाह या गॉड के रुप में जाना जाता है।... और तब उनसे कहना पड़ता है कि मैं भी ईश्वर अल्लाह गॉड को उस दिन नहीं मानूंगा जिस दिन मुझे इस बात का सबूत मिल गया कि यह धरती, यह आकाश अथवा हवा और पानी हमारे बाबा और पिता जी की देन है। उसदिन मैं कहूंगा कि ईश्वर, अल्लाह और गॉड पहले हमारे बाबा थे और उनके नहीं रहने के बाद मैं हूं।

संसार के किसी भी व्यक्ति की सक्षमता और संपन्नता के संदर्भ में एक बात यह भी कि ईश्वर, अल्लाह या गॉड ने दुनियां के हर इंसान को उसके द्वारा ही अर्जित हर वस्तु और सम्पत्ति आदि के उपयोग और उपभोग के मामले में उसको उसकी सीमाओं में भी बांध रखा है क्योंकि कोई भी चाहते हुए भी एक साथ दस किलो खा नहीं सकता। चाहते हुए भी बीस मीटर कपड़ा एक साथ पहन नहीं सकता। और ना ही अपने इस शरीर को इतना बड़ा कर सकता है कि वह खून पसीने की कमाई से बनाई खुद की हवेली में दस पांच मीटर की जगह घेर कर सोने की तमन्ना पूरी कर सके। यहीं नहीं जब कभी अपनी नींद की बारे में सोंचता हूं तो भी ऊपर वाले की करामत कुछ समझ नहीं पाता क्योंकि दो मिनट की नींद में यह याद नहीं रहता मैं कहां और कौन हूं ? कहां हमारी बीबी और कहां हमारे बच्चे। कहां हमारी धन दौलत ? कौन हमारा दोस्त और कौन हमारा दुश्मन? लेकिन जैसे ही हमारी नींद खुलती है , सबकुछ याद आ जाता है। यह सब मेरा ही और मेरे लिए ही है, लेकिन जब फिर नींद आती है तो फिर वही पहले जैसा वाला ही हाल होता है। मतलब हमें फिर याद नहीं रहता। सोचता हूं कि जब यह सब कुछ मैंने ही अर्जित किया है तो फिर हमें नींद की अवस्था में अपने बीवी, बच्चे, अपनी धन दौलत अथवा दोस्त और दुश्मन याद क्यों नहीं रहते? मतलब खाने पीने रहने से लेकर सोने तक इंसान को जिस तरह से सीमाओं में बांधा गया है। उससे एक बात तो तय है कि हमारे द्वारा कुछ भी अर्जित केवल हमारे लिए ही नहीं है। और अगर है तो फिर ऊपर वाले ने हमको इस तरह का क्यों नहीं बनाया कि मैं एक साथ दस किलो खा सकता। बीस लीटर पानी पी सकता। तीस मीटर मीटर कपड़ा पहन सकता और शरीर के जरिये दस पांच मीटर की जगह घेर कर सोने की तमन्ना पूरी कर सकता।

मतलब मेरे दवारा कुछ भी अर्जित दूसरों के लिए भी है, लेकिन किनके लिए ? कौन है इसका पात्र? यह तो शायद हमारे लिए ईश्वर, अल्लाह या गॉड ही तय करता है। शायद वह इसीलिए किसी को बीबी, बच्चों, तो किसी को भाई - बहन, रिश्तेदार और दोस्तों या फिर और किसी के रुप में हमसे जोड़ता है और हम कहते भी हैं कि यह सब हम उनके लिए ही कर रहे हैं। शायद इसीलिए ईश्वर, अल्लाह या गॉड ने ऐसा कुछ नहीं किया कि उसकी हवा, पानी, धरती या आसमान का लाभ केवल हमें या केवल आपको ही मिलता हो। मतलब सुख और दुख का, अच्चाई या बुराई का अथवा परोपकार, सहायता या फिर असहयोग का जो दायरा हम दूसरों के लिए फैलाते हैं। उसका परिणाम भी उसी हिसाब के आपके हित अथवा अहित में वह देता है, जिसे हम ईश्वर, अल्लाह या गॉड कहते हैं। शायद यही वजह है कि किसी का जन्म ही ऐसे सम्पन्न खानदान परिवार में हो जाता है ,जिसे जीवन में औरों की तरह रोजी रोटी के लिए संघर्ष नहीं करना पड़ता।

शायद ऐसे ही लोग बड़ी खुशी से कड़ाके की ठंडी रात में भी गरीबों को भोजन और कपड़े बांटते घूमते हैं। लगातार भंडारे चलवाते हैं। जरुरतमंदों की सहायता और गरीब लड़कियों की शादी करवाते हैं। आखिर वे ऐसा क्यों और कैसे कर पा रहे हैं , इसका जवाब होगा कि ऊपर वाले ने इतना दिया है ,तभी कर पा रहे हैं। अगर पूछा जाये कि यह उसके साथ अच्छा है या बुरा तो आप कहेंगे। बुरा नहीं , यह तो उसके साथ बहुत अच्छा है ,लेकिन क्यों और कैसे ?जवाब है जब अच्छा किया होगा, तभी अच्छा है। यहां अच्छे से मतलब हमारे कर्म से है।

मनोज शर्मा

विदेशों में हिन्दू मन्दिरों पर हमले दुर्भाग्यपूर्ण

भारतीय विदेश मंत्रालय ने इस तरह की कुत्सित कोशिशों की तीव्र निंदा एवं भर्त्सना की है, सवाल यह उठता है कि जब ऐसी आजादी किसी सभ्य समाज के अहसासों से खिलवाड़ करे और दूसरों की धार्मिक आजादी का अतिक्रमण करने लगे तो क्या उनके खिलाफ कार्रवाई नहीं करनी चाहिए?

खालिस्तानी अलगाववादियों से जुड़े कुछ अराजक तत्वों ने एक बार फिर अमेरिका में कैलिफोर्निया स्थित स्वामी नारायण मंदिर पर हमला किया है, हिन्दुओं वापिस भारत जाओ जैसे आपत्तिजनक संदेश लिखकर मंदिर को क्षति पहुंचायी गई है। हिन्दू मन्दिरों एवं आस्था पर बार-बार हो रहे ये हमने दुर्भाग्यपूर्ण एवं शर्मनाक है। आतंक फैलाने की मंशा से मंदिरों पर हमले की ऐसी घटनाओं का बार-बार होते रहना चिन्ता का सबब है। ऐसे पृथकतावादी तत्व हिंदुओं के खिलाफ विषवमन करके अपनी राजनीति चमकाना चाहते हैं एवं दवाब बनाना चाहते हैं। भारतीय सांझा संस्कृति में मिलजुलकर रहने वाले समाजों को विभाजित करके घृणा, नफरत एवं द्वेष उत्पन्न करने वाले तत्वों को न केवल बेनकाब करने की जरूरत है बल्कि उन्हें नेस्तनाबूंद किया जाना चाहिए। बात केवल खालिस्तानी अलगाववादियों की नहीं है, मुस्लिम आतंकवादी भी विभिन्न देशों में हिन्दू धर्म, मन्दिर, आस्था एवं संस्कृति पर ऐसे ही हमले करके दहशत फैला रहे हैं। हिन्दू समुदाय नफरत के खिलाफ मजबूती से खड़ा है, वह कभी भी नफरत को जड़ नहीं जमाने देंगा। लेकिन अमेरिका, ब्रिटेन व कनाडा सरकारों द्वारा ऐसे मामलों की अनदेखी और दोषियों के विरुद्ध कार्रवाई न करना विडम्बनापूर्ण एवं चुनौतीपूर्ण है। भारत सरकार को भी कड़े कदम उठाते हुए सख्त संदेश देना चाहिए।

अमेरिका के अलग-अलग राज्यों में हिंदू मंदिरों को निशाना बनाए जाने को खालिस्तान समर्थकों से जोड़कर देखा जा रहा है। दक्षिण कैलिफोर्निया के चिनो हिल्स इलाके में स्थित मंदिर की दीवारों पर भारत विरोधी नारे लिखे गए अरैर मन्दिर को क्षति पहुंचाई गयी। माना जा रहा है कि खालिस्तान जनमत

संग्रह से पहले साजिश के तहत ये हमला किया गया है। कुछ दिन पहले न्यूयार्क में भी स्वामीनारायण मंदिर पर भी हमला हुआ था। 25 सितंबर को कैलिफोर्निया के सेक्रामेंटो स्थित स्वामीनारायण मंदिर को भी निशाना बनाया गया था, तोड़फोड़ की गई और उस पर आपत्तिजनक संदेश भी लिख दिए गए हैं। आपत्तिजनक यह है कि अमेरिका, ब्रिटेन व कनाडा में सक्रिय ऐसे तत्वों को इन देशों की सरकारों द्वारा राजनीति के चलते खुला समर्थन देना एवं अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर प्रश्रय दिया जाना बर्दाश्त से बाहर होता जा रहा है, कब तक खामोश रहा जाये? कैलिफोर्निया में स्वामीनारायण मंदिर पर हुई घटना से पहले लंदन में विदेश मंत्री एस जयशंकर के गाड़ी के सामने खालिस्तान समर्थकों ने प्रदर्शन किया था, जिसे सामान्य घटना नहीं माना जा सकता। जो खालिस्तान समर्थक विदेश मंत्री के काफिले तक कूद गया, वह सुनियोजित ढंग से हमला भी कर सकता था। निश्चित तौर पर यह ब्रिटिश पुलिस की कोताही एवं लापरवाही है। उस समय खालिस्तानी उग्रवादी ने भारतीय राष्ट्रीय ध्वज 'तिरंगे' का भी अपमान किया।

विडंबना यह है कि अमेरिका, ब्रिटेन व कनाडा के साथ पाकिस्तान, बांग्लादेश की सरकारें ऐसे हमलों व मंदिरों को अपवित्र करने, उनको नुकसान पहुंचाने, अराजक माहौल खड़ा करने की घटनाओं को अभिव्यक्ति की आजादी के दायरे में रखकर आंखें मूंद लेती हैं या कुछ देश कट्टरतावाद के चलते उन देशों के अल्पसंख्यक समुदायों पर तरह-तरह के हमले होने देती है। यह विडम्बना ही है कि जब दूसरे देशों में उनके धर्म के लोगों के पूजा स्थलों पर हमले होते हैं तो उसे धार्मिक आजादी व मानवाधिकारों का संकट बताने लगते हैं, फिर हिन्दू मन्दिरों एवं आस्था पर हो रहे ऐसे हमलों को लेकर दोहरी मानसिकता एवं दोहरा मापदण्ड क्यों? क्यों भेदभावपूर्ण मानसिकता है? निश्चित रूप से ऐसे ही रवैये से भारत के साथ इन देशों के संबंधों में खटास आती है।

ऐसे ही अलगाववादियों के कृकृत्यों व कनाडा सरकार के अलगाववादियों को संरक्षण देने के चलते ही दोनों देशों के संबंध सबसे खराब दौर में पहुंचे हैं। बांग्लादेश में हिन्दुओं पर हो रहे हमलों के कारण ही दोनों देशों के संबंध बिगड़ चुके हैं। आतंक से जो जन्मती है, वह संस्कृति नहीं होती है, उसमें पाशविकता होती है, उसमें जानवर विद्यमान होते हैं। ऐसे व्यक्ति, संगठन एवं देश किसी के प्रिय नहीं हो सकते, वे मानवता को त्राण नहीं, संत्रास देते हैं। भारतीय विदेश मंत्रालय ने इस तरह की कुत्सित कोशिशों की तीव्र निंदा एवं भर्त्सना की है, सवाल यह उठता है कि जब ऐसी आजादी किसी सभ्य समाज के अहसासों से खिलवाड़ करे और दूसरों की धार्मिक आजादी का अतिक्रमण करने लगे तो क्या उनके खिलाफ कार्रवाई नहीं करनी चाहिए? दरअसल, ये घटनाक्रम इन देशों के दोगले मापदंड उजागर करते हैं।

दूसरे देशों में सांप्रदायिक असहिष्णुता और कथित भेदभाव के आंकड़े जारी करके दबाव बनाने वाले तथाकथित सभ्य देश अपने क्रियाकलापों से बेनकाब हो रहे हैं। पिछले कुछ वर्षों में अमेरिका में करीब एक दर्जन मंदिरों को अपवित्र करने की कुत्सित कोशिश हुई, लेकिन ऐसे तत्वों के खिलाफ दिखावे के लिये भी कार्रवाई नहीं की गई। किसी हमले की जांच भी नहीं हुई। जबकि प्रत्येक संप्रदाय की धार्मिक आजादी की रक्षा करना अमेरिकी सरकार का नैतिक दायित्व है। अमेरिका खुद को धर्मनिरपेक्षतावादी एवं मानवाधिकार का हिमायती मानता है। आखिर अमेरिका जैसे शक्तिसंपन्न राष्ट्र में मंदिरों को सुरक्षा क्यों नहीं मुहैया करायी जाती? बीते साल भी कनाडा में हिंदू महासभा के मंदिर में हमला करके बच्चों व महिलाओं तक को पीटा गया था। लेकिन ट्रूडो सरकार खामोश रही। लेकिन जैसी करनी वैसी भरनी की कहावत के अनुसार ट्रूडो सरकार बिखर गयी, धराशायी हो गयी। निश्चित रूप से पश्चिमी देशों की सरकारों को अभिव्यक्ति की आजादी की सीमा व गरिमा तय करनी होगी।

लगातार हो रहे इन हमलों के बाद भी हिन्दू समुदाय शांति और करुणा की ही बात करता आया है। पर एक बड़ा सवाल ये है कि आखिर कब तक यह सिलसिला चलेगा? क्या अमेरिकी एवं ब्रिटेन प्रशासन इस पर कोई ठोस कदम उठाएंगे? हाल ही में ब्रिटिश गृह मंत्रालय की रिपोर्ट में ऐसे अतिवादियों के उभार को ब्रिटिश कानून व्यवस्था के लिये खतरा बताया गया था। आतंक किसी एक देश नहीं, सम्पूर्ण मानवता के लिये गंभीर खतरा है। लेकिन इसके बावजूद ऐसे मामलों की अनदेखी की जा रही है। निश्चित तौर पर छोटी घटनाओं को नजरअंदाज करने से कालांतर में बड़ी हिंसक गतिविधियों को ही प्रश्रय मिलता है। प्रतिबंधित आतंवादी संगठन सिख फॉर जस्टिस कनाडा सहित कई देशों में लगातार भारत विरोधी अभियान चला रहा है। 17 नवंबर 2024 को न्यूजीलैंड में भी ऐसा ही अभियान चलाने की कोशिश की गई और भारत विरोधी नारे लगाते हुए खालिस्तान का झंडा लहराया गया। लेकिन न्यूजीलैंड के नागरिकों ने इसका विरोध किया और खालिस्तान समर्थकों के मनसूबों को सफल नहीं होने दिया।

भारत दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थ-व्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है। भारत के बढ़ते कदमों को रोकने के लिये आतंकी संगठन और दुश्मन देश आतंक का सहारा ले रहे हैं। सरकार की नीति, सशक्त सुरक्षा व्यवस्था, सरकार की सतर्कता के चलते ही आतंकवादी संगठन एवं आतंकवादी अपने मनसूबों में कामयाब नहीं हो पा रहे हैं। अधिक सावधान एवं सख्त होने की अपेक्षा है, अन्यथा भारत की सारी प्रगति को आतंकवाद खा जायेगा। क्योंकि लगातार असफलता से खीझे एवं बौखलाये हुए आतंकी कोई-न-कोई नई और अधिक खौफनाक आतंकी घटना को अंजाम देने में जुटे रहते हैं, हमारी सुरक्षा एजेंसियों को अधिक सतर्कता बरतने की अपेक्षा है। दुनिया के शक्तिसंपन्न राष्ट्र भी मंथन करें आतंक रूपी विष और विषमता को समाप्त करने का, शांतिपूर्ण दुनिया निर्मित करने का।

बलात्कार और हिंसा पर कब टूटेगी समाज की चुप्पी ?

दिनदहाड़े सामने आती छेड़छाड़, अपहरण, बलात्कार या सामूहिक दुष्कर्म जैसी घटनाएं सभ्य समाज के माथे पर बदनुमा दाग के समान हैं और यह कहना असंगत नहीं होगा कि महज कड़े कानून बना देने से ही महिला उत्पीड़न की घटनाओं पर अंकुश नहीं लगने वाला।

सचिन तोमर

दुनियाभर में प्रतिवर्ष 8 मार्च को 'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' मनाया जाता है, जो सही मायनों में महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक उपलब्धियों का जश्न मनाने वाला एक वैश्विक दिवस है। यह दिन लैंगिक समानता में तेजी लाने के लिए कार्रवाई के आह्वान का भी प्रतीक है। हालांकि चिंता का विषय यही है कि जिस 'आधी दुनिया' के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने के लिए यह दिवस मनाया जाता है, उसी आधी दुनिया को जीवन के हर मोड़ पर भेदभाव या अपराधों का सामना करना पड़ता है। यदि इसे भारत के ही संदर्भ में देखें तो शायद ही कोई दिन ऐसा बीतता हो, जब 'आधी दुनिया' से जुड़े अपराधों के मामले देश के कोने-कोने से सामने न आते हों। होता सिर्फ यही है कि जब भी कोई बड़ा मामला सामने आता है तो हम सिर्फ पुलिस-प्रशासन को कोसने और संसद से लेकर सड़क तक कैंडल मार्च निकालने या अन्य किसी प्रकार से विरोध प्रदर्शन करने की रस्म अदायगी करके शांत हो जाते हैं और पुनः तभी जागते हैं, जब ऐसा ही कोई बड़ा मामला पुनः सुर्खियां बनता है, अन्यथा ऐसी छोटी-मोटी घटनाएं तो आए दिन होती ही रहती हैं।

देश में कानूनों में सख्ती, महिला सुरक्षा के नाम पर बीते कुछ वर्षों में कई तरह के कदम उठाने और समाज में 'आधी दुनिया' के आत्मसम्मान को लेकर बढ़ती संवेदनशीलता के बावजूद आखिर ऐसे क्या कारण हैं कि बलात्कार के मामले हों या छेड़छाड़ अथवा मर्यादा हनन या फिर अपहरण अथवा क्रूरता, 'आधी दुनिया' के प्रति अपराधों का सिलसिला थम नहीं रहा है? इसका एक बड़ा कारण तो यही है कि कड़े कानूनों के बावजूद असामाजिक तत्वों पर वो कड़ी कार्रवाई नहीं हो रही है, जिसके वो हकदार हैं और इसके अभाव में हम ऐसे अपराधियों के मन में भय पैदा करने में असफल हो रहे हैं। कहना गलत नहीं होगा कि महज कानून कड़े कर देने से ही महिलाओं के प्रति हो रहे अपराध थमने से रहे, जब तक उनका ईमानदारीपूर्वक कड़ाई से पालन न किया जाए। ऐसे मामलों में पुलिस-प्रशासन की भूमिका भी अनेक अवसरों पर संदिग्ध रहती है। पुलिस किस प्रकार ऐसे अनेक मामलों में पीड़िताओं को ही परेशान करके उनके जले पर नमक छिड़कने का कार्य करती है, ऐसे उदाहरण अक्सर सामने आते रहे हैं। ऐसी परिस्थितियों के मद्देनजर अपराधियों के मन में पुलिस और कानून का भय कैसे उत्पन्न होगा और कैसे महिलाओं के प्रति हो रहे अपराधों में कमी की उम्मीद

की जाए? जरूरत इस बात की महसूस की जाने लगी है कि पुलिस को लैंगिक दृष्टि से संवदेनशील बनाया जाए ताकि पुलिस पीड़ित पक्ष को पर्याप्त संबल प्रदान करे और पीड़िताएं अपराधियों के खिलाफ खुलकर खड़ा होने की हिम्मत जुटा सकें, साथ ही जांच एजेंसियों और न्यायिक तंत्र से भी ऐसे मामलों में तत्परता से कार्रवाई की अपेक्षा की जानी चाहिए। ऐसी घटनाओं पर अंकुश के लिए समय की मांग यही है कि सरकारें मशीनरी को चुस्त-दुरूस्त बनाने के साथ-साथ प्रशासन की जवाबदेही सुनिश्चित करें कि यदि उनके क्षेत्र में महिलाओं के प्रति हो रहे अपराधों के मामलों में कानून का अनुपालन सुनिश्चित नहीं हुआ तो उन पर सख्त कार्रवाई की जाए।

दिनदहाड़े सामने आती छेड़छाड़, अपहरण, बलात्कार या सामूहिक दुष्कर्म जैसी घटनाएं सभ्य समाज के माथे पर बदनुमा दाग के समान हैं और यह कहना असंगत नहीं होगा कि महज कड़े कानून बना देने से ही महिला उत्पीड़न की घटनाओं पर अंकुश नहीं लगने वाला। आए दिन देशभर में हो रही इस तरह की घटनाएं हमारी सभ्यता की पोल खोलने के लिए पर्याप्त हैं। इस तथ्य को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि बलात्कार और छेड़छाड़ के आए दिन जो मामले सामने आ रहे हैं, उनमें बहुत से ऐसे भी होते हैं, जिनमें पीड़िता के परिजन, निकट

दिनदहाड़े सामने आती छेड़छाड़, अपहरण, बलात्कार या सामूहिक दुष्कर्म जैसी घटनाएं सभ्य समाज के माथे पर बदनुमा दाग के समान हैं और यह कहना असंगत नहीं होगा कि महज कड़े कानून बना देने से ही महिला उत्पीड़न की घटनाओं पर अंकुश नहीं लगने वाला।

संबंधी या परिचित ही आरोपी होते हैं। दिल्ली पुलिस द्वारा जारी आंकड़ों में तो यहां तक कहा जा चुका है कि करीब 97 फीसदी मामलों में महिलाएं अपनों की ही शिकार होती हैं और यह समस्या सिर्फ दिल्ली तक ही सीमित नहीं है बल्कि महिला अपराधों के मामले में पूरी दुनिया की यही तस्वीर है। जहां देश में हर 53 मिनट में एक महिला यौन शोषण की शिकार होती है और हर 28 मिनट में अपहरण का मामला सामने आता है, वहीं संयुक्त राष्ट्र के आंकड़ों के अनुसार दुनिया में प्रत्येक तीन में से एक महिला का कभी न कभी शारीरिक शोषण होता है। दुनिया में करीब 71 फीसदी महिलाएं शारीरिक मानसिक प्रताड़ना अथवा यौन शोषण व हिंसा की शिकार होती हैं, दक्षिण अफ्रीका में हर छह घंटे में एक महिला को उसके साथी द्वारा ही मौत के घाट उतार दिया जाता है और अमेरिका में भी इसी प्रकार कई महिलाएं हर साल अपने ही परिचितों द्वारा मार दी जाती हैं।

जहां तक पीड़िताओं को न्याय दिलाने की बात है तो इसके लिए फास्ट ट्रैक कोर्ट की मांग काफी समय से उठती रही है किन्तु हमारा सिस्टम कछुआ चाल से रेंग रहा है। ऐसे मामलों में कठोरता बरतने के साथ-साथ त्वरित न्याय प्रणाली की भी सख्त जरूरत है ताकि महिला अपराधों पर अंकुश लग सके। आज अगर समाज में शिक्षा के प्रचार-प्रसार के बावजूद महिलाओं के प्रति अपराध और संवेदनहीनता के मामले बढ़ रहे हैं तो हमें यह जानने के प्रयास करने होंगे कि कमी हमारी शिक्षा प्रणाली में है या कारण कुछ और हैं। ऐसे कृत्यों में लिप्त रहने वाले लोगों की कुंठित मानसिकता के कारणों की पड़ताल करना भी बहुत जरूरी है, साथ ही सामाजिक मूल्यों का विकास करने के लिए विद्यालयों में नैतिक शिक्षा को लागू करना और छात्रों को अच्छा साहित्य पढ़ने के लिए प्रेरित करना समय की मांग है ताकि युवाओं की नकारात्मक सोच को परिवर्तित करने में मदद मिल सके, जिससे स्थिति में सुधार की उम्मीद की जा सके।

लोकतंत्र की जड़ों को मजबूत करती है महिलाओं की भागीदारी

हम विश्व में लगातार कई वर्षों से अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाते आ रहे हैं, महिलाओं के सम्मान के लिए घोषित इस दिन का उद्देश्य सिर्फ महिलाओं के प्रति श्रद्धा और सम्मान बताना है। इसलिए इस दिन को महिलाओं के आध्यात्मिक, शैक्षिक, आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक उपलब्धियों के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। नारी मानव जाति के लिए जननी का रूप है। कहा जाए तो जननी ही नारी है और नारी ही जननी है। नारी शक्ति या मातृशक्ति का इस संसार को आगे बढ़ाने में अहम्-योगदान है। बिना नारी के इस दुनिया की कल्पना नहीं की जा सकती। अगर नारी नहीं होगी तो इस संसार का विकास नहीं हो पायेगा। नारी ही एक पुरुष को जन्म देती है, तभी नारी की सहन करने की शक्ति यानी सहनशक्ति का अहसास होता है कि वह इस संसार में कितनी मजबूत शक्ति है। आज उसी ही मजबूत नारी शक्ति पर कुछ मानसिक रूप से विक्षिप्त पुरुषों (ऐसे पुरुष जो नारी शक्ति को अपने उपभोग की वस्तु समझते हैं) द्वारा बलात्कार जैसी घटनाएं होती हैं। ऐसे पुरुषों द्वारा नारी को

चरण सिंह

शारीरिक शोषण द्वारा हमेशा लज्जित किया जाता है, यह चीज समस्त मानवजाति को शर्मसार करती है। कुछ पुरुषों के ऐसे कृत्यों द्वारा बाकी के साफ-सुथरी छवि के पुरुषों को भी शर्मसार होना पड़ता है। आज जरूरत है महिलाओं और छोटी छोटी बच्चियों के खिलाफ बलात्कार जैसी होनी वाली घटनाओं पर लगाम लगाई जाए। ये तभी हो सकता है जब बलात्कार जैसे कृत्यों के खिलाफ मानव जाति एकजुट होकर फैंसला ले और जो लोग दोषी पुरुषों का साथ देते हैं ऐसे लोगों का भी समाज पूर्ण रूप से बहिष्कार करे। इसके साथ ही आज जरूरत है कि बलात्कार जैसे कृत्यों के खिलाफ सरकारें एक कड़ी से कड़ी सजा का प्रावधान करें और बलात्कार जैसे मामलों की फास्टट्रैक कोर्ट द्वारा त्वरित कार्यवाही हो। जिससे कि दूसरे लोग भी ऐसे कृत्य करने से पहले सौ बार सोचें। तभी मानव जाति और समाज के स्तर को उठाया जा सकता है।

आज अपने समाज में नारी के स्तर को उठाने के लिए सबसे ज्यादा जरूरत है महिला सशक्तिकरण की। महिला सशक्तिकरण का अर्थ है महिलाओं की आध्यात्मिक, शैक्षिक, सामजिक, राजनैतिक और आर्थिक शक्ति में वृध्दि करना, बिना इसके महिला सशक्तिकरण असंभव है। आज हर महिला समाज में धार्मिक रूढ़ियों, पुराने नियम कानून में अपने आप को बंधा पाती है। पर अब वक्त है कि हर महिला तमाम रूढ़ियों से खुद को मुक्त करे। प्रकृति ने औरतों को खूबसूरती ही नहीं, दृढ़ता भी दी है। प्रजनन क्षमता भी सिर्फ उसी को हासिल है। भारतीय समाज में आज भी कन्या भ्रूण हत्या जैसे कृत्य दिन-रात किए जा रहे हैं। पर हर कन्या में एक मां दुर्गा छिपी होती है। यह हैरत की बात है कि दुर्गा की पूजा करने वाला इंसान दुर्गा की प्रतिरूप नवजात कन्या का गर्भ में वध कर देता है। इसमें बाप, परिवार के साथ समाज भी सहयोग देता हैं। आज जरूरत है कि देश में बच्चियों को हम वही आत्मविश्वास और हिम्मत दें

जो लड़कों को देते हैं। इससे प्रकृति का संतुलन बना रहे। इसलिए जरूरी है कि इस धरती पर कन्या को भी बराबर का सम्मान मिले। साथ ही उसकी गरिमा भी बनी रहे। इसलिए अपने अंदर की शक्ति को जागृत करें और हर स्त्री में यह शक्ति जगाएं ताकि वह हर विकृत मानसिकता का सामना पूरे साहस और धीरज के साथ कर सके। एक नारी के बिना किसी भी व्यक्ति जीवन सृजित नहीं हो सकता है। जिस परिवार में महिला नहीं होती, वहां पुरुष न तो अच्छी तरह से जिम्मेदारी निभा पाते हैं और ना ही लंबे समय तक जीते हैं। वहीं जिन परिवारों में महिलाओं पर परिवार की जिम्मेदारी होती है, वहां महिलाएं हर चुनौती, हर जिम्मेदारी को बेहतर तरीके से निभाती है और परिवार खुशहाल रहता है। अगर मजबूती की बात की जाए तो महिलाएं पुरुषों से ज्यादा मजबूत होती हैं क्योंकि वो पुरुषों को जन्म देती हैं। भारतीय संविधान द्वारा प्रदत्त भारत के मौलिक के मौलिक अधिकारों के अंतर्गत सभी को अनुच्छेद 14-18 के अंतर्गत समानता का अधिकार दिया गया है। जो कि महिलाओं और पुरुषों को बराबरी का अधिकार देता है। इसके अन्तर्गत यह भी सुनिश्चित किया गया है कि राज्य के तहत होने वाली नियुक्तियों और रोजगार के संबंध में किसी तरह का भेदभाव नहीं किया जाएगा। और संविधान द्वारा मौलिक अधिकारों के अन्तर्गत दिये गया समानता का अधिकार भारतीय राज्य को किसी के भी खिलाफ लिंग के आधार पर भेदभाव करने से रोकता है।

देष में महिलाओं के उत्थान और सशक्तीकरण को देखते हुए हमारे संविधान को 1993 में संशोधित किया गया। 73वें संशोधन के जरिये संविधान में अनुच्छेद 243ए से 243ओ तक जोड़ा गया। इस संशोधन में इस बात की व्यवस्था की गई कि पंचायतों और नगरपालिकाओं में कुल सीटों की एक तिहाई सीटें महिलाओं के लिए सुरक्षित होंगी। इस संशोधन में इसकी भी व्यवस्था की गई कि पंचायतों और नगरपालिकाओं में कम से कम एक तिहाई चेयरपर्सन की सीटें महिलाओं के लिए सुरक्षित हों। पंचायती राज संस्थानों द्वारा महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण को लागू करने में सकारात्मक कार्यवाही से महिलाओं के प्रतिनिधित्व में तेजी से वृद्धि हुई है।

वास्तव में देखा जाए तो देशभर में पंचायतों में चुनी गई महिलाओं का प्रतिनिधित्व 40 प्रतिशत हो गया है। कुछ राज्यों में पंचायतों में महिलाओं का प्रतिनिधित्व 50 प्रतिशत तक पहुंच गया है। बिना प्रतिनिधित्व के महिलाओं का सशक्तिकरण असंभव है। जब तक महिलाओं को प्रतिनिधित्व नहीं दिया

जाएगा तब तक हम महिलाओं के सशक्तिकरण की कल्पना नहीं कर सकते। नए संसद भवन में 20 सितंबर 2023 को नारी शक्ति वंदन विधेयक लोकसभा में पास हुआ था। लोकसभा में पास होने के बाद 21 सितंबर 2023 को यह नारी शक्ति वंदन विधेयक राज्यसभा से भी पारित होने के बाद राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने इस विधेयक को अपनी मंजूरी दे दी है। नारी शक्ति वंदन अधिनियम के तहत लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं को 33 फीसदी आरक्षण प्रदान करने का प्रावधान किया गया है। आने वाले सालों में कानून के अमल में आने बाद लोकसभा और विधानसभा में बहुत कुछ बदल जाएगा। लेकिन नारी शक्ति वंदन अधिनियम की सबसे बडी कमी है कि इसके अन्तर्गत पिछडे और आदिवासी वर्ग की महिलाओं को अलग से कोटा नही दिया गया है। अगर इसके अन्तर्गत पिछड़े और आदिवासी वर्ग की महिलाओं को अलग से कोटा दिया जाता तो पिछडे और दबे कुचले वर्ग की महिलाओं का प्रतिनिधित्व भी आने वाले सालों में लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में बढ पाता। इसके लिये सरकार को नारी शक्ति वंदन अधिनियम इसके अन्तर्गत पिछड़े और आदिवासी वर्ग की महिलाओं के लिये कोटे की व्यवस्था आने वाले समय में करनी चाहिये। कोई भी राष्ट्र महिलाओं के बिना शक्तिहीन है। क्योंकि राष्ट्र को हमेशा से महिलाओं से ही शक्ति मिलती है। किसी भी जीवंत और मजबूत राष्ट्र के निर्माण में महिलाओं का योगदान महत्वपूर्ण है। महिलाओं की राजनैतिक भागीदारी से लोकतंत्र की जड़ें मजबूत होती है।

आज जरूरत है कि समाज में महिलाओं को अज्ञानता, अशिक्षा, कूपमंडूकता, संकुचित विचारों और रूढ़िवादी भावनाओं के गर्त से निकालकर प्रगति के पथ पर ले जाने के लिए उसे आधुनिक घटनाओं, ऐतिहासिक गरिमामयी जानकारी और जातीय क्रियाकलापों से अवगत कराने के लिए उसमे आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक, राजनैतिक चेतना पैदा करने की। जिससे की नारी पुरुषों के साथ कंधे से कन्धा मिलाकर समाज को आगे बढ़ाने में सहयोग कर सके। साथ-साथ आज जरूरत है कि समाज की जितनी भी रूढ़िवादी समस्याएं हैं हमें उनका समाधान खोजते हुए हठधर्मिता त्याग कर शैक्षिक, सामाजिक, सोहद पूर्ण, व्यावसायिक और राजनैतिक चेतना का मार्ग प्रशस्त करते हुए महिलाओं के सामाजिक उत्थान का संकल्प लेना चाहिये। क्योंकि हजारों मील की यात्रा भी एक पहले कदम से शुरू होती है।

सही मायने में महिला दिवस तब सार्थक होगा जब असलियत में महिलाओं को वह सम्मान मिलेगा जिसकी वे हकदार हैं। इसके साथ ही समाज को संकल्प लेना चाहिए कि भारत में समरसता की बयार बहे, भारत के किसी घर में कन्या भ्रूण हत्या न हो और भारत की किसा भी बेटी को दहेज के नाम पर न जलाया जाये। विश्व के मानस पटल पर एक अखंड और प्रखर भारत की तस्वीर तभी प्रकट होगी जब हमारी मातृशक्ति अपने अधिकारों और शक्ति को पहचान कर अपनी गरिमा और गौरव का परिचय देगी और राष्ट्र निर्माण में अपनी प्रमुख भूमिका निभाएंगी।

ब्लड शुगर का सटीक अनुमान लगाएगा भारत का यह एआई मॉडल

2045 तक भारत में 12.4 करोड़ शुगर के मरीज होने का अनुमान है. ऐसे में डायबिटीज का पूवार्नुमान लगाने के लिहाज से एनआईटी राउरकेला के रिसर्चरों के एआई पर आधारित नए शोध से उम्मीदें जगी हैं

आजकल आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के द्वारा जीवन के पहलुओं को बेहतर बनाने के लिए हर रोज नए शोध किए जा रहे हैं। इस क्रम में मधुमेह रोगियों के लिए राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) राउरकेला में भी एक शोध किया गया है। इस शोध में एआई की मदद से मधुमेह के स्तर का पूवार्नुमान लगाने की कोशिश की जा रही है, जिसमें शोधार्थियों को प्रारंभिक सफलता भी मिली है।

अकसर एक बार डायबिटीज का पता चल जाने पर किसी इंसान को जिंदगी भर दवाइयों पर निर्भर रहना पड़ता है। हालांकि इसके लिए जीवनशैली में बदलाव समेत कई अन्य उपायों से ठीक करने के दावे किए जाते रहे हैं, फिर भी अब तक शुगर के स्तर का भविष्य बताने में शोधार्थियों के दावे सटीक नहीं रहे हैं।

डेटासेट पर आधारित एप्लिकेशन

ओडिशा में स्थित एनआईटी राउरकेला के बायोटेक्नोलॉजी और मेडिकल इंजीनियरिंग विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर मिर्जा खालिद बेग ने अपनी टीम के साथ यह रिसर्च की है। उनका दावा है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से मधुमेह रोगियों के पहले के डेटा के आधार पर भविष्य में उनके शुगर स्तर का सटीक अनुमान लगाया जा सकता है। उनका मानना है कि डाक्टरों और इंजीनियरों के बीच समन्वय के जरिये ऐसी तकनीक स्थानीय मरीजों तक पहुंचायी जा सकती है।

क्या वाकई में डायबिटीज और वजन घटा सकता है गैस वाला पानी?

डीडब्ल्यू से बातचीत में प्रोफेसर खालिद बताते हैं, 'यह एक एप्लिकेशन पर आधारित रिसर्च है। अभी इस शोध का पहला चरण सफलतापूर्वक पूरा हो गया है। इसलिए हम इसके भविष्य को लेकर आशान्वित हैं। आगे चलकर इसका एक एप्लिकेशन लोगों के मोबाइल तक पहुंचाया जा

सकता है।'

वैसे तो पहले से ही लोगों के मोबाइल फोन में बहुत सारे हेल्थ एप्लिकेशन उपलब्ध है। जिसमें सेहत दुरुस्त रखने के उपाय शामिल होते हैं, लेकिन खालिद का कहना है कि डायबिटीज के लिए किसी भी एप्लिकेशन में सटीक जानकारी अब तक उपलब्ध नहीं हो पाई है। प्रोफेसर खालिद के मुताबिक, 'इस शोध का उद्देश्य हर व्यक्ति के लिए शुगर के स्तर का सटीक अनुमान लगाना और भविष्य में होने वाली परेशानियों को कम करना है।'

डायबिटीज के मरीजों के लिए चीनी से कितना बेहतर है एल्यूलोज?

भावी पीढ़ी को फायदा

प्रोफेसर खालिद के इस शोध को लेकर लखनऊ के क्लाउड नाइन हॉस्पिटल की निदेशक और प्रसूति विशेषज्ञ डॉ. ऋचा गंगवार का मत भी आशाजनक है। वह कहती हैं, 'इस तरह की तकनीक गर्भवती के लिए काफी फायदेमंद हो सकती है। गर्भवती में ब्लड शुगर का स्तर अधिक हो तो उसका असर उनके बच्चे पर भी पड़ता है। ऐसे में इस तरह की तकनीक का उपयोग भावी पीढ़ी को डायबिटीज और उससे होने वाले कॉम्प्लिकेशन से बचा सकता है।'

मधुमेह के रोगियों में टाइप- 1 डायबिटीज में इंसुलिन आवश्यक होती है। वहीं, टाइप- 2 डायबिटीज में इंसुलिन की आवश्यकता रोगी के ब्लड शुगर के स्तर पर निर्भर होती है। अगर कोई व्यक्ति इंसुलिन लेता है तो उसे अपनी डाइट के आधार पर इंसुलिन की मात्रा तय करनी पड़ती है। इसके लिए डॉक्टर मधुमेह रोगियों को निश्चित डाइट के बारे में भी बताते हैं। हालांकि डाइट और इंसुलिन की मात्रा हर व्यक्ति के लिए अलग-अलग होती है।

टाइप-1 मधुमेह से पीड़ित लोगों को आर्टिफिशियल पैंक्रियाज नामक डिवाइस दिया जाता है। ये डिवाइस मिनिमली इनवेसिव प्रक्रिया के तहत एक छोटी सी पिन के जरिए शरीर में लगा दी जाती है। इसमें एक ग्लूकोज मॉनिटर, एक इंसुलिन पंप और एक एल्गोरिदम होता है जो ब्लड शुगर के स्तर की निगरानी करता है और आवश्यकतानुसार इंसुलिन की खुराक देता है। प्रोफेसर खालिद ने डीडब्ल्यू को बताया, 'आर्टिफिशियल पैंक्रियाज के जरिए हर आधे से एक घंटे पर ग्लूकोज के स्तर को मॉनिटर किया जा सकता है और उसके आधार पर व्यक्ति खुद या डॉक्टर के परामर्श पर अपने इंसुलिन की अगली डोज को निश्चित मात्रा में तय कर सकता है।'

स्थानीय मरीजों के डेटा की जरूरत

इंडियन काउंसिल फॉर मेडिकल रिसर्च (आईसीएमआर) की 2023 की इंडिया बी रिपोर्ट के अनुसार, भारत में 11.4 फीसदी लोग डायबिटीज और 15.3 प्रतिशत लोग प्रीडायबिटीज स्तर पर हैं। एक अन्य रिपोर्ट के अनुसार, एक रिपोर्ट के अनुसार, 2045 तक भारत में 124.2 मिलियन मधुमेह रोगी हो सकते हैं।

दोगुने हो गए हैं डायबिटीज के मरीज, भारत में सबसे ज्यादा

मेडिकल जर्नल 'द लैंसेट' में प्रकाशित एक स्टडी के मुताबिक भारत में अनियंत्रित मधुमेह के मरीजों की संख्या सबसे ज्यादा है। इस अध्ययन के अनुसार, 2022 में दुनिया भर में लगभग 82.8 करोड़ लोगों में डायबिटीज पायी गई। इनमें से एक चौथाई यानी 21.2 करोड़ भारत में रहते हैं।

प्रोफेसर खालिद ने शोध के लिए ओहायो विश्वविद्यालय से मधुमेह रोगियों के डेटासेट का उपयोग किया है। इसके परिणाम काफी सटीक हैं। प्रोफेसर खालिद का कहना है कि इस तरह के शोध के लिए मधुमेह रोगियों के ग्लूकोज स्तर की लगातार निगरानी के बाद लिए गए डेटासेट की आवश्यकता पड़ती है। वे बताते हैं कि अगले चरण के लिए स्थानीय मरीजों के डेटासेट के साथ क्लिनिकल ट्रायल की शुरूआत की जा चुकी है। इसके लिए वे ओडिशा के एससीबी मेडिकल कॉलेज और अस्पताल में डॉक्टर जयंत पांडा और उनकी टीम के साथ कार्य कर रहे हैं। वे बताते हैं, ₹भारत में खानपान और जीवनशैली पश्चिमी देश की अपेक्षा पूरी तरह उलट है। ऐसे में स्थानीय मधुमेह रोगियों के डेटासेट का इस्तेमाल करना अधिक सटीक जानकारी दे सकता है।'

प्रीडायबिटिक लोगों के लिए भी ऐप जरूरी

प्रोफेसर खालिद का यह शोध प्रीडायबिटिक लोगों के लिए भी डायबिटीज से बचाव हेतु खान-पान में बदलाव और अन्य पहलुओं के लिहाज से सहायक हो सकता है। हालांकि उन लोगों पर अभी शोध करना बाकी है। प्रोफेसर खालिद का इस बारे में कहना है, 'हमारा ध्येय यही है कि अधिक से अधिक लोग अपने शरीर के बारे में सही जानकारी रख सकें और बीमारी से बचाव कर सकें।'

प्रोफेसर खालिद कहते हैं, 'क्लिनिकल ट्रायल्स काफी समय लेते हैं और इसमें लोगों की भी आवश्यकता होती है जो सामने से आकर इस शोध के लिए सहायक बन सकें। ऐसे में एप्लिकेशन के तैयार होने की निश्चित अवधि बता पाना थोड़ा मुश्किल है, लेकिन इस शोध को हम जल्द से जल्द अंतिम चरण तक लाने की कोशिश कर रहे हैं।'

ज्योतिष पर निर्भर है आयुर्वेद और चिकित्सा जगत

आजकल ज्योतिष विद्या इसे न मानने वालों के निशाने पर है। वे इस विषय में अनर्गल प्रवंचना के शिकार हैं। ज्योतिष क्षेत्र में भी बहुत से ऐसे लोग आ गए हैं, जो भयदोहन करके ज्योतिष विषयक भ्रम फैलाकर अपनी इच्छापूर्ति कर रहे हैं। जिससे यह पवित्र ब्रह्मविद्या लांछित हो रही है।

ज्योतिष को न मानने वाले इसे पाखण्ड कहें, झूठ कहें, धंधा कहें, जो कहें उनकी अपनी इच्छा है। क्योंकि किसी के कहने से सूर्य का प्रकाश कम नहीं होता। ज्योतिष सूर्य और चंद्रमा की विद्या है। इसे लांछित करना प्रज्ञापराध की श्रेणी में आता है। जिसका दंड स्वयं काल समय आने पर देता है। सनातन की परम्परा से अनादिकाल से प्रवाहित वैदिक ज्ञान के अनुसार ज्योतिष जीवन का महत्वपूर्ण भाग है।

सनातन, वैदिक, हिंदू संस्कृति और आर्य परंपरा, वेदों को मुख्य शास्त्र मानकर पूजती है। शास्त्रों ने वेदों के 6 अंग बताए हैं। जिन्हें शिक्षा, कल्प, निरुक्त, व्याकरण, ज्योतिष और छंद के रूप में जाना जाता है। शास्त्रों ने ज्योतिष को वेदों का नेत्र कहा है, जिसके साक्षी भगवान सूर्य और चंद्रमा हैं। हम सब ज्योतिष के उन सूत्रों का अनुसरण करते हैं, जिन्हें वेदों की ऋचाओं का गान करने वाले मंत्रदृष्टा ऋषियों ने लिखा है। ज्योतिष शास्त्र नक्षत्र आदि की स्थिति के अनुकूल या प्रतिकूल ग्रहों की गति की गणना का विज्ञान है । जिसके अठारह प्रवर्तक ऋषि कहे गए हैं।

सूर्यः पितामहो व्यासो वसिष्ठोऽत्रि पराशरः।
कश्यपो नारदो गर्गो मरीचिर्मनुरङ्गिराः।।
लोमशः पौलिशश्चैव च्यवनो यवनो भृगुः ।
शौनकोऽष्टादशश्चैते ज्योतिःशास्त्र प्रवर्तकः।।

सूर्य, ब्रह्मा, व्यास, वशिष्ठ, अत्रि, पराशर, कश्यप, नारद, गर्ग, मरीचि, मनु, अंगिरा, लोमश, पौलिश, च्यवन, यवन, भृगु तथा शौनकादि ऋषि ज्योतिषे शास्त्र के इन प्रवर्तक ऋषियों में लगभग सभी ने वेदों की ऋचाओं के ऋषियों के रूप में स्थान पाया है।

ज्योतिष को त्रिस्कन्ध कहा गया है। त्रिस्कन्ध ज्योतिष का व्याख्यान नारद संहिता में मिलता है, जिसके अन्तर्गत गणित, जातक (होरा) और संहिता का नाम जाना जाता है।

गणित स्कन्ध में परिकर्म (योग, अन्तर, गुणन, भजन, वर्ग, वर्गमूल, धन और धनमूल) ग्रहों के मध्यम और स्पष्ट करने की रीतियां बताई गई है, इसके अलावा अनुयोग (देश, दिशा और काल का ज्ञान), चन्द्रग्रहण, सूर्यग्रहण, उदय, अस्त, छायाधिकार, चन्द्रश्रृंगोन्नति, गहयुति (ग्रहों का योग) और पात महापात (सूर्य चन्द्र के क्रान्तिसाम्य) का विज्ञान है।

जातक स्कन्ध में राशिभेद, ग्रहयोनि (ग्रहों की जाति, रूप और गुण आदि), वियोनिज (मानवेतर-जन्मफल), गभार्धान, जन्म, अरिष्ट, आयुर्दाय, दशाक्रम, कमार्जीव (आजीविका), अष्टकवर्ग, योग, राशि शील, ग्रहदृष्टि, ग्रहों के भाव फल, स्त्रीजातकफल, निर्याण (मृत्यु समय का विचार), नष्ट जन्मविधान (अज्ञात जन्म समय जानने का प्रकार), तथा द्रेष्काणों (राशि के तृतीय भाग दस अंश) आदि विषयों का वर्णन किया गया है।

संहिता स्कन्ध में ग्रहचार (ग्रहों की गति), वर्ष

के लक्षण, तिथि, दिन, नक्षत्र, योग, करण, मुहूर्त, उपग्रह, सूर्य संक्रान्ति, ग्रहगोचर, चन्द्रमा और तारा बल, सम्पूर्ण लग्नो और ऋतुदर्शन का विचार, गभार्धानादि संस्कार, प्रतिष्ठा, गृहलक्षण, यात्रा, गृहप्रवेश, तत्कालवृष्टि ज्ञान, कर्मवैल्क्षण्य और उत्पत्ति का लक्षण, इन सबका विवरण दिया गया है।

ये सब वेदों का विषय है। कोई भी व्यक्ति, जो हिन्दू हो, स्वयं को सनातनी कहता हो, वैदिक कहता हो, आर्य मानता हो, उसे वेदों में उल्लिखित ज्योतिष को स्वीकारना ही होता है। क्योंकि ज्योतिष का उल्लेख वेदों में है। जब से सृष्टि की उत्पत्ति हुई है, तब से है। इसलिए जो ज्योतिष को नहीं मानता, वह वेद निंदक है। क्योंकि ज्योतिष वेदों का अंग है। आर्य भट्टीयम में कहा गया है कि ज्योतिष की निंदा करने वाले के यश और तप का नाश हो जाता है। यह सूर्य और चंद्रमा की प्रभा से दमकने वाली विद्या भूत वर्तमान और भविष्य का ज्ञान कराती है। किसी के न मानने से विद्या लोप नहीं हुआ करती। इस विद्या में इतनी शक्ति है कि गांव के आखिरी कोने में बैठा बिना किसी आधुनिक साधन से युक्त ज्योतिर्विद आपको गणना करके सूर्य और चंद्र ग्रहण की सटीक तिथि और समय पंचांग देखकर बता देता है। वही काम नासा करोड़ों रुपए खर्च करके बता पाता है।

ज्योतिष की कितनी उपादेयता है, यह अब बताने की आवश्यकता नहीं लगती। आज अब्रह्म अर्थात सनातन धर्म को न मानने वाले यहूदी, ईसाई और इस्लाम के अनुयायी भी ज्योतिष के प्रकांड विद्वान हो गए हैं। यही कारण है कि ज्योतिष को वैश्विक मान्यता है। पूरा संसार ज्योतिष को मानता है। यदि कोई व्यक्ति नहीं मानता हो तो यह शुतुरमुर्ग जैसी अवस्था है।

सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि शास्त्रों ने ज्योतिष (फलित) नक्षत्र विज्ञान (खगोल शास्त्र) और आयुर्वेद को एक माना है। अर्थात बिना ज्योतिष के आयुर्वेद हो ही नहीं सकता। क्योंकि आयुर्वेद के सभी ग्रंथों में ज्योतिष का प्रामाणिक उल्लेख है।

वस्तुतः ज्योतिर्विज्ञान (Astronomy), ज्योतिष (Astrology) और आयुर्वेद तीनों संयुक्त रूप से एक ही हैं। इन तीनों का विभाजन सनातन को कमतर करने की इच्छा से विदेशियों ने किया। लेकिन अब वे भी जान गए हैं कि झूठ अधिक दिन तक नहीं चलता, इसलिए उनके वैज्ञानिक अब इस तथ्य को स्वीकारने लगे हैं।

सूर्य, ब्रह्मा, व्यास, वशिष्ठ, अत्रि, पराशर, कश्यप, नारद, गर्ग, मरीचि, मनु, अंगिरा, लोमश, पौलिश, च्यवन, यवन, भृगु तथा शौनकादि ऋषि ज्योतिर्ष शास्त्र के इन प्रवर्तक ऋषियों में लगभग सभी ने वेदों की ऋचाओं के ऋषियों के रूप में स्थान पाया है।

यदि आयुर्वेद ग्रह नक्षत्रों पर आधरित न होता तो आयुर्वेद के ग्रंथों में यह उल्लेख न होता कि कौन सी औषधि किस मुहूर्त में ग्रहण करनी है और रोग किस नक्षत्र में प्रारंभ हुआ। रोगों का वर्गीकरण सर्वप्रथम ज्योतिष में ही आया। प्राणी के स्वास्थ्य की रक्षा और सभी प्रकार की आधिव्याधि से मुक्ति के लिए अनेक उपाय आयुर्वेद शास्त्रों में कहे गए हैं, जिनमें ज्योतिष के माध्यम से यज्ञ के द्वारा अध्यात्म दैवीय चिकित्सा को सर्वश्रेष्ठ बताया गया है और ग्रहों के उपाय के बिना किसी भी प्रकार की चिकित्सा को निष्प्रभावी बताया है। क्योंकि मानव को सुख अथवा दुख ग्रहों के अनुकूल और प्रतिकूल होने से ही प्राप्त होते हैं अतःसर्वप्रथम उन्हीं के उपचार का आदेश शास्त्र करता है। तंत्र कल्प के भैषज्य प्रकरण में महर्षि याज्ञवल्क्य कहते हैं कि

ग्रहेषु प्रतिकूलेषु नानुकूलं हि भेषजम।
ते भेषजानि वीर्याणि हरन्ति बलवन्त्यपि॥
प्रतिकृत्य ग्रहानादौ
पश्चात्कुर्याच्चिकित्सकम॥

अर्थात सूर्य आदि ग्रहों के प्रतिकूल होने पर औषध लाभदायक नहीं होती है, क्योंकि वे प्रतिकूल ग्रह औषधियों की बलवती शक्ति का हरण कर लेते हैं। अतः पहले ग्रहों की शांति कराए और बाद में चिकित्सा करानी चाहिए।

शास्त्रों के अनुसार कर्म के तीन भेद कहे गए हैं। वे हैं प्रारब्ध, संचित और क्रियमाण।

पाप कर्मगत प्ररब्ध के अनुसार मनुष्य कष्ट पाता है, रोग और दुःख का कारक होता है। जिसे जानने के लिए ज्योतिष महत्वपूर्ण विद्या है। ज्योतिष के फलित भाग में जन्म कुंडली आदि के अनुसार प्रारब्ध कथन करते हैं।

आयुर्वेद बिना भिषक अर्थात चिकित्सक के कार्य नहीं कर सकता। संस्कृत व्याकरण के अनुसार भिषक दो शब्दों से बना है। भेष या भिषः का अर्थ है ग्रह नक्षत्र और क का अर्थ है कृत्य अर्थात् कार्य करने वाला। ग्रहों के प्रकृति से सम्बंधित विशेषे कार्य को भिषक या वैद्य कहते हैं। ज्योतिष एवं आयुर्वेद एक दूसरे के पूरक हैं। प्राचीन काल में चिकित्सा शास्त्र और ज्योतिष शास्त्र, दोनों का ज्ञाता ही वैद्य होता था। आयुर्वेद के ग्रंथों, चरक संहिता, सुश्रुत संहिता आदि में इसका स्पष्ट उल्लेख है कि जो भी चिकित्सक आयुर्वेद पद्धति से उपचार करता है, उसे ज्योतिष का भी उत्तम ज्ञान होना चाहिये ।

उपचार के लिए प्रकृति को जानना आवश्यक है, क्योंकि प्रकृति वनस्पतियों की जननी है। जो औषधि का मूल तत्व है। कौन सी औषधि किस नक्षत्र की है और उसकी उपादेयता किस नक्षत्र में है, वह किस ग्रह का उपचार करती है। यह सब केवल ज्योतिष से ही जाना जा सकता है। क्योंकि उत्पत्ति से मृत्यु तक ग्रह नक्षत्रों का प्रभाव होता है। ऐसा शास्त्र कहते हैं। इसलिए औषधि ग्रहण करने का मुहूर्त और ग्रह नक्षत्रों की स्थितियां महत्वपूर्ण होती हैं।

योग-रत्नाकर में कहा है कि-

औषधं मंगलं मन्त्रो 'न्याश्च विविधाः क्रिया।
यस्यायुस्तस्य सिध्यन्ति न सिध्यन्ति गतायुषि।।

अर्थात् औषध, अनुष्ठान, मंत्र यंत्र तंत्रादि उसी रोगी के लिये सिद्ध होते हैं जिसकी आयु शेष होती है। जिसकी आयु शेष नहीं है, उनकी सब क्रियाएं निष्फल हो जाती हैं।

यद्यपि रोगी तथा रोग को देख-परखकर रोग की साध्यता-साध्यता तथा आसन्नमृत्यु आदि के ज्ञान हेतु आयुवेर्दीय ग्रन्थों में अनेक सूत्र दिये गए हैं परन्तु रोगी की आयु का निर्णय यथार्थ रूप में बिना ज्योतिष के संभव नहीं है। आयुर्वेद के अनुसार मानव देह एवं मन का विकार कफ, वात और पित्त, इन तीन कारकों पर निर्भर होता है और ज्योतिष शास्त्र में द्वादश राशि, नवग्रहों एवं सताईश नक्षत्रों का विशेष महत्व होता है । ज्योतिष में जन्म चक्र के तीन कारक लग्न, सूर्य तथा चन्द्रमा का अलग-अलग और परपर अंतःसंबंधों का विशलेषण मुख्य होता है । लग्न व्यक्ति के भौतिक देह, सूर्य आत्मिक देह और चन्द्रमा मन का कारक है । इन्हीं तीनों कारकों के विपरित होने पर नकारात्मक प्रभाव के रूप में हमारे शरीर में रोग उत्पन्न हो सकते हैं, वहीं इनके सकरारात्मक प्रभाव रोगों का शमन करते हैं।

गर्मी में शरीर को तरोताजा रखेंगे ये 3 मिल्क शेक

गर्मी के मौसम में चिलचिलाती धूप के कारण हमारा मन होता है कि कुछ हेल्दी और रिफ्रेशिंग हो जाए। ऐसे में अगर इस मौसम में स्वादिष्ट मिल्कशेक मिल जाए, तो मजा दोगुना हो जाता है। बच्चे हों या बड़े सभी मिल्कशेक पीना बेहद पसंद करते हैं, ऐसे में आप घर पर तरह-तरह के मिल्कशेक घर पर बनाकर सर्व कर सकती हैं। इन मिल्कशेक्स को बनाना बेहद आसान होता है, साथ ही इन्हें मिनटों में तैयार किया जा सकता है।

अगर आप कुछ रिफ्रेशिंग और हेल्दी ट्राई करना चहती हैं, तो आपको जाने-माने सेलिब्रिटी शेफ कविराज खियालानी की इन रेसिपीज को जरूर ट्राई करना चाहिए। तो देर किस बात की, चलिए सीखते हैं अलग-अलग तरह के मिल्कशेक तैयार करने की आसान विधि के बारे में...

मैंगो मस्ती मिल्कशेक

ताजा आम का गूदा-1 कप
किशमिश - 2 छोटी चम्मच कटी हुई
काजू - 2 छोटे चम्मच कटे हुए
ताजी क्रीम-2 चम्मच
बादाम कतरन - 1 छोटा चम्मच सजाने के लिए
खजूर- 2-3 कटा हुआ
दूध- 2 कप
वेनिला आइसक्रीम-1 स्कूप
शहद-1 चम्मच
अलसी/सूरजमुखी के बीज-1 चम्मच
पुदीने के पत्ते - 8-10 नहीं सजाने के लिए

बनाने का तरीका

मैंगो मस्ती मिल्क शेक बनाने के लिए सबसे पहले सभी सामग्रियों को तैयार कर लें।

इसके बाद एक ब्लेंडर लें और उसमें आम का गूदा, किशमिश, काजू, ताजी क्रीम, बादाम, खजूर, दूध, वेनिला आइसक्रीम, शहद, अलसी के बीज और पुदीने के पत्ते को आपस में मिलकर ब्लेंडर जार की मदद से ब्लेंड कर लें।

अब बनावट, स्वाद और आम के स्वाद के लिए शेक का स्वाद जांच लें।

आखिर में शेक को लंबे गिलासों में डालकर ठंडा-ठंडा सर्व करें।

इन आसान स्टेप्स के साथ आपकी शेक रेसिपी बनकर तैयार हो जाएगी।

बनाना मामा मिल्कशेक

केला प्रोटीन का बहुत बड़ा सोर्स होता है। इसलिए आप घर पर बनाना मिल्कशेक मिनटों में तैयार कर सकती हैं। ये इनटा टेस्टी होता है कि बच्चे इसे पीने में बल्कुल भी नखरे नहीं करेंगे।

सामग्री:

दूध- 2 कप
केला-1 बिना पका हुआ, कटा हुआ
चीनी-1 चम्मच
शहद-1 चम्मच
खजूर-2-3 कटा हुआ
काजू- 1 छोटा चम्मच कटा हुआ
वेनिला आइसक्रीम-1 स्कूप
मिश्रित मेवा/बीज- 1-2 चम्मच गार्निश के लिए
ताजी क्रीम-2 चम्मच
दही - 2 चम्मच

बनाने का तरीका

बनाना मामा शेक बनाने के लिए सबसे पहले जरूरी सामग्रियों को तैयार कर लें।

इसके बाद एक ब्लेंडर जार लें और उसमें केला,चीनी, शहद, काजू, खजूर,वेनिला आइसक्रीम, मेवा ताजी क्रीम, दही जैसी सभी सामग्रियों को मिलाएं और उन्हें एक अच्छे क्रीमी शेक के रूप में मथ लें। अब शेक की मिठास चेक करें और उसके अनुसार चीनी या शहद को बढ़ा लें। शेक में अच्छा पंच देने के लिए शेक में थोड़ा सा दालचीनी पाउडर मिलाएं।

इन आसान स्टेप्स के साथ आपका बनाना मामा शेक बनकर तैयार हो जाएगा, जिसे आप ठंडे सर्विंग ग्लास में डालकर सर्व करें।

चोकोहलिक मिल्कशेक

चॉकलेक लगभग हर उम्र के लोगों को पसंद होती हैं। ऐसे में आप घर चॉकलेटी मिल्कशेक बना सकती हैं।

सागग्री-

दूध/सोया दूध -2 कप
कोको पाउडर-1 छोटा चम्मच
शहद-1 चम्मच
ब्राउन शुगर-1 चम्मच
चॉकलेट आइसक्रीम-1 स्कूप
किशमिश - 2 छोटी चम्मच कटी हुई
दालचीनी पाउडर-1 चुटकी
ताजी क्रीम- 2-3 चम्मच
अखरोट- 2 टी-स्पून कटे हुए गार्निश के लिए
प्लेटिंग के लिए चॉकलेट सॉस के साथ व्हीप्ड क्रीम।

बनाने का तरीका

हेल्दी मिल्क शेक बनाने के लिए सबसे पहले सारी सामग्री को तैयार कर लें।

इसके बाद एक ब्लेंडर जाल लें और उसमें दूध, शहद, कोको पाउडर, किशमिश, दालचीनी पाउडर, ताजा क्रीम और अखरोट मिलाकर अच्छी तरह से ब्लेंड कर लें। आप स्वाद, टेक्सचर और अपनी पसंद के हिसाब अन्य ड्राई फ्रूट्स को ऐड भी कर सकती हैं।

इन सिंपल स्टेप्स के साथ आपका चॉकलेट मिल्कशेक बनकर तैयार हो जाएगा। जिसे आप लंबे गिलास में डालकर अच्छी तरह से सजा लें। सजावट के लिए आप शेक के ऊपर क्रीम, चॉकलेट सॉस, मेवा और बीज जैसी कई चीजों को गार्निशिंग के तौर पर इस्तेमाल कर सकती हैं।

बदलते मौसम में पेट की सेहत पर पड़ता है बुरा असर

बदलते मौसम का असर सेहत पर साफ नजर आता है। बदलते मौसम में लोग कई तरह की बीमारियों और संक्रमणों का शिकार हो सकते हैं।

धीरे-धीरे मौसम बदलना शुरू हो रहा है। आमतौर पर लोगों को बदलते मौसम में सर्दी-जुकाम जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। लेकिन बीमारियां सिर्फ जुकाम-बुखार तक सीमित नहीं होती है, बल्कि इस दौरान कई लोगों को पेट संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। बदलते मौसम में आपको पेट संबंधी समस्याएं भी हो सकती हैं। क्योंकि इन समस्याओं को गलत खानपान और अनहेल्दी लाइफस्टाइल से जोड़कर देखा जाता है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि बदलते मौसम के कारण पेट की सेहत पर कैसा असर होता है।

बदलते मौसम का पेट पर असर

हेल्थ एक्सपर्ट के मुताबिक बदलते मौसम में व्यक्ति को पेट संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। वहीं इन समस्याओं की मुख्य वजह डाइट और लाइफस्टाइल में बदलाव आना है। जैसे, सर्दियों में लोग पानी पीना कम कर देते हैं, जिसकी वजह से शरीर में डिहाइड्रेशन की समस्या हो सकती है। शरीर में पानी की कमी और कैलोरी युक्त खाने की वजह से ब्लोटिंग और अपच जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

पेट पर बुरा असर पड़ने के कारण

सर्दियों के मौसम में शरीर को गर्म रखने के लिए ब्लड का फ्लो पेट और आंतों में कम हो जाता है। जिसकी वजह से व्यक्ति को पाचन संबंधी समस्याएं हो सकती हैं। इसी तरह से गर्मी में शरीर को ठंडा रखने के लिए ब्लड फ्लो स्किन की तरफ बढ़ जाता है। ऐसे में पाचन तंत्र में ब्लड फ्लो कम होता है और भूख की कमी और मेटाबॉलिक रेट कम होने जैसी कई समस्याएं पैदा हो सकती हैं। वहीं बारिश के मौसम में वायरस और बैक्टीरिया बढ़ जाते हैं। ऐसे में खाने के जरिए बीमारी फैलाने वाले बैक्टीरिया हमारे शरीर के अंदर चले जाते हैं। पेट की समस्या से बचने के लिए करें ये काम-

पर्याप्त मात्रा में पानी पिएं

पेट संबंधी समस्याओं से बचने के लिए आपको पर्याप्त मात्रा में पानी पीना चाहिए। सर्दियों के मौसम में आप कम से कम 8-10 गिलास पानी पीना चाहिए। हालांकि यह मात्रा व्यक्ति की उम्र, वजन और शारीरिक गतिविधि पर भी निर्भर करता है।

डाइट का रखें ध्यान

बदलते मौसम में बाहर का तला-भुना और मसालेदार खाना नहीं खाना चाहिए। क्योंकि जंक फूड का असर सिर्फ आपके पेट ही नहीं बल्कि पूरी सेहत पर भी पड़ता है। इसलिए आपको घर का बना ताजा और पौष्टिक खाना खाना चाहिए।

एक्सरसाइज

बदलते मौसम में पेट की सेहत का ख्याल रखने के लिए आप एक्सरसाइज या योग का सहारा ले सकते हैं। व्यक्ति को फिट और हेल्दी रहने के लिए फिजिकल मूवमेंट करना जरूरी है। इसलिए आप रनिंग, वॉकिंग और योग जैसी एक्टिविटी को अपनी रूटीन का हिस्सा बना सकते हैं।

तनाव कम लें

भले ही आपको यह जानकर हैरानी हो कि तनाव बढ़ने की वजह से पेट की समस्याएं बढ़ती हैं। इसलिए अधिक स्ट्रेस लेने से बचना चाहिए। स्ट्रेस की वजह से व्यक्ति को पेट के साथ अन्य कई समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

फाइबर की मात्रा बढ़ाएं

अगर आप भी पेट की समस्याओं से बचना चाहते हैं, आपको अपनी डाइट में फाइबर की मात्रा बढ़ानी चाहिए। इससे वेट लॉस में भी मदद मिलेगी। साथ ही डाइट में फाइबर शामिल कर आप पेट संबंधी कई समस्याओं से खुद का बचाव कर सकते हैं। इसलिए आप डाइट में चावल, दालें, चने, गेहूं, जौं, बाजरा, राजमा, ब्रोकोली, स्प्राउट्स, पालक, गाजर, सेब, संतरे आदि शामिल कर सकते हैं।

असम के इन रमणीय स्थलों की करें सैर

फरवरी-मार्च का ऐसा महीना जहां सर्दी कम हो जाती है और घूमने के लिए सबसे बढ़िया समय है। अगर आप कहीं घूमने का प्लान बना रहे हैं, तो असम की इन 5 शानदार जगहों पर जरुर घूमने जाएं। आपकी ट्रिप बेहद मजेदार रहेगी।

घुमक्कड़ लोग घूमने के काफी शौकीन होते हैं। हर जगह घूमने के लिए कहीं न कहीं तैयार रहते है। वैसे फरवरी-मार्च का महीना घूमने और फिरने के लिए सबसे बढ़िया क्योंकि इस दौरान न ज्यादा सर्दी होती है और न गर्मी। अगर आप भी कहीं घूमने का प्लान बना रहे हैं, तो आप असम की इन जगहों पर जरुर घूमने जाएं। भारत के उत्तरपूर्वी कोने में स्थित, असम अपने मनोरम अनुभवों से यात्रियों को आकर्षित करता है।

खूबसूरत भारतीय राज्य प्राकृतिक दृश्य और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का सही मिश्रण पेश करता है। जिन लोगों को रोमांच पसंद हैं वे लोग प्राकृतिक सौंदर्य, जानवरों और कई वन्यजीव अभयारण्यों का दौरा कर सकते हैं। जो लोग शांति की तलाश में हैं, उनके लिए हरे-भरे चाय के बागान एक शांति प्रदान कर सकता है। असम के पांच सबसे लोकप्रिय स्थलों पर के बारे में बताते हैं।

हाफलोंग

हाफलोंग असम की सबसे खूबसूरत जगहों में से एक है जहां आप जा सकते हैं। यह राज्य का एकमात्र हिल स्टेशन है, जो समुद्र तल से 2300 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। हाफलोंग असम के दिमा हसाओ जिले में स्थित है। यह स्थान अपने खूबसूरत झरनों और जातीय आदिवासी गांवों के लिए जाना जाता है।

काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान

असम में सबसे लोकप्रिय स्थानों में से एक,

काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान गुवाहाटी से लगभग 194 किमी और डिब्रूगढ़ से 252 किमी दूर स्थित है। यह स्थान उन व्यक्तियों के लिए सबसे उपयुक्त है जो शहरी जीवन की हलचल से मुक्ति चाहते हैं और प्रकृति से जुड़ना चाहते हैं। काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान एक शांत स्थान है, जो चाय के बागानों और जंगलों से घिरा हुआ है।

मानस राष्ट्रीय उद्यान

मानस राष्ट्रीय उद्यान असम में एक और लुभावनी जगह है, जो गुवाहाटी से 140 किमी दूर स्थित है। हालांकि यह काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान जितना लोकप्रिय नहीं है, फिर भी यह स्थान एक असाधारण अनुभव का वादा भी करता है। पर्यटक पार्क के अंदर एक जंगली रिसॉर्ट में रुक सकते हैं और रात में पास के जंगली जानवरों की आवाज सुन सकते हैं।

गुवाहाटी

असम की वाणिज्यिक राजधानी, गुवाहाटी एक नदी तटीय शहर है जो कई प्राचीन मंदिरों से भरा हुआ है। असम राज्य संग्रहालय देखने से लेकर कामाख्या मंदिर की आध्यात्मिक यात्रा शुरू करने तक, गुवाहाटी में पर्यटकों के लिए कई एक्टिविटी कर सकते हैं।

शिवसागर

शिवसागर असम का एक और अद्भुत शहर है जो डिब्रूगढ़ से लगभग 82 किमी दूर स्थित है। यह ऐतिहासिक शहर अहोम राजवंश की पूर्व राजधानी होने की कई कहानियां समेटे हुए है। यहां पर कई ऐतिहासिक महल, तालाब और मंदिर हैं जिन्हें पर्यटक देख सकते हैं। शिवसागर में कुछ उल्लेखनीय स्मारकों में रंग घर, करेंग घर और तलातल घर शामिल हैं।

यूपी में पर्यटन विकास से खुल रहे रोजगार के नए अवसर

उप्र के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश अपनी ऐतिहासिक, धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहरों को संरक्षित कर पर्यटन के नए हब के रूप में अपनी पहचान बनाई है। यूपी आज दुनिया भर के पर्यटकों को आकर्षित कर रहा है। बीते वर्ष लगभग 65 करोड़ से अधिक पर्यटकों ने उत्तर प्रदेश के विभिन्न स्थलों का भ्रमण किया, जिससे यह देश के सबसे लोकप्रिय पर्यटन स्थलों में शामिल हो गया है। योगी सरकार ने धार्मिक पर्यटन को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाने के लिए कई योजनाओं को लागू किया है, जिससे प्रदेश में रोजगार और आर्थिक विकास को गति मिली है। उत्तर प्रदेश में अयोध्या, काशी और मथुरा जैसे प्रमुख धार्मिक स्थलों को विश्वस्तरीय पहचान दिलाने के लिए राज्य सरकार तेजी से कार्य कर रही है। अयोध्या में भव्य श्रीराम मंदिर के निर्माण के बाद से पर्यटकों की संख्या में जबरदस्त वृद्धि देखी गई है। वाराणसी में काशी विश्वनाथ कॉरिडोर परियोजना ने मंदिर परिसर को सुव्यवस्थित और भव्य बना दिया है, जिससे श्रद्धालुओं के लिए सुविधाएं बेहतर हुई हैं। मथुरा-वृंदावन में श्रीकृष्ण जन्मभूमि क्षेत्र को विकसित करने पर योगी सरकार जोर दे रही है, जिससे न केवल स्थानीय व्यापार को बढ़ावा मिला है, बल्कि हजारों लोगों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार के अवसर भी प्राप्त हुए हैं। सरकार ने इन क्षेत्रों में सड़क, परिवहन, रुकने की सुविधाएं और सुरक्षा व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए कई योजनाएं शुरू की हैं।

उप्र को मिल रहा स्वदेश दर्शन-2 योजना का लाभ

केंद्र सरकार की स्वदेश दर्शन-2 योजना के तहत नैमिषारण्य, प्रयागराज और महोबा को चुना गया है। नैमिषारण्य और प्रयागराज के विकास के लिए धनराशि स्वीकृत हो चुकी है जबकि महोबा के लिए शीघ्र स्वीकृति मिलने की संभावना है। प्रयागराज में कुंभ नगरी के रूप में इसकी पहचान और अधिक मजबूत होगी, जबकि नैमिषारण्य को आध्यात्मिक केंद्र के रूप में विकसित किया जाएगा। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा किए जा रहे पर्यटन विकास के कार्यों का सकारात्मक प्रभाव साफ नजर आ रहा है।

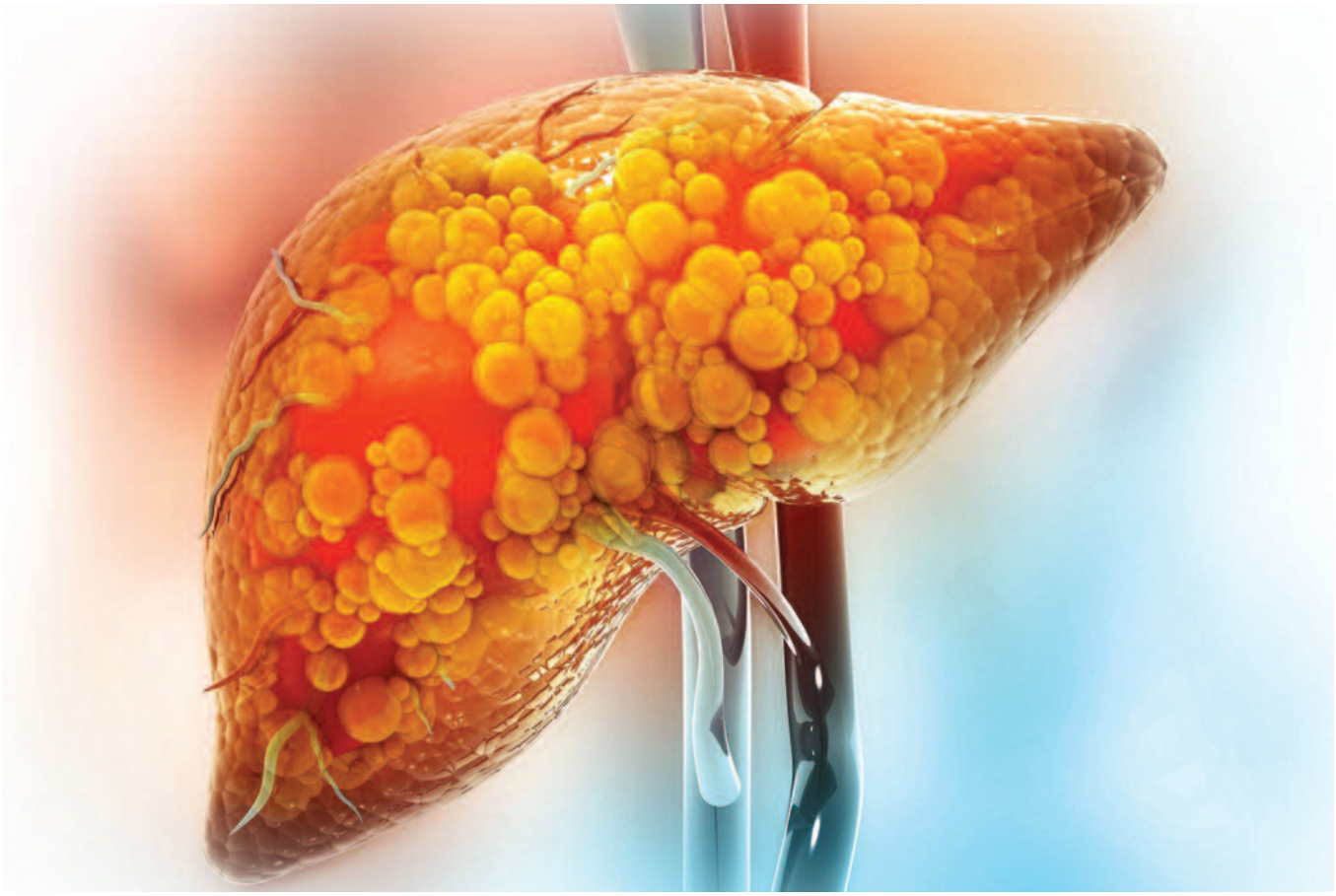

इन आदतों की वजह से हो सकते हैं फैटी लिवर के शिकार, आज से ही सही करें लाइफस्टाइल

डॉ. निमित त्यागी

हमें अपनी उन आदतों पर ध्यान देना चाहिए, जो फैटी लिवर का कारण बन सकता है। ऐसे में आज हम आपको उन आदतों के बारे में बताने जा रहे हैं, जिनकी वजह से फैटी लिवर की समस्या हो सकती है।

फैटी लिवर एक ऐसी समस्या है, जो आजकल युवाओं में काफी देखने को मिल रही है। लिवर से जुड़ी परेशानी होने पर लिवर में फैट इकट्ठा हो जाता है। जिस वजह से लिवर के फंक्शन प्रभावित होते हैं और समय पर इसका इलाज न करवाने पर लिवर सोरोसिस और लिवर स्कारिंग की समस्या हो सकती है। इसलिए हमें अपनी उन आदतों पर ध्यान देना चाहिए, जो फैटी लिवर का कारण बन सकता है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको उन आदतों के बारे में बताने जा रहे हैं, जिनकी वजह से फैटी लिवर की समस्या हो सकती है।

अनहेल्दी खाना

जंक फूड, ज्यादा शुगर, प्रोसेस्ड फूड्स और अनहेल्दी फैट की मात्रा खाने में अधिक होने की वजह से लिवर को काफी नुकसान पहुंचता है। यह फूड्स लिवर में फैट एकत्र करते हैं। जिसकी वजह से फैटी लिवर का खतरा अधिक बढ़ जाता है। इसलिए अगर आप पिज्जा, बेकन या चिप्स आदि अधिक खाते हैं, तो इसका सेवन कम कर दें। इसकी जगह आप साबुत अनाज, सब्जियां, फल, लीन प्रोटीन और दही आदि का सेवन कर सकते हैं। वहीं स्नैकिंग के लिए भी हेल्दी चीजों का

सेवन करें और पॉप कॉर्न, मूंगफली और ओट्स आदि खाएं।

आलस भरी लाइफस्टाइल

आजकल अधिकतर लोग गतिहीन लाइफस्टाइल जीते हैं। अधिक समय तक एक जगह पर बैठना, घर पर बैठे रहना और एक्सरसाइज आदि न करना, ये सभी आलस भरी जिंदगी के उदाहरण हैं। जिसकी वजह से लिवर को नुकसान पहुंच सकता है। इसलिए एक्टिव रहने का प्रयास करें और एक्सरसाइज करें। वहीं कहीं आने-जाने के लिए आप साइकिलिंग और वॉकिंग भी कर सकते हैं। वहीं लिफ्ट की जगह सीढ़ियों का इस्तेमाल करें।

मोटापा

अधिक वेट बढ़ने से पेट के आसपास अधिक फैट हो जाता है और यह भी फैटी लिवर का कारण हो सकता है। इसकी वजह से सूजन बढ़ती है और लिवर में फैट इकट्ठा होने लगता है। इसलिए हेल्दी वजन मेंटेन करना काफी ज्यादा जरूरी है। इसलिए प्रयास करें कि आपको वजन हेल्दी हो, इसके लिए आपको डाइट में सुधार और एक्सरसाइज करना जरूरी है।

शराब पीना

यह तो हम सभी जानते हैं कि शराब लिवर को कितना ज्यादा नुकसान पहुंचाती है। शराब पीने से लिवर में फैट इकट्ठा होने लगता है। जिसकी वजह से फैटी लिवर और यहां तक की लिवर कैंसर भी हो सकता है। इसलिए शराब का सेवन नहीं करना चाहिए।

अधिक मीठा खाना

बता दें कि चीनी आपके लिवर को काफी नुकसान पहुंचा सकती है। इसलिए अधिक चीनी वाला खाना खाने से फैटी लिवर होने का खतरा अधिक बढ़ जाता है। ऐसे में अगर आप पेस्ट्री, केक, चॉकलेट, कोल्ड ड्रिंक आदि अधिक खाते-पीते हैं, तो आपको इन फूड्स को छोड़कर हेल्दी खाने पर ध्यान देना चाहिए।

खाने का अनियमित समय

बहुत सारे लोग एक ही समय पर खाना नहीं खाते हैं। कई बार वह घंटों भूखे रहते हैं, तो कभी-कभी थोड़ी-थोड़ी देर पर कुछ न कुछ खाते रहते हैं। ऐसा करना आपके लिवर को नुकसान पहुंचा सकता है। अधिक देर तक खाना न खाने की वजह से आप ओवर ईटिंग करने लगते हैं। इसलिए अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखने के लिए आपको खाने का एक सही समय चुनना चाहिए।

डिजिटल लत और नशे की चुनौतियां: समाधान

आज हम देखते हैं कि कई अभिनेता और खिलाड़ी शराब और गुटखे के विज्ञापन करते हैं, जो युवाओं को गलत संदेश देते हैं। इसके अलावा, ड्रीम इलेवन और ऑनलाइन गेमिंग को भी इन लोगों के द्वारा प्रोत्साहित किया जा रहा है, जो युवाओं को रातोंरात करोड़पति बनने का सपना दिखाते हैं। यदि हमें युवाओं में मानवीय मूल्यों को बचाना है, तो पहले स्वयं को बदलना होगा। तभी हम दूसरों को बदलने का प्रयास कर सकते हैं। समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए हमें अपने आचरण और विचारों में सुधार करना होगा...

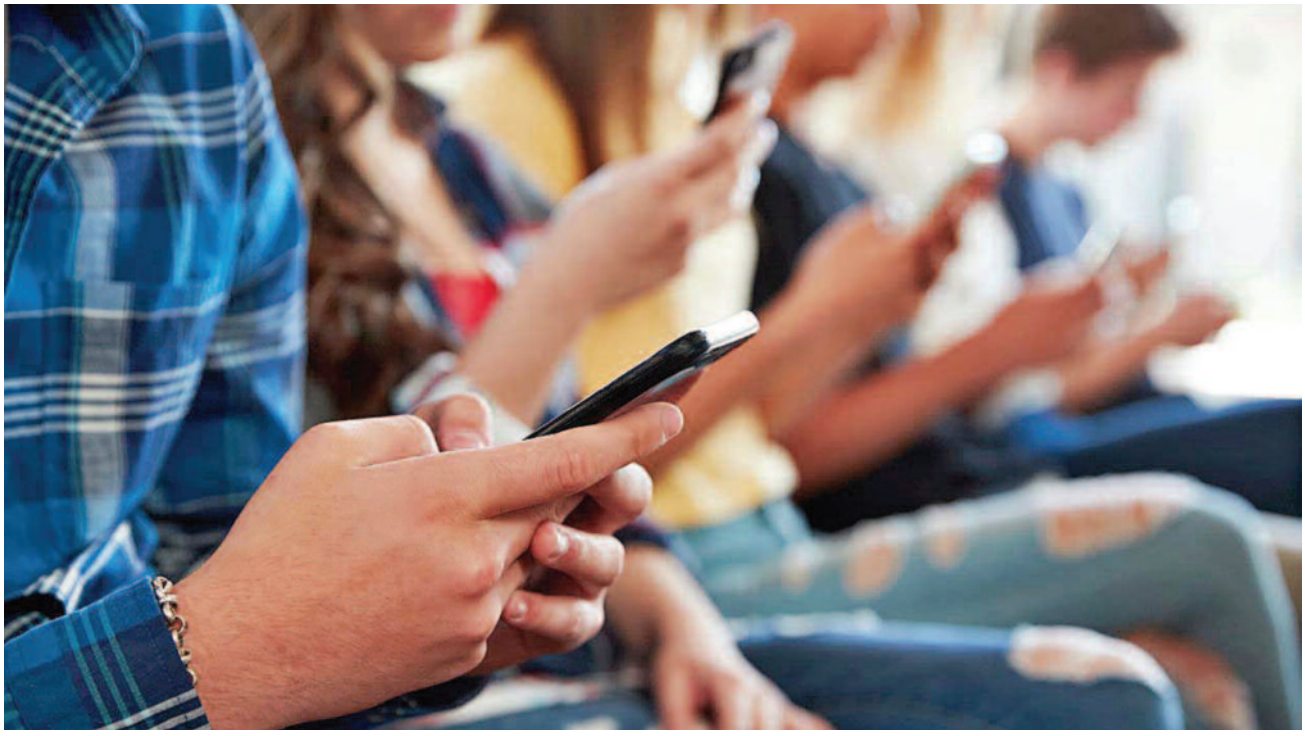

समाज में अन्याय के विरुद्ध लड़ने वाले लोग समाज के स्तंभ होते हैं। ये लोग समाज की सांस्कृतिक, धार्मिक और पारंपरिक दिशा निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। एक सुसंस्कृत समाज की कल्पना उसके सदस्यों के आचरण और मूल्यों पर निर्भर करती है। समाज में सुख-शांति और एकता बनाए रखने के लिए सहयोग और एकजुटता आवश्यक है। यही वह धागा है जो मानव समाज को बांधे रखता है और सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देता है। मनुष्य के स्वभाव में दया, करुणा, प्रेम, सहनशीलता, कृतज्ञता और मानवीय हास्य-मजाक जैसे गुण होने चाहिएं। ये गुण ही मानव जीवन को सार्थक बनाते हैं।

संजय बैंसला

मित्रता, विनम्रता, शिष्टाचार और दूसरों की परेशानियों के प्रति चिंता जैसे गुण सकारात्मकता और अपनेपन का संदेश देते हैं। ये अच्छाइयां ही समाज को रहने योग्य एक सुंदर स्थान बनाती हैं। लेकिन आज के समय में, विशेषकर युवाओं में, इन मानवीय गुणों का ह्रास होता जा रहा है। आज का युवा वर्ग नशे की गिरफ्त में आता जा रहा है। चाहे वह ड्रग्स का नशा हो या मोबाइल फोन और सोशल मीडिया की लत, यह समाज के लिए एक गंभीर समस्या बन गई है। हम सभी इस समस्या से चिंतित तो हैं, लेकिन इसका समाधान ढूंढने के लिए पर्याप्त प्रयास नहीं कर रहे हैं। अधिक धन कमाने के लालच में कुछ लोग युवाओं को नशे के जाल में फंसा रहे हैं, जो न केवल उनके भविष्य के लिए खतरनाक है, बल्कि पूरे समाज के लिए एक गंभीर चुनौती भी है। नशीली दवाओं की समस्या बहुआयामी है। यह केवल कानून और स्वास्थ्य तक सीमित नहीं है, बल्कि यह शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आर्थिक पहलुओं को प्रभावित करती है। इस समस्या को जड़ से खत्म करने के लिए केवल सरकार या पुलिस प्रशासन पर निर्भर

नहीं रहा जा सकता। इसे रोकने के लिए सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है, जिसमें पुलिस, समाज, परिवार और शिक्षण संस्थानों की समान भागीदारी हो। यदि सामाजिक स्तर पर सहयोग, अनुशासन और सही मार्गदर्शन दिया जाए, तो नशे की प्रवृत्ति को खत्म किया जा सकता है। खेलकूद और प्रतियोगिताओं के माध्यम से युवाओं को शारीरिक और मानसिक रूप से मजबूत बनाया जा सकता है, जिससे उन्हें नशे से दूर रहने की प्रेरणा मिलेगी। साथ ही, सरकार को युवाओं के लिए रोजगार के अवसर बढ़ाने चाहिए, क्योंकि बेरोजगारी भी नशे की ओर प्रेरित करने वाला एक प्रमुख कारक है। दूसरी गंभीर समस्या मोबाइल फोन और सोशल मीडिया का नशा है। आज का युवा वर्ग इस लत से बुरी तरह प्रभावित है। मोबाइल फोन के अत्यधिक उपयोग से स्वास्थ्य और सुरक्षा दोनों तरह के खतरे पैदा हो रहे हैं। स्वास्थ्य संबंधी खतरों में आंखों पर दबाव बढ़ना, एकाग्रता में कमी, तनाव और चिंता बढ़ना, मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव और अकेलेपन की भावना शामिल हैं। सुरक्षा के दृष्टिकोण से भी मोबाइल फोन के माध्यम से हैकिंग, निजी जानकारियों का लीक होना और अन्य साइबर अपराधों का खतरा बढ़ गया है। बच्चों के मस्तिष्क पर मोबाइल फोन का अधिक उपयोग और भी हानिकारक प्रभाव डालता है।

इसलिए, मोबाइल फोन के सावधानीपूर्वक उपयोग और निगरानी की आवश्यकता है। अभिभावकों को चाहिए कि वे बच्चों को डिजिटल साक्षरता के बारे में शिक्षित करें और उनके स्क्रीन टाइम को सीमित करें। अभी हाल में ही ऑस्ट्रेलिया और चीन ने बच्चों की स्क्रीन टाइम को सीमित करने के संबध में कानून बनाए हैं! भारत सरकार को भी इस दिशा में काम करना चाहिए! युवा वर्ग में मोबाइल की लत इतनी अधिक बढ़ गई है कि वे अपनी पढ़ाई-लिखाई को छोडकर घंटों सोशल मीडिया पर रील्स देखने और बनाने में व्यस्त रहते हैं। यह न केवल उनके शैक्षणिक प्रदर्शन को प्रभावित कर रहा है, बल्कि उनके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर भी गहरा असर डाल रहा है। हाल ही में एक समाचारपत्र में पढ़ा कि एक छात्रा ने मोबाइल फोन के उपयोग से रोके जाने के कारण आत्महत्या कर ली। यह घटना हमें समाज के एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में सोचने पर मजबूर करती है कि क्या हम अपने युवाओं को सही दिशा दे पा रहे हैं? यह समय है कि हम इस गंभीर समस्या पर गंभीरता से विचार करें और युवाओं को डिजिटल दुनिया के सही और गलत के बीच अंतर समझाने का प्रयास करें।

हमारे समाज में बुराइयां बढ़ती जा रही हैं, लेकिन सतर्कता, जागरूकता, अनुशासन, संयम और अच्छी संगत ही हमें इनसे बचा सकती है। समाज में कुछ पेशेवर लोगों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है, जैसे कि अध्यापक, नेता, खिलाड़ी और अभिनेता। यदि ये लोग अपनी आचार संहिता को भूल जाएं, तो समाज पर इसका बुरा प्रभाव पड़ता है। आज हम देखते हैं कि कई अभिनेता और खिलाड़ी शराब और गुटखे के विज्ञापन करते हैं, जो युवाओं को गलत संदेश देते हैं। इसके अलावा, ड्रीम इलेवन और ऑनलाइन गेमिंग को भी इन लोगों के द्वारा प्रोत्साहित किया जा रहा है, जो युवाओं को रातोंरात करोड़पति बनने का सपना दिखाते हैं। यदि हमें युवाओं में मानवीय मूल्यों को बचाना है, तो पहले स्वयं को बदलना होगा। तभी हम दूसरों को बदलने का प्रयास कर सकते हैं। समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए हमें अपने आचरण और विचारों में सुधार करना होगा। केवल तभी हम एक बेहतर और सुसंस्कृत समाज का निर्माण कर सकते हैं। हिमाचल की बात करें, तो यहां चिट्टे का जाल बहुत तेजी से फैलता जा रहा है। छात्रों, अभिभावकों, सामाजिक संगठनों और सरकार-विपक्ष को मिलकर इसे रोकना होगा।

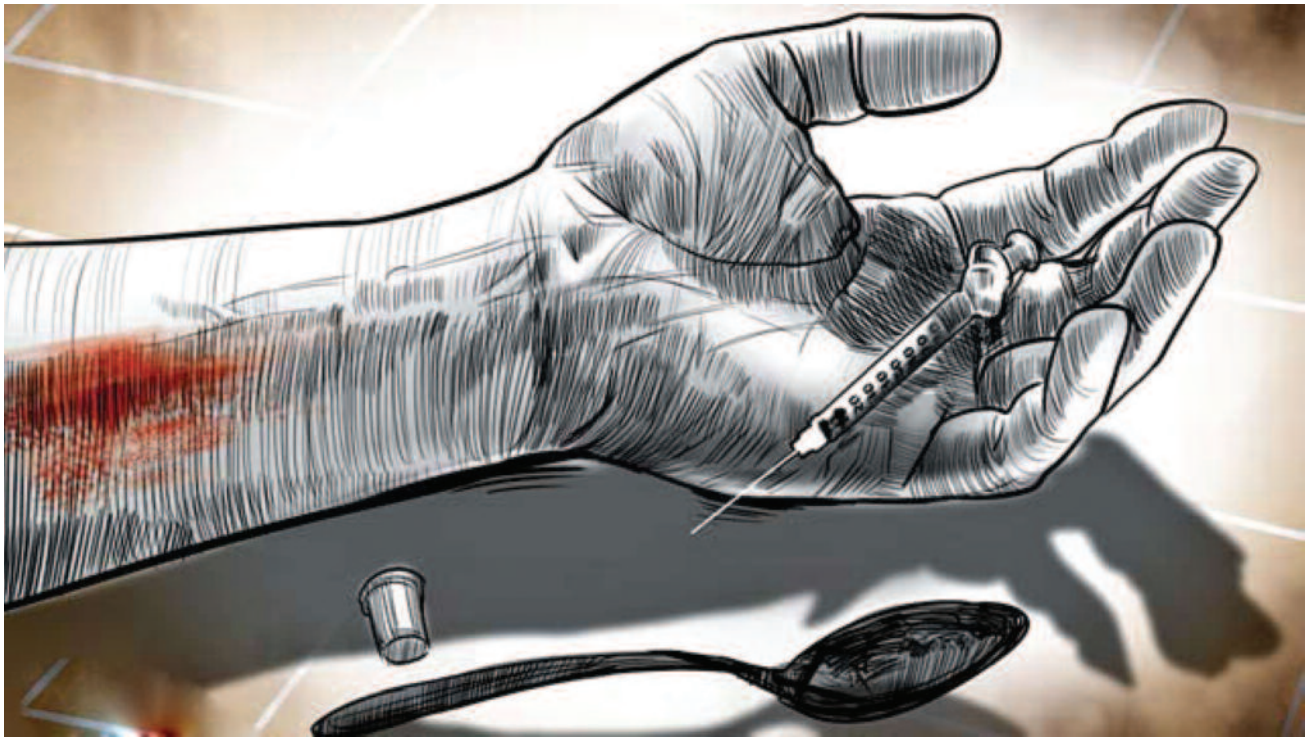

आकांशा गर्ग

साउथ से लेकर बॉलीवुड तक जलवा है रश्मिका मंदाना का

रश्मिका ने अपने अभिनय करियर की शुरूआत साल 2016 में कन्नड़ फिल्म 'किरिक पार्टी' से किया था। ये फिल्म बॉक्स ऑफिस पर हिट रही थी। इसके बाद रश्मिका ने साल 2018 में 'चालो' फिल्म के साथ अपना तेलुगु डेब्यू किया और उसी साल उन्होंने रोमकॉम फिल्म 'गीता गोविंदम' में अभिनय किया।

रश्मिका मंदाना की गिनती न सिर्फ साउथ बल्कि हिंदी सिनेमा के भी टॉप एक्ट्रेस में होती है। साउथ में एक के बाद कई सफल फिल्में देने के बाद रश्मिका बॉलीवुड के दर्शकों को अपना दीवाना बना रही है। बीते साल रश्मिका संदीप रेड्डी वांगा की फिल्म 'एनिमल' में नजर आईं थी। फिल्म में रश्मिका रणबीर कपूर के अपोजिट नजर आईं थी। लेकिन रश्मिका के लिए यह सफर इतना आसान नहीं था। चलिए आपको अभिनेत्री के फिल्मी सफर के बारे में बताते हैं।

रश्मिका मंदाना का जन्म 5 अप्रैल 1996 को कर्नाटक के कुर्ग में हुआ था। रश्मिका के पिता का उनके शहर में ही एक छोटा बिजनेस था। एक समय ऐसा भी था जब रश्मिका की परिवार के पास उनके लिए खिलौने खरीदने के भी पैसे नहीं थे। घर का किराया देने के लिए भी काफी संघर्ष करना पड़ता था। रश्मिका का बचपन गरीबी और काफी संघर्ष में बीता था।

एक साक्षात्कार में रश्मिका ने बताया था कि जब उन्होंने एक्टिंग में करियर बनाने का सोचा तो

उनकी फैमली और पेरेंट्स का सपोर्ट नहीं मिला था। फिल्मों में अभिनय को वे मर्दों का क्षेत्र मानते थे। हालांकि, बाद में रश्मिका ने अपने माता-पिता को समझाया और फिर वे मान गए। आज रश्मिका के इस फैसले को लेकर उनके माता-पिता को बेटी पर खूब गर्व महसूस होता है।

रश्मिका ने अपने अभिनय करियर की शुरूआत साल 2016 में कन्नड़ फिल्म 'किरिक पार्टी' से किया था। ये फिल्म बॉक्स ऑफिस पर हिट रही थी। इसके बाद रश्मिका ने साल 2018 में 'चालो' फिल्म के साथ अपना तेलुगु डेब्यू किया और उसी साल उन्होंने रोमकॉम फिल्म 'गीता गोविंदम' में अभिनय किया। 'गीता गोविंदम' तेलुगु सिनेमा में ब्लॉकबस्टर साबित हुई, जिससे रश्मिका को खूब लोकप्रियता मिली।

इसके बाद अल्लू अर्जुन स्टारर पुष्पा ने रश्मिक को करियर को और ऊंचाई दी। साउथ सिनेमा में जबर्दस्त सफलता हासिल करने के बाद रश्मिका को बॉलीवुड में दर्शकों को प्यार मिला। उन्होंने फिल्म गुडबाय से हिंदी सिनेमा डेब्यू किया. इसके बाद वे सिद्धार्थ मल्होत्रा के साथ मिशन मजनू में नजर आईं। साल 2023 में फिल्म एनिमल में उनके किरदार को खूब सराहा गया। अपने आठ साल के करियर में रश्मिका इंडस्ट्री की सबसे अधिक फीस चार्ज करने वाली अभिनेत्रियों में शुमार हो गईं। रश्मिका कई फिल्में बॉक्स ऑफिस पर रिलीज के लिए लाइन-अप जिसका दर्शक बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं।

सलमान के साथ 'सिकंदर' में दिखेगी रश्मिका की केमिस्ट्री

ए आर मुरुगादॉस द्वारा लिखित, निर्देशित और नाडियाडवाला ग्रैंडसन एंटरटेनमेंट द्वारा निर्मित इस साल की मोस्ट अवेटेड फिल्मों में से एक 'सिकंदर' को लेकर लोगों के बीच अच्छा खासा क्रेज बना हुआ है। इस मूवी में सलमान खान और रश्मिका मंदाना की जोड़ी फैंस को देखने को मिलने वाली हैं और ऐसा पहली बार होगा, जब लोगों को पहली बार बड़े पर्दे पर इनकी केमिस्ट्री देखने को मिलेगी। ऐसे में हर कोई उन्हें देखने के लिए उत्साहित है और अब दर्शकों की इसी एक्साइटमेंट को बढ़ाते हुए मेकर्स ने फिल्म का ट्रेलर लॉन्च कर दिया है।

बता दें कि 'सिकंदर' फिल्म के मेकर्स ने इसका ट्रेलर जारी करने से पहले अभी तक मूवी के 2 टीजर और तीन गाने रिलीज कर दिए हैं, जिन्हें लोगों से खूब प्यार मिला। इसके अलावा सलमान खान के भी फिल्म से कई अवतार सामने आ चुके हैं, जिसमें उनका एक्शन लुक देखने को मिला। चलिए अब जानते हैं कि फिल्म का ट्रेलर कैसा है।

क्या दिखाया गया है ट्रेलर में?

3 मिनट 37 सेकंड के इस ट्रेलर की शुरूआत 'वांटेड' पर्चों के साथ होती है और आवाज आती है कि पिछले 5 साल में 49 केस पेंडिंग है। इसके बाद सलमान खान की धांसू एंट्री देखने को मिलती है। फिर राशिका आती हैं और कहती हैं कि जब देखो किसी न किसी का मुंह तोड़ के घर चले आते हैं। कुल मिलाकर इस ट्रेलर में आपको सलमान-रश्मिका की केमिस्ट्री, एक्टर का मसीहा बनना और जबरदस्त एक्शन समेत सब कुछ देखने को मिल जाएगा। ऐसे में यह कहना गलत नहीं होगा कि कुछ ही मिनटों में आपको फिल्म की पूरी झलक देखने को मिल जाएगी।

'सिकंदर' का ट्रेलर देखने के बाद लोगों ने इस पर अपना-अपना रिएक्शन देना शुरू कर दिया है। एक यूजर ने लिखा कि सलमान भाई ब्लॉकबस्टर। एक अन्य ने लिखा कि आग लगा देगा सिकंदर। कुल मिलाकर लोगों को ट्रेलर पसंद आ रहा है।

भारतीय टीम ने लिखी नई इबारत 12 साल बाद जीती चैम्पियंस ट्रॉफी

वैसे तो पिछला चैम्पियन होने के नाते पाकिस्तान इस टूनार्मेंट का मेजबान था लेकिन भारत ने अपने सभी मैच दुबई में खेले। चूंकि सुरक्षा कारणों से भारत ने पाकिस्तान में जाकर मैच खेलने से इनकार कर दिया था, इसलिए एक समझौते के तहत भारतीय टीम ने अपने मैच दुबई में खेलना स्वीकार किया।

हरेन्द्र शर्मा

12 साल बाद चैम्पियंस ट्राफी में भारत की विजय ने क्रिकेट इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ दिया है। 2017 में पाकिस्तान ने फाइनल में भारत को हरा दिया था। इससे पहले 2013 में भारत ने यह खिताबी मुकाबला जीता था। तब धोनी की कप्तानी में भारत ने इंग्लैंड को फाइनल में हराया था। 2002 में भारत और श्रीलंका संयुक्त विजेता बने थे। इस तरह भारत ने रविवार को तीसरी बार आईसीसी की यह ट्राफी अपने नाम की है। इस विजय से विश्व कप-2023 में अपने ही घर में ऑस्ट्रेलिया से मिली पराजय का गम भी कम हो गया है। भारत ने बिना कोई मैच हारे सभी मैच में जीत दर्ज की है। सेमी फाइनल में ऑस्ट्रेलिया को हरा कर उसका दंभ भी हमने तोड़ दिया जो उसकी टीम ने विश्व कप के फाइनल में अहमदाबाद में दिखाया था। कंगारू टीम का मानमर्दन करके पूरी टीम इंडिया ने कमाल का प्रदर्शन किया है। पाकिस्तान के खिलाफ मैच का रोमांच तो सिर चढ़ कर बोलता है। और, इस बार भी हमारी टीम ने उसे हराकर अच्छा सबक सिखाया है। वैसे तो पिछला चैम्पियन होने के नाते पाकिस्तान इस टूनार्मेंट का मेजबान था लेकिन भारत ने अपने सभी मैच दुबई में खेले। चूंकि सुरक्षा कारणों से भारत ने पाकिस्तान में जाकर मैच खेलने से इनकार कर दिया था, इसलिए एक समझौते के तहत भारतीय टीम ने अपने मैच दुबई में खेलना स्वीकार किया। पाकिस्तान की दिली इच्छा थी कि भारत की टीम उसके देश में आए। उसने तर्क दिया कि हम विश्व कप के मैच खेलने 2023 में भारत गए थे तो भारत को पाकिस्तान आने में क्या दिक्कत है? मगर, भारत सरकार ने अपनी टीम को वहां जाने की अनुमति नहीं दी। दरअसल, पाकिस्तान हमेशा आतंकी हमलों का शिकार होता रहा है। लगभग दस साल तक उसके यहां कोई विदेशी टीम खेलने नहीं गई। फिर भारत को लेकर तो वहां ज्यादा ही कटुता है। इन्हीं कारणों से भारत ने वहां जाने से

इनकार कर दिया।

दुबई में पहले भी भारत खेल चुका है। वहां दर्शकों का भरपूर समर्थन टीम इंडिया को मिलता है। कोविड के समय अरब देश में आईपीएल का आयोजन भी हो चुका है। तटस्थ देश के रूप में भारत और पाकिस्तान के लिए यह मुफीद जगह है। मगर, दुबई के स्टेडियम में इस बार स्पिन गेंदबाजी ने बल्लेबाजों को नचा दिया। भारतीय टीम में जब पांच स्पिन गेंदबाजों को चुना गया तो लोग हैरान थे। पिच का स्वभाव देख कर ही भारत ने शुरू के दो मैचों के बाद अपने एकादश में चार स्पिनर रख लिये। यह निर्णय तुरुप का इक्का साबित हुआ। न्यूजीलैंड के खिलाफ लीग मैच में वरुण चक्रवर्ती ने पांच विकेट लेकर इस निर्णय को सही साबित कर दिया। भारत की स्पिन चौकड़ी अक्षर पटेल, रवींद्र जडेजा, कुलदीप यादव और वरुण ने विपक्षी टीमों के इर्द गिर्द ऐसा जाल बुन दिया जिसमें वे फंसते चले गए।

आमतौर पर 50 ओवर के मैच में चार स्पिनर नहीं खिलाए जाते हैं। लेकिन भारत का प्रयोग बेहद सफल रहा। फाइनल मैच में भी कुलदीप ने रचिन रवींद्र और विलियमसन को जल्द आउट करके न्यूजीलैंड की कमर तोड़ दी। अगर ये दोनों टिक जाते तो बड़ा स्कोर बना लेते, फिर भारत के सामने कठिन चुनौती पेश हो जाती। वरुण ने तीन मैचों में 9 विकेट लेकर अपनी उपयोगिता साबित कर दी है। वहीं, अक्षर पटेल ने आलराउंडर की भूमिका में खुद को फिट कर लिया है।

बल्लेबाजी क्रम में अक्षर को ऊपर भेजने का बहुत लाभ मिला। उसका योगदान हमेशा याद किया जाएगा। मध्य क्रम में श्रेयस अय्यर ने प्रभावशाली प्रदर्शन करके टीम को मजबूती दी। शुभमन गिल ने बांग्लादेश के खिलाफ तो विराट कोहली ने पाकिस्तान के खिलाफ शतक बनाया। केएल राहुल की नाकामी से सभी चिंतित थे, पर सेमी फाइनल और फाइनल मैच के दौरान उसे यह दाग धो दिया। हार्दिक पांड्या ने बड़े शाट लगाकर लक्ष्य को आसान बना दिया। इस तरह सभी के योगदान से यह जीत मिली है। किसी एक खिलाड़ी को इसका श्रेय देना उचित नहीं होगा।

फाइनल मुकाबले में 252 रन का लक्ष्य बहुत बड़ा नहीं था पर, न्यूजीलैंड की टीम ने अपनी शानदार फील्डिंग से इसे मुश्किल बना दिया। भारत को कुछ विकेट फालतू में गंवाने पड़े वर्ना आसानी से जीत मिल जाती। क्रिकेट के खेल में कब क्या हो जाए कोई नहीं जानता। कप्तान रोहित और गिल के बीच सौ रन की ओपनिंग साझेदारी के बाद हालात कैसे बदल गए यह हम सबने देखा। 'चेज मास्टर' कहे जाने वाले विराट कोहली एक रन बना

भारत ने बिना कोई मैच हारे सभी मैच में जीत दर्ज की है। सेमी फाइनल में ऑस्ट्रेलिया को हरा कर उसका दंभ भी हमने तोड़ दिया जो उसकी टीम ने विश्व कप के फाइनल में अहमदाबाद में दिखाया था।

कर चलते बने। न्यूजीलैंड की टीम ने चुस्त क्षेत्ररक्षण से भारत को रनो के लिए तरसा दिया। यह वही टीम है जिसने वर्ष 2000 की चैम्पियन ट्राफी के फाइनल में भारत को पराजित कर दिया था। तब इसका आयोजन केन्या में हुआ था।

कप्तान रोहित शर्मा ने लगातार दो आईसीसी ट्राफी जीत कर आलोचकों को जवाब दे दिया है। आपको बता दें कि पिछले साल जून में उनकी टीम ने देश को टी-20 विश्व कप दिलाया था। दुबई में यह अफवाह भी उड़ी कि रोहित वनडे प्रारूप से संन्यास लेने जा रहे हैं। मगर, उन्होंने खुद इसका खंडन कर दिया। उम्मीद करनी चाहिए कि विश्व कप-2027 तक वह भारत की ओर से खेलते रहेंगे। आस्ट्रेलिया में बार्डर-गावसकर ट्राफी के दौरान टेस्ट मैचों में बेहद खराब प्रदर्शन के कारण रोहित पर सवाल उठे थे। मगर, इस जीत ने उस पर पर्दा डाल दिया है।

पूरी टीम एकजुट होकर खेली तभी इतनी बड़ी कामयाबी मिली है। आज पूरा देश गर्व कर रहा है। टीम के मुख्य कोच गौतम गंभीर के लिए भी यह 'विराट विजय' राहत पहुंचाने वाली है। पिछले साल न्यूजीलैंड से घरेलू टेस्ट सीरीज और ऑस्ट्रेलिया में मिली करारी पराजय के बाद गंभीर की कार्यशैली पर सवाल उठाए जा रहे थे। अगली चुनौती इंग्लैंड में टेस्ट सीरीज है। आईपीएल के बाद टीम इंडिया को इंग्लैंड जाना है। देखना होगा कि वहां भारत का प्रदर्शन कैसा रहता है।

HET

Once You
Buy The

Solar

The Power is Free

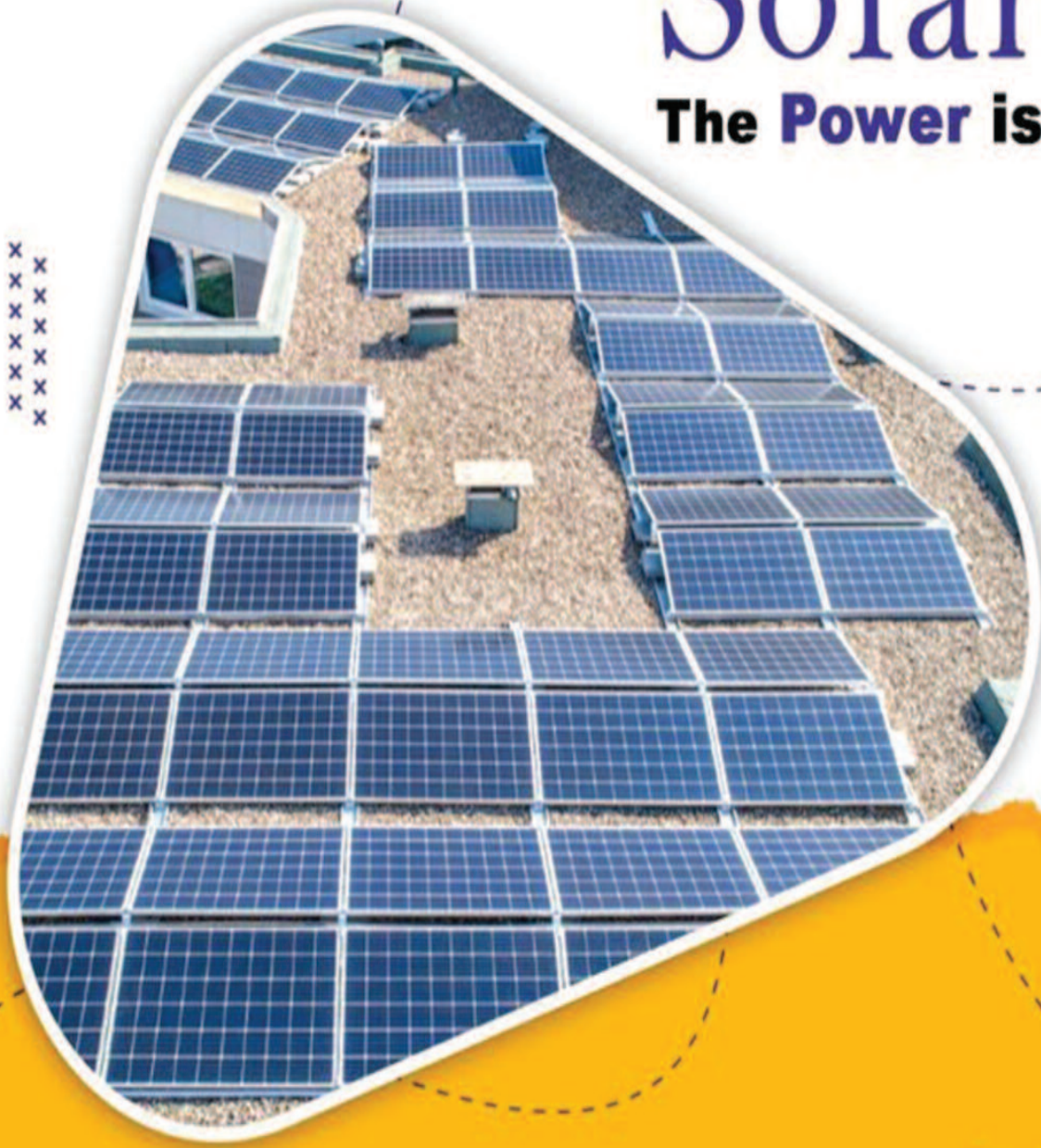

Harshita Electro & Telecom Pvt. Ltd.

SOLAR ON-GRID ROOFTOP SOLUTIONS | OFF GRID SOLAR SYSTEM
HYBRID SOLAR SYSTEM

Office : GF-135, Durga Tower, RDC, Raj Nagar, Ghaziabad.
Phone : 9891116568, 9891116569, 9899562233

NABCB
QMS 008
AN ISO 9001 -2000 COMPANY

IS:8931

CM/L-3228449

supreme
luxury bathing

Assuring Excellence in Bath Faucets

SHANTI NATH MANUFACTURERS
A-2/14, Sector-17, Kavi Nagar, Industrial Area, Ghaziabad-201002 (U.P.)
Website: www.shantinathsupreme.com; E-mail: snmsupreme@gmail.com
Toll Free No.: 18001035266; Mob.: 8860638266

सोलर रूफटॉप लगवाएं

आकर्षक अनुदान एवं बिजली बिल में राहत पाएं

टोल फ्री नं0 **155243**
सोलर रूफटॉप की स्थापना/ जानकारी एवं किसी भी समस्या के लिए संपर्क करें।

पीएम सूर्य घर : मुफ़्त बिजली योजना

योजना के अंतर्गत 300 यूनिट मुफ़्त बिजली

संयंत्र की क्षमता	केंद्र सरकार का अनुदान (रु.)	राज्य सरकार का अनुदान (रु.)	कुल अनुमन्य अनुदान (रु.)
1 KW	30,000	15,000	45,000
2 KW	60,000	30,000	90,000
3 KW	78,000	30,000	1,08,000
4 KW	78,000	30,000	1,08,000
5 KW	78,000	30,000	1,08,000

- प्लांट की अनुमानित लागत ₹60,000 प्रति किलोवाट।
- सोलर पैनलों की कार्य क्षमता अवधि लगभग 25 वर्ष।
- 3 KW का प्लांट मात्र ₹1800/- की आसान ईएमआई पर लगवाएं।
- मात्र 7% की ब्याज दर पर बैंक लोन।
- सोलर प्लांट कमीशनिंग के उपरांत सब्सिडी डी.बी.टी. द्वारा सीधे लाभार्थी के खाते में।
- बिजली बिल में दो तिहाई तक की बचत।
- यूपीनेडा में पंजीकृत वेंडर के माध्यम से ही सोलर रूफटॉप प्लांट लगवाएं। वेंडर का चयन ध्यानपूर्वक करें।

योजना का लाभ उठाने के लिए शीघ्र आवेदन करें -

https://pmsuryaghar.gov.in/

किसी भी प्रकार की समस्या/शिकायत के लिए 155243 पर संपर्क करें

या वेबसाइट https://upnedasolarsamadhan.in पर जाएं।

अतिरिक्त ऊर्जा स्रोत विभाग, उत्तर प्रदेश

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश